

विदेह साहित्य-आलोचना



नित नवल बेचन ठाकुर

छओ नाट्यग्रन्थक
आलोचनात्मक अध्ययन

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

२०२६

विदेह साहित्य-आलोचना

नित नवल बेचन ठाकुर

छओ नाट्यग्रन्थक आलोचनात्मक अध्ययन

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

२०२६

प्रकाशन-विवरण

नित नवल बेचन ठाकुर

लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

प्रकाशकीय परिचय : www.videha.co.in

© गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर, २०२६

सर्वाधिकार सुरक्षित। लेखकक लिखित अनुमतिक बिना एहि पुस्तकक कोनो अंशक पुनर्मुद्रण वा व्यावसायिक पुनर्प्रकाशन नहि कएल जाए। उद्धरण आ शैक्षिक उपयोग प्रचलित सन्दर्भ-परम्पराक अनुसार कएल जा सकैत अछि।

विदेह

अनुक्रमणिका

छओ समीक्षा : लोकजीवनसँ लोकशासन धरि

१ नवघर.....	१
२ बेटीक अपमान आ छीनरदेवी.....	१६
३ बाप भेल पित्ती आ अधिकार.....	३१
४ ऊँच-नीच.....	४५
५ बिसवासघात.....	६२
६ भअँट.....	७६
समीक्ष्य ग्रन्थ आ सन्दर्भ.....	८९

०१ / ०६

नवघर

लोकसमाज, सुधार आ रंगमंचीय प्रतिरोध

नाटक-संग्रहक स्वरूप

‘नवघर’ बेचन ठाकुरक चारि एकांकीक संग्रह अछि। पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल) सँ प्रकाशित एहि पुस्तकमे ‘नीशा मुक्ति’, ‘बरहम बाबा’, ‘घोघवाली कनियाँ’ आ ‘रसुन पियोज’ संकलित अछि। उपलब्ध संस्करणमे २०१८ आ २०१७ क परस्पर भिन्न उल्लेख भेटैत अछि; तँ संस्करण-क्रम सावधानीक विषय अछि।

संग्रहक चारू एकांकी अपन-अपन सामाजिक प्रसङ्ग रचैत अछि। ‘नीशा मुक्ति’ आ ‘घोघवाली कनियाँ’ पाँच-पाँच दृश्यमे फैलल अछि; ‘बरहम बाबा’ आ ‘रसुन पियोज’ अपेक्षाकृत एकल विस्तृत दृश्यपर आधारित अछि। ई अन्तर कथावस्तु, चरित्र-विकास, संघर्षक केन्द्र आ नाटकीय परिणतिपर प्रभाव छोड़ैत अछि।

नामक रूप सेहो उल्लेखनीय अछि। मूल मुद्रणमे ‘नीशा’, ‘बरहम’, ‘घोघवाली’ आ ‘रसुन पियोज’ रूप अछि। ई लोकभाषिक चयन रचनाक ध्वनि, पात्रक सामाजिक स्थिति आ हँसी-विनोदसँ जुड़ल अछि। आलोचनाक अपन भाषामे आवश्यकताअनुसार ‘नशामुक्ति’, ‘घूँघट’ आ ‘लहसुन-प्याज’ जेहन अर्थसूचक शब्द आबि सकैत अछि; मुदा मूल शीर्षकक स्थान ओहि पर्यायसँ लेनाइ पाठशुद्धिक विरुद्ध होयत।

अध्ययनक वैचारिक आधार: पाठ, रंगमंच आ समाज

मैथिली रंगमंचकेँ केवल लिखित संवादक साहित्य मानलापर बेचन ठाकुरक नाटकीय प्रयत्नक विशेषता ओझराइत अछि। हुनकर पाठक भीतर मंचक व्यवहार देखाइत अछि—प्रवेश-निर्गमन, एकसुरमे नाराबाजी, गीत, पात्रक देहगत क्रिया, जनसभाक तैयारी आ दर्शककेँ प्रत्यक्ष सम्बोधित करबाक भङ्गिमा। ताहि लेल एतऽ नाटकक दू स्तर परखल गेल अछि: लिखित दृश्य जे पाठक पढ़ैत छथि, आ सम्भावित प्रस्तुति जाहिमे कलाकारक समय, विराम, मंच-सज्जा आ दर्शकक प्रतिक्रिया अर्थ बदलि सकैत अछि।

विदेहक ‘A Complete Critical Appreciation of Bechan Thakur’ मे समानान्तर रंगमंच, सामाजिक प्रतिनिधित्व आ बेचन ठाकुरक नाट्यकर्मक प्रश्न उठाओल गेल अछि। ओहि आलोचनाक पृष्ठभूमि एतऽ उपयोगी अछि, मुदा ‘नवधर’क सभ प्रसंग पर पहिनेसँ तैआर आन्दोलनवादी निष्कर्ष थोपब उचित नहि। नाटक स्वयं जतय परिवर्तनक ठोस उपाय प्रस्तुत करैत अछि, ओतऽ ओकर उपलब्धि मापल जाए; जतय व्यक्ति जटिलता खोजि कऽ घोषणाक माध्यम बनि जाइत अछि, ओतऽ ओकर सीमासँ सेहो मुँह नहि मोड़ल जाए। विदेहक नाट्य-समीक्षात्मक लेखसमूहक रस, संवाद, लोकधर्मिता आ सामाजिक प्रतिनिधित्व सम्बन्धी प्रश्न एहि विवेचनक तुलनात्मक उपकरण छथि।

ई अध्ययन कोनो ऐतिहासिक घटना, सरकारी घोषणाक सफलताक प्रतिशत वा मंचनक वास्तविक दर्शक-संख्या विषयमे नाटकक संवादकेँ स्वतः तथ्य नहि मानैत अछि। पात्र जे कहैत अछि, से पहिने नाट्यलोकक कथन अछि; तकर बाहरी ऐतिहासिक सत्यापन अलग विषय थिक। एहने अन्तर पाठालोचनाक बुनियादी सावधानी अछि।

‘नीशा मुक्ति’: नशा, हिंसा, लोकशिक्षा आ सामूहिक संकल्प

पहिल दृश्य: परिवारक स्नेहसँ असुरक्षा धरि

पहिल दृश्य शंकरक घरसँ आरम्भ होइत अछि। सुनेना, शान्ति, चानी, सुगर आ खरबनक उपस्थिति, घरेलू बातचीत आ बच्चाक खेलक माध्यमसँ कथा पहिने एकटा साधारण पारिवारिक स्थिति बनबैत अछि। एहि शान्त सतहक भीतर वस्तुगत संकट धीरे-धीरे प्रवेश करैत अछि। बच्चाक खेलब, भोजनक जुगाड़, परिचित घरक निकटता आ नशाक प्रभाव एकसाथ रखल गेल अछि। किछु पात्रक

बोलचालमे हिंसक आदत सामान्यीकृत भऽ जाइत अछि; ई नाटकीय विरोध आगाँ संकटकेँ अधिक तीव्र बनबैत अछि।

दोसर दृश्य: मार्ग, रेल-यात्रा आ दुष्परिणामक सार्वजनिकता

दू दृश्यक बीच घरसँ सार्वजनिक क्षेत्रमे गति होइत अछि। शंकर आ खरबनक बाह्य यात्रा, मीनाक संग छात्र-पात्र राजीव आ रौशनक प्रवेश, पुलिसक उपस्थिति आ हादसाक समाचारक माध्यमसँ नाटक सूचित करैत अछि जे व्यक्तिगत दुर्व्यसनक सामाजिक लागत परिवारक चौखटिमे सीमित नहि। घटना अपने मंचपर पूर्ण दृश्यात्मक रूपेँ विकसित होइत नहि दिखैत; बहुत किछु पात्रक कथनसँ सामने अबैत अछि। तकर परिणाम ई जे विषयक विस्तार तीव्र होइत अछि, मुदा अनुभूतिक नाटकीय अन्तरंगता कखनो-कखनो सूचनात्मक संवादमे परिवर्तित होइत अछि।

तेसर दृश्य: नशाबन्दीक राजनीतिक भाषा आ नैतिक तर्क

तेसर दृश्य सार्वजनिक बहसक मुख्य केन्द्र अछि। पुलिस-पात्र कैदार सिंह आ बदरी सिंह, शंकर आ खरबनक संवादमे सरकारी नीति, व्यक्तिगत हानि, अपराध आ सामाजिक आचरण परस्पर जुड़ैत छथि। नाटकक एकटा महत्वपूर्ण मोड़ ओतऽ अछि जतऽ केवल दण्डक बात नहि, मनुष्यक अपन संयमक प्रश्न उठैत अछि। बदरी सिंहक कथन आत्मनियन्त्रणकेँ मानवताक कसौटी बनबैत अछि।

“मन जेते काबूमे रहत, ओते मानवतामे धनिक रहब।” (बदरी सिंह)

एहि वाक्यक अर्थ केवल व्यसन-निषेध नहि, आत्मनिर्णयक नैतिक महत्त्व सेहो अछि। तथापि आदर्शवादी कथन शोषण, रोजगारीक अभाव आ चिकित्सकीय सहायताक संरचनात्मक प्रश्नकेँ समुचित विस्तार नहि दैत। पुलिसक सुसंगत सामाजिक उपदेश कथानकक भीतर प्रभावकारी मंचीय भाषण बनि सकैत अछि, मुदा नाटक ओकर प्रतिवादसँ सीमिते भिड़ैत अछि।

चारिम दृश्य: घरक सङ्कटमे बालकक दखल

चारिम दृश्य फेर शंकरक घर लौटैत अछि। बालक-पात्र, घरेलू तनाव आ दारू छोड़बाक भावनात्मक आग्रह एक नजदीकी नाट्य-समस्या बनबैत छथि। एतऽ बच्चा केवल निरीह पीड़ित नहि, कतेको स्थानपर प्रश्न पुछनिहार आ निर्णयकेँ प्रभावित करबाक स्रोत बनैत अछि। एहि दृष्टिसँ ई अंश बाल-दर्शकक लेल खास प्रभावकारी भऽ सकैत अछि। तथापि बाल-सम्बोधनमे डर, चोट आ पारिवारिक त्रासक स्तरक संवेदनशील मंचन अनिवार्य होयत।

पाँचम दृश्य: विद्यालय, गीत आ सामूहिक अनुशासन

अन्तिम दृश्य शिक्षण-संस्था आ जनजागरणक आयोजनक ओर मुड़ैत अछि। शिक्षक, विद्यार्थी, गीत, नारा, सामूहिक पाठ आ सार्वजनिक प्रशंसाक सङ्ग नाटक सामाजिक संदेशकें प्रत्यक्ष रूप दैत अछि। जे संकट पहिने घरक भीतर चुपचाप पसरल छल, से आब मंचपर सामूहिक कार्यक्रम बनि गेल अछि। एहि क्रममे गीत दर्शकक स्मृतिमे संदेश टिकेबाक लोकशिक्षात्मक माध्यम थिक; मुदा भरल पात्र-संख्या आ नाराक आवृत्ति वास्तविक मंचनमे समय-नियोजन माँगैत अछि।

‘नीशा मुक्ति’क विशेषता—घरेलू नाटकसँ सार्वजनिक रंगमंच धरि संक्रमण। ओकर सीमा—अन्तिम दृश्य शिक्षा-अभियानक प्रचार-भाषासँ एतेक प्रभावित अछि जे सामाजिक यथार्थक विरोधाभास सभ पूर्ण रूपेँ नाटकीय संघर्ष नहि बनि पबैत अछि। बच्चाक सहभागी स्थान ओकर बाल-नाट्य सम्भावना बढ़बैत अछि; एकरा विशुद्ध बालनाटक कहलासँ बेसी उचित ‘बाल आ प्रौढ़ दर्शक दुनू लेल उपयुक्त सामाजिक जागरण-एकांकी’ कहब होयत।

‘बरहम बाबा’: श्रद्धा, परम्परा आ प्रश्न करबाक अधिकार

स्थल आ स्थितिक स्थापना

‘बरहम बाबा’ आकारमे लघु अछि, मुदा अपन विचार-बिन्दुमे तीक्ष्ण। बरहम बाबाक गहबर, पूजा-सामग्री, स्त्री-पुरुषक धार्मिक जमावड़ा आ बौकुक श्रद्धा आरम्भमे दृश्यकें परिचित ग्राम-धार्मिक परिवेश दैत अछि। बुधनक आगमन पुरान विश्वासक समर्थन करैत अछि; फूलो धीरे-धीरे एहि समर्थनक शर्त पुछैत अछि। ताहिसँ धर्मक अस्तित्वपर कोनो सामान्य निषेध नहि, बल्कि विशेष सामाजिक व्यवहारक नैतिक परिणाम प्रश्नमे आबैत अछि।

श्रद्धाक भीतर वर्ग आ जातिक सत्ता

बौकु आ फूलोक विवाद के पूजा करए, के करा सकए, ककरा नामपर बहिष्कार होए आ सामाजिक अपमानकें देवताक आदेशक रूपमे कोना प्रस्तुत कएल जाए—एहि प्रश्नसभक ओर जाइत अछि। ‘जय गंगा’क आवृत्ति आ फूलोक प्रतिप्रश्न एक नाटकीय द्विस्वर रचैत अछि: एक दिस विश्वासक स्वाभाविक भक्तिभाव, दोसर दिस प्रश्नक द्वारा ओकरा न्याय-संगत बनएबाक आग्रह। फूलोक विवेककें केवल नास्तिकता कहब त्रुटिपूर्ण होयत; ओकर प्रतिवाद मनुष्यक मान-गरिमाक पक्षमे अछि।

फूलोक प्रतिवाद आ अन्तिम स्वीकृति

फूलो अपन तर्ककेँ दार्शनिक बहसक अमूर्त भाषा नहि दैत; ओ भोजन, बर्दाश्त, गरिमा, अपन प्रसंग आ मनुष्यता—एहि ठोस अनुभवक भाषा बजैत अछि। ओकर एक वाक्य पूरा रचनाक भावात्मक केन्द्र अछि।

“हम प्रेम-श्रद्धाक भूखल छी।” (फूलो)

एहि पंक्तिमे ‘श्रद्धा’ नष्ट नहि होइत अछि; ओकर विषय पुनः परिभाषित होइत अछि। अन्तमे बौकु दोसर बेर विचार करबाक आश्वासन दैत अछि आ पूजा-व्यवस्था प्रति पुनर्विचारक दिशा बनैत अछि। नाटकक प्रभाव एतऽ नैतिक प्रत्युत्तरसँ बनैत अछि, हिंसक प्रतिशोधसँ नहि। एतबे संग सीमा सेहो साफ अछि: फूलोक प्रतिवादक पाछाँक संस्थागत जातिगत संरचना खोलल जाइत नहि; अन्तिम समाधान पात्रक व्यक्तिगत मनपर बहुत आश्रित अछि।

मंचीय दृष्टिसँ ई एकांकी सीमित पात्र, एक स्थल आ स्पष्ट वैचारिक द्वन्द्वक कारणेँ नुक्कड़, विद्यालयी वरिष्ठ-वर्ग आ लघु रंगदलक लेल अनुकूल भऽ सकैत अछि। बाल-पाठकक लेल एकर प्रश्न-प्रवृत्ति महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा सामाजिक-धार्मिक पदानुक्रमक अर्थ बुझएबामे प्रस्तोताक प्रसंगानुकूल व्याख्या आवश्यक रहत।

‘घोघवाली कनियाँ’: गृहस्थी सँ सामाजिक पुनर्निर्माण धरि

‘नवघर’क सभसँ विस्तृत एकांकी ‘घोघवाली कनियाँ’ अछि। एकरा केवल घूँघटक विरोधक नाटक मानब कृतिक वास्तविक फैलावकेँ छोट करब होयत। कथा पारिवारिक टूटन, अन्न-पाइक अधिकार, परिजनक जीवन-रक्षा, शिक्षा, ग्रामीण सुधार, स्त्रीक सक्रियता आ पंचायत-स्तरक सामूहिक निर्णय धरि पहुँचैत अछि। शीर्षकक घोघ-प्रतीक आरम्भमे स्त्रीक निजी जीवनपर समाजक नियन्त्रण बुझबैत अछि; आगाँ समाजक समस्त निर्णय-प्रक्रियामे ओकर प्रवेश एहि प्रतीककेँ उलटि दैत अछि।

पहिल दृश्य: सन्तान, कनियाँ आ बुढ़ापा

सतन आ हुनक पत्नी ललिताक पारिवारिक स्थिति सँ दृश्य खुलैत अछि। बेटा जीतन आ परदेशी, हुनकर कनियाँ रामदाइ आ रूपवती, समाजक प्रतिष्ठित व्यक्ति रामरूप आ परिवारक अन्य सदस्य सम्पत्तिक बँटवारा, वृद्धजनक सम्मान आ आत्मनिर्भर जीवन पर बहस करैत छथि। देहक वृद्धावस्था आ

मनक पुरान संचित अधिकार एक दोसरासँ जुझैत अछि। ई संघर्ष केवल बेटा बनाम बाप नहि, ‘घर’क परिभाषा पर विवाद अछि: की घर संगहि रहलाक नाम अछि, की समान सम्मान आ न्यायपूर्ण हिस्सेदारीक?

रूपवतीक प्रवेशक संग स्त्रीक स्वतन्त्र निर्णायक स्वर प्रबल होइत अछि। ओ स्थापित पारिवारिक निर्णय मानि लेबाक बाध्यता अस्वीकार करैत अछि आ प्रश्न पुछैत अछि जे कोन निर्णय किनक हितमे कएल गेल। घरक सभ सदस्यक मान्यता, श्रम आ सेवा कतेक समान अछि—ई प्रश्न प्रथम दृश्यकें एक साधारण गृहकलहसँ सामाजिक नीतिविचारक दिशा दैत अछि। रूपवतीक सक्रियता कथा आगाँ बढ़बाक मुख्य प्रेरक होइत अछि।

दोसर दृश्य: करुणासँ लिखित अनुबन्ध

दोसर दृश्य परिवारक सम्बन्धकें व्यवहारिक नियममे बदलबाक साहस देखबैत अछि। विष्णुदेव, रामप्रसाद, सतन आ परदेशीक उपस्थितिमे परिजन एक विस्तृत प्रस्तावपर विचार करैत छथि। प्रस्तावक कुल बाइस बिन्दु छपल अछि; एहि सूचीमे खेत-पथार, घर, बूढ़-बूढ़ीक भरण-पोषण, परस्पर भेट, पाइक व्यवस्था, व्यक्तिगत सेवा, नियमित देखरेख आ संकटमे सहयोग जेहन विषय सन्निहित छथि। लिखित अनुबन्ध सामाजिक सुधारक ठोस उपकरण बनि उठैत अछि।

“खेत-पथार दुनु भाँइ आधा-आधा लऽ ले।” (समझौताक पहिल बिन्दु)

कथामे एहि सूचीक लाभ ई जे नैतिक अपेक्षा अधिकार आ दायित्वक प्रत्यक्ष भाषा पबैत अछि। मुदा नाटकीय शिल्पमे बाइस बिन्दुक अविराम पाठ एक गम्भीर समस्या सेहो अछि: कथावस्तु रुकि जाइत अछि आ रंगमंच सभाक कार्यवृत्त-जकाँ लागि सकैत अछि। पाठ रूपमे ई दस्तावेजी यथार्थ रचैत अछि; मंचनमे बिन्दुसभकें दृश्यात्मक समूह, विचार-विरोध आ प्रतिक्रिया सँ जीवित करबाक जरूरत पड़ैत।

समझौताक बाद पात्रक स्वीकार-भाषा एतऽ मुख्य अछि।

“हमरा कोनो दिक्कत नै अछि। हमरा मनोनाय अछि।” (जीतन)

एहि सहमति-पद्धतिमे नाटक विवेकपूर्ण लोकतन्त्रक एक लघु घरेलू रूप कल्पित करैत अछि। तथापि असली जीवनमे भूमि-विभाजन आ वृद्धजनक देखभाल मात्र सहमतिसँ हल नहि होइत; कानून, पंजीकरण, देयताक पालन आ शक्ति-सन्तुलन विषयपर नाटकक चर्चा अति सीमित अछि। एहि

सीमाकें ओहि पाठक ऐतिहासिक असफलता नहि, ओकर यूटोपियाई सुधार-स्वरूपक विशेषता बुझबाक चाही।

तेसर दृश्य: बालकक कल्पना, पढ़ाई आ खेनेबाक अधिकार

तेसर दृश्यमे जीतन, रामदाड, सतन, ललिता आ शशिक माध्यमसँ पीढ़ीक सम्बन्ध बदलैत अछि। छोट बालक/बालिकाक खेल, निःशुल्क समय, ज्ञानक पियास, कलात्मक रचना आ स्वतन्त्र अभिव्यक्ति पर विशेष जोर पड़ैत अछि। अँगन, शाला, गप-सप आ पैघ लोकक निर्देश-एहि सभक बीच बालमन अपन जगह खोजैत अछि। ई हिस्सा संग्रहकें बाल-साहित्यक प्रश्नसँ सभसँ ठोस रूपेँ जोड़ैत अछि।

सतन बच्चाक खेलब आ पढ़बाक प्रसंगमे जोरजबरदस्तीसँ सावधान करैत अछि। ओ बिनु दमनक ज्ञान-विकासक सम्भावनाक पक्ष लैत अछि। एहि दृश्यसँ ई विचार उभरैत अछि जे बालककें केवल भविष्यमे कमाइ कयनिहार प्रौढ़क प्रारूप मानब गलत अछि; ओकर एखनुक उत्सुकता, कल्पनाशीलता आ स्वतन्त्र अनुभव सेहो मूल्यवान अछि।

मुदा नाटकक शिक्षा-सम्बन्धी बात जेना-जेना विस्तार पबैत अछि, संवाद बीच-बीचमे तर्कप्रधान भाषण बनि जाइत अछि। बालक स्वयं जखन प्रश्न पुछैत अछि, दृश्य जीवित होइत अछि; जखन पैघ पात्र ओकरा बदला निरन्तर सीख दैत अछि, बालकक स्वाधीन नाटकीय स्वर कमजोर पड़ैत अछि। ई अन्तर विद्यालयी मंचनमे विशेष ध्यान देबाक प्रश्न अछि।

चारिम दृश्य: नव स्त्री-स्वर आ घरक अर्थ

चारिम दृश्य परदेशी-रूपवतीक भीतरक संवादसँ आरम्भ होइत अछि। रूपवती नव-समयक जीवनपद्धति, अपन सार्वजनिक परिचय, घरक कामक सम्मान आ घरेलू अन्ध-परम्परापर प्रश्न उठबैत अछि। ओ आपन अस्तित्व एक गोपनीय गृहिणीक रूपमे मात्र सीमित मानए लेल तैयार नहि।

“हम कोनो मामूली जनानी छी।” (रूपवती)

एहि स्वतःमानक स्वरकें केवल अभिमान कहि देब गलत होयत। ई पहिचानक हकक माँग अछि। तथापि आलोचनात्मक प्रश्न उठैत अछि जे रूपवतीक आधुनिकता कखनो वस्त्र, रूपसज्जा आ सामाजिक प्रदर्शनक संकेतमे सिमटि रहल अछि कि नहि। नाटकीय प्रतिवादकें ठोस आर्थिक आ राजनीतिक सक्रियतासँ जोड़ल गेल अछि, से एकर सम्भावित कमजोरीकें सँभालैत अछि।

चौथ दृश्य अन्त धरि घरेलू अधिकार, सास-ससुरक दशा, परिवारक सार्वजनिक प्रतिमा आ नारीक कर्तृत्व पर बहस करैत अछि। नाटक एकल परिवार बनाम संयुक्त परिवारक सुविधाजनक नैतिक द्विभाजन नहि करैत; ओ सम्मान, न्याय आ दायित्वक कसौटीपर दुनूक आलोचना सम्भव करैत अछि। यद्यपि किछु संवादमे पात्रक मनोवैज्ञानिक परिवर्तन बड़ शीघ्र घटित होइत अछि, रूपवतीक असहमतिक ऊर्जा कथाकें सजीव बनओने रहैत अछि।

पाँचम दृश्य: पंचायत, स्त्रीक प्रस्तुति आ सार्वजनिक स्वीकृति

पाँचम दृश्य पंचायत-भवनमे आयोजित सामूहिक बैठक अछि। एतऽ पहिले जे विषय घरक भीतर दबल रहैत छल—परिवारक अनबन, स्त्रीक उपस्थिति, वृद्धजनक देखभाल—से सार्वजनिक विमर्शक विषय बनैत अछि। सरपंच, रामप्रसाद, विष्णुदेव, रूपवती, परदेशी आ आन पात्रक जमावड़ा नाटकक नैतिक लक्ष्यकें समाजक सामने रखैत अछि।

एहि रचनाक पूर्ण यात्राकें देखी तऽ नाटक निजी पीड़ासँ सार्वजनिक जवाबदेहीक ओर बढ़ैत अछि। मुदा पाँचम दृश्यकें पढ़ैत काल नाटकीय संघर्ष बहुत हद धरि निर्णय-सभा आ स्वीकृति-सभामे घुलि जाइत अछि। पात्रक स्वतन्त्र स्वरक स्थानपर कखनो-कखनो परामर्शक क्रम हावी भऽ जाइत अछि। ई सीमा नाटकक सामाजिक प्रतिबद्धता कें खारिज नहि करैत, केवल ई देखबैत अछि जे सुधरब आ नाटक बनब एक बात नहि।

‘घोघवाली कनियाँ’क मूल महत्त्व ई अछि जे ओ ‘नवघर’क कल्पना प्रस्तुत करैत अछि—एहन घर जतऽ स्त्री, बालक आ वृद्ध व्यक्ति सभकें अपन गरिमा सहित अधिकार भेटए। शीर्षकक घोघ घरक भीतरी अन्धकारक प्रतीक अछि; रूपवतीक सक्रियता ओकर प्रतिपाठ। एहि रचनाक नाट्य-सुधार लेल बाइस बिन्दुक अनुबन्ध, लम्बा उपदेश आ अनेक पात्रक उपस्थिति संक्षेपित कऽ परस्पर संघर्षकें अधिक देहगत आ क्रियात्मक बनएबाक अवसर अछि।

‘रसुन पियोज’: महँगाइ, उपहास आ नामकरणक सत्ता

पहिल बहस: बजारक नामसँ मनुष्यमूल्य धरि

चौथ एकांकीमे रमण, सुमन, अमन आ पवन ताश खेलैत छथि। दर्शक-पात्र फेकू, कैलू, गन्नू आ चुल्लाइ उपस्थित छथि। एहि आरम्भिक वातावरणक सहज मनोरंजनकें फेकू बजारक महँगाइक चर्चा सँ

बाधित करैत अछि। रसुन आ पियोजक दाम वृद्धिक उदाहरण आर्थिक यथार्थक सामान्य लोकभाषिक माप अछि।

“रसुन बीस टके किलो छलै, से अस्सी भऽ गेलै” (फेकू)

मुदा जे शब्द पहिने खाद्यवस्तुक दाम छल, सएह धीरे-धीरे फेकूक अपमानजनक पुकार बनि जाइत अछि। एहि संक्रमणमे नाटक उपनाम, वर्गीय तिरस्कार आ समूह-हास्यक हिंसा पर चोट करैत अछि। गपशपक स्थान रंगमंच बनैत अछि—हँसीक सार्वजनिकता एक व्यक्तिक मान-गरिमा छीनि सकैत अछि।

सामूहिक हँसीक संरचना

“रसुन-पियोज”क ध्वन्यात्मक पुनरावृत्ति हास्य-सृष्टि करैत अछि। पात्रसभ नामकें नारा बनबैत छथि; हँसी बढ़ैत अछि आ फेकूक आक्रोशो तीव्र होइत अछि। ई दृश्य हास्यक दूहेरा स्वभावकें सामने अनैत अछि—हँसी मिलनक माध्यम होइत अछि, मुदा अन्यायपूर्ण समूहबद्धताक हथियार सेहो। कथ्यक केन्द्र तथाकथित मजाकक वैधता अछि: कोन हास्य ककरा पीड़ित करैत अछि?

फेकूक आत्मप्रतिष्ठाक दावा नाटकक मर्म अछि।

“हम केकरोसँ कखनो कम छी।” (फेकू)

एहि वाक्यकें जाति वा आर्थिक वर्गक सम्पूर्ण इतिहासक प्रमाण मानब नहि चाही; मुदा अपमानक सामना करैत सामान्य व्यक्ति अपन बराबरी घोषणा करैत अछि, से स्पष्ट अछि। उपहासक विरुद्ध ई वैयक्तिक प्रतिरोध शेष समाजक नैतिक चेतनाक परीक्षण बनैत अछि।

सामाजिक निर्णय आ व्यंग्यक अन्त

पछिला खण्डमे पड़ोसी आ पंचायती पात्रसभक हस्तक्षेप विवादकें निजी तकरारसँ जन-समस्या बनबैत अछि। नाटक उपहासक वैधतापर सामूहिक असहमति उत्पन्न करबाक बदला कतहु उपनामकें जनसामान्यक आदत रूपमे स्वीकार कए लेबाक बाट देखबैत अछि। एहि अन्तमे नैतिक दुविधा अछि: अपमानजनक पुकारकें व्यापक करि देनाइ की अपमान समाप्त करैत अछि, अथवा अपमानक सामाजिक सत्ता कें सामान्य बनबैत अछि?

अन्तिम पृष्ठ पर निर्णयक बाद फेकूक नाम फेर जनसमूहमे बाजल जाइत अछि। एहि दृश्यकेँ सहज परिहासक मेल-मिलापक सुखान्त रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि; मुदा आलोचनात्मक पुनर्पाठमे पीड़ितक सम्मतिक प्रश्न बेसी महत्वपूर्ण भऽ जाइत अछि। सामाजिक हँसीकेँ नैतिक निष्कर्ष मानबाक बदला नाटकक खुले द्वन्द्व रूपमे राखल जाए तँ रचनाक अर्थ अधिक समृद्ध होइत अछि।

‘रसुन पियोज’ अपन न्यूनतम मंच-सज्जा, सहज पात्र-प्रवेश, दैनन्दिन बोलचाल आ प्रत्यावर्ती उपनामक कारणेँ रंगमंचीय दृष्टिसँ असरकारी अछि। किछु दीर्घ भाषण आ एकर बाहरी नैतिक समाधान ओकर व्यंग्यकेँ थोड़े शिथिल करैत अछि। बाल-किशोर दर्शकक लेल ई पाठ भाषाक हिंसा, साथीसँ मजाक करबाक सीमा आ आत्म-सम्मानक प्रश्न पर नाट्य-संवाद खोलि सकैत अछि; मुदा अपमानित पात्रक पक्षमे विवेकपूर्ण चर्चा बिना हँसीक दृश्य उलटा असर सेहो कऽ सकैत अछि।

चारू एकांकीक अन्तर्सम्बन्धित साहित्यिक समीक्षा

घर, समाज आ सार्वजनिक सभाक आवागमन

चारू नाटकक एकटा साझा गति अछि—घटना घर अथवा परिचित संगति सँ उठैत अछि आ अन्तिम अर्थ सार्वजनिक समाजमे तय होइत अछि। ‘नीशा मुक्ति’मे परिवारक व्यसन सामाजिक अभियान बनैत अछि; ‘बरहम बाबा’मे निजी श्रद्धा समाजक न्याय-प्रश्न बनैत अछि; ‘घोघवाली कनियाँ’मे घरेलू समझौता पंचायतमे सार्वजनिक होइत अछि; ‘रसुन पियोज’मे साथी-पड़ोसीक मजाक सभा-दरबारक विवाद बनैत अछि। एतऽ सभा समाधानक संस्थान सेहो अछि आ सम्भावित दबावक स्थल सेहो। लेखकक सामाजिक नाटकक शक्ति एहि मञ्चीकरणमे अछि।

प्रश्न पुछनिहार पात्र बनाम निर्णय सुनाबनिहार पात्र

जतऽ फूलो, रूपवती वा बालक-पात्र प्रश्न पुछैत छथि, ओतऽ संवादक भीतर वास्तविक नाटकीय ऊर्जा अछि। जतऽ पुलिस अधिकारी, सामाजिक प्रतिनिधि अथवा पंचायतक नेतृत्व पूर्वनिर्धारित निष्कर्ष सुनबैत छथि, ओतऽ नाटकक स्वाभाविक प्रतिपक्ष सिकुड़ि जाइत अछि। लेखकक लिखन-पद्धतिक सभसँ पैघ नाट्य-द्वन्द्व एहि दू प्रवृत्तिक बीच अछि: लोकतान्त्रिक प्रश्नक खुलल प्रक्रिया आ सुधारवादी घोषणाक बन्द परिणाम।

लोकबोली, पुनरुक्ति आ ध्वन्यात्मक लय

बेचन ठाकुरक पात्र अपन लोकसमाजक आडम्बररहित भाषा बजैत छथि। ‘बरहम बाबा’मे श्रद्धात्मक उच्चारण, ‘नीशा मुक्ति’मे जनजागरण-गीत, ‘घोघवाली कनियाँ’मे पारिवारिक सम्बोधन आ ‘रसुन पियोज’मे उपनामक बारम्बार पुनरुक्ति पृथक श्रव्य-पहिचान बनबैत अछि। एहि भाषामे परिनिष्ठित शास्त्रीय एकरूपतासँ बेसी पात्रक अनुभवजन्य स्वर महत्त्वपूर्ण अछि। लोकशब्दकें मानकीकृत रूपमे सुधारि देलापर अनेक प्रसंगक मंचीय लय आ सामाजिक निहितार्थ घटि जाएत।

नारी-पात्रक सक्रियता आ प्रतिनिधित्वक सीमा

फूलो आ रूपवती वैचारिक प्रतिपक्ष रचैत छथि; सुनेना, ललिता आ आन स्त्री-पात्र गृहस्थी, पोषण आ परिवर्तनक प्रक्रियामे संलग्न छथि। ई स्त्रीक उपस्थिति मात्र भावुक पार्श्वचित्र नहि। मुदा स्त्रीक अधिकारक प्रश्नक पर्याप्त गहराइ तखन बनत जखन ई पात्र अपन असहमति, आर्थिक शर्त आ सामाजिक जोखिम स्वयं स्पष्ट करथि। ‘घोघवाली कनियाँ’क सुधारवादी सहमति एहि दिशा मे संकेत तँ दैत अछि, मुदा अनेक ठाम पुरुष-समाजक निर्णयक स्वीकृतिक अपेक्षा करैत अछि।

सुधारवादी आशा आ जीवन-जटिलताक अनसुलझल अन्त

संग्रहक सुखान्त सभमे सामाजिक सुधारक प्रति लेखकक निष्ठा भेटैत अछि। तथापि शराबक लत, जातिगत बहिष्कार, वृद्धजनक अधिकार, स्त्रीक स्वातन्त्र्य आ सामाजिक उपहास एहन समस्या अछि जकर समाधान एक गो भाषण, एक लिखित प्रतिज्ञा वा एक पंचायत-निर्णयसँ पूर्ण नहि होइत। नाटकक नैतिक इच्छा आ सामाजिक प्रक्रियाक कठिनता बीच दूरी आलोचनाक मूल कसौटी रहबाक चाही। एहि दूरीकें चिह्नित करब लेखकक उद्देश्यकें कम नहि करैत; उलटा ओकर ऐतिहासिक-रचनात्मक महत्त्वकें यथार्थ आधार दैत अछि।

मैथिली बाल-साहित्यक इतिहासमे ‘नवघर’क स्थान: तुलनात्मक विवेचन

बाल-साहित्यक इतिहास लिखैत समय पहिने शिशु लोक-साहित्य आ लिखित आधुनिक बाल-नाट्यक भेद बुझब जरूरी अछि। विदेहमे फूलचन्द्र झा ‘प्रवीण’क ‘मैथिली शिशु लोक साहित्य’ (अङ्क ५०, २०१०) लोरी, खेल, लोककण्ठ आ पीढ़ीसँ पीढ़ी पहुँचैत स्मृतिक परम्परा पर प्रकाश दैत अछि। एहि ऐतिहासिक पृष्ठभूमिसँ ‘नवघर’क सम्बन्ध कोनो सीधा स्रोत-अनुकरणक प्रमाण नहि, बल्कि लोकस्वर

आ दर्शक-सहभागिताक साझा धरातल अछि। गीत आ समूह-उच्चारण आधुनिक सामाजिक एकांकीमे पुरान मौखिक परम्पराक नाटकीय क्षमता स्मरण करबैत अछि।

योगानन्द झाक 'मैथिली बाललोककथा: स्थिति आ अपेक्षा' (विदेह अङ्क ७६, २०११) आ रमेश रञ्जनक 'मैथिली बालनाटक सीमा विस्तार करैत—चौआरि' शीर्षकसँ चिन्हित लेख (अङ्क १२६, २०१३) विदेहक बाल-साहित्य विमर्शक इतिहासमे बालकथा आ बालनाट्यकें अलग आलोचनात्मक विषय रूपमे सामने अनैत छथि। नाटकक अपेक्षा केवल सीख देनाइ नहि; बालकक प्रश्न, खेल-भाव, स्वनिर्णय आ कल्पनाशील दृष्टिकोणकें मंचपर सार्थक स्थान देनाइ अछि। एही कसौटीपर 'नवधर'क चारू नाटकक मूल्य अलग-अलग निकलैत अछि।

'नीशा मुक्ति'क प्रारम्भिक बाल-पात्र आ अन्तिम विद्यालयी आयोजन युवा-दर्शक लेल उपयोगी अछि, मुदा रेल-हादसा आ व्यसन-सम्बन्धी पीड़ाक भावात्मक तीव्रता आयु-वर्गक अनुसार मंचीय रूपान्तरण माँगैत अछि। 'बरहम बाबा' प्रश्न-कौशल सिखेबाक उपयुक्त पाठ भऽ सकैत अछि, जँ संवादकें सामाजिक सम्मानक धरातलपर प्रस्तुत कएल जाए। 'घोघवाली कनियों'क तेसर दृश्यक बालक-केंद्रित शिक्षाविचार बाल-पाठक लेल विशेष मूल्यवान अछि; मुदा शेष दृश्यसभक लम्बा सम्पत्ति-विवाद आ पंचायत-निर्णय छोट बच्चाक सहज अनुभूतिसँ दूर पड़ि सकैत अछि। 'रसुन पियोज'किशोरावस्थाक समूह-हँसी, उपनाम आ अपमानक प्रश्न लेल प्रासंगिक अछि, जँ प्रस्तुति एहन हो जे पीड़ितक पीड़ा ओझराए नहि।

विदेहमे प्रकाशित 'मैथिली बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्र' (२०२६) बाल-कथाक मूल्याङ्कनमे बालकक सक्रियता, लोक-स्मृति, सामाजिक प्रतिनिधित्व आ भाषा-संस्कारक महत्त्वक चर्चा करैत अछि। उपन्यास आ नाटकक विधागत भेद स्पष्ट रखितो एहि कसौटीक सहायसँ 'नवधर'कें परखि सकैत छी: पात्रक सक्रियता कतेक? सीख कथाक भीतर सँ उपजैत अछि कि बाहरसँ आरोपित? बालककें निर्णय लेबाक अधिकार अछि कि ओ केवल पैघ लोकक वचन सुनैत अछि? ई प्रश्न नाटकसभक मूल्याङ्कनमे रचनात्मक परिणाम दैत अछि।

'नाट्य-नवग्रह' (विदेह अङ्क ४४७, २०२६) मे बालनाटक आ प्रौढ़ नाटकक भेद, संवादक खेलभाव, प्रत्यक्ष सहभागिता आ विचारोत्तेजक मंच-विधान पर उपयोगी विचार भेटैत अछि। ओहि तुलनामे 'नवधर'क मूल प्रवृत्ति सामाजिक-समस्या-प्रधान प्रौढ़ एकांकी दिस अछि, मुदा दृश्यविशेषमे बाल-किशोर रंगशिक्षाक योग्य सामग्री प्रचुर अछि। तँ एकर उचित साहित्येतिहासिक परिचय—सामाजिक एकांकीक संग्रह जकर भीतर बाल-नाट्य प्रयोगक सार्थक बीज विद्यमान अछि—एतबे होयत, न कि प्रमाणविहीन रूपमे सम्पूर्ण संग्रहकें शुद्ध बालनाट्यक मूलप्रतिमान घोषित करब।

कालक्रमक प्रश्नमे सेहो संयम आवश्यक अछि। विदेहक उपलब्ध बाल-साहित्य लेख २०१०, २०११ आ २०१३ क विमर्शक दस्तावेजीकृत करैत छथि, जखन कि ‘नवघर’क उपलब्ध संस्करण-पृष्ठपर २०१७ आ २०१८ दूनू अंकित अछि। एहि आधारपर मैथिली बालनाटकक ‘पहिल’ रचना, पहिल प्रयोग वा निश्चित आरम्भ-बिन्दुक घोषणा नहि कएल जा सकैत। साहित्येतिहासमे विधाक उद्भव आ कोनो संग्रहक प्रकाशित प्रति दुनू अलग प्रमाणक विषय छथि।

रंगमंचीय सम्भावना: प्रस्तुति, दर्शक आ रूपान्तरण

‘नवघर’क रंगरचनामे लोकभाषा मुख्य दृश्य-सम्पत्ति अछि। अल्प साधनबलसँ ‘बरहम बाबा’ आ ‘रसुन पियोज’ मंचित भऽ सकैत अछि: पहिलक लेल एक गहबरक सांकेतिक स्थान आ पूजा-सामग्री, दोसरक लेल ताशक स्थान, प्रवेश-निर्गमन आ हँसीक लय पर्याप्त होयत। एहि दू नाटकमे संवादक लय निखारल जाए तँ विचारक तीखापन बढ़त।

‘नीशा मुक्ति’मे स्थल-परिवर्तन, रेलसँ सम्बद्ध कथा, पुलिसक प्रवेश, विद्यालयी समूह आ गीत-नारा मंचक समय आ संसाधन माँगैत अछि। असल चुनौती घटना दुरन्तक दृश्यात्मकता आ घोषणामूलक अन्तक सन्तुलन अछि। समूह-अभिनयमे बालकक सुरक्षा, हिंसक प्रसंगक सांकेतिक प्रस्तुति आ व्यसन-पीड़ितक गरिमाक रक्षा प्राथमिक रहबाक चाही।

‘घोघवाली कनियाँ’क पाँच दृश्य आ पात्र-बहुल संवाद लघु मंचनमे सम्पादन माँगैत अछि। बाइस बिन्दुक अनुबन्धक नाटकमे देहगत अभिव्यक्ति, कागजपर हस्ताक्षर, हित-संघर्ष आ मौन प्रतिक्रियाक मददसँ दृश्यात्मक बनाओल जा सकैत अछि। मुदा मूल पाठक उद्धरण वा अनुसंधानपरक पाठमे कोनो संवाद हटाएल नहि जाए; मंचीय रूपान्तरण मूल पाठसँ पृथक सर्जनात्मक काम होयत।

बाल-समूहसँ अभिनय कराओल जाए तँ आयुवर्ग अनुसार दृश्य चुनब आवश्यक अछि। १०-१४ बरखक किशोर लेल ‘रसुन पियोज’क नामकरण-विवाद, ‘बरहम बाबा’क प्रतिप्रश्न आ ‘घोघवाली कनियाँ’क शिक्षाविषयक खण्ड अधिक कार्यक्षम लगैत अछि; एहि आयु-निर्देशक ऐतिहासिक तथ्य नहि, प्रस्तुति-सुविधाक आलोचनात्मक प्रस्ताव बुझल जाए। प्रत्येक दृश्य बाद दर्शकसँ ‘अहाँ होइतहुँ तँ की करितहुँ?’ पूछब नाटकक निष्कर्षक एकतरफा उपदेशसँ सामूहिक विवेक-विमर्श दिस लऽ जा सकैत अछि।

उपलब्धि, अन्तर्विरोध आ आलोचनात्मक निर्णय

‘नवघर’क पहिल उपलब्धि सामाजिक प्रसंगक चयन अछि। लेखक घरक भीतर घटित साधारण घटना—भोजन, बालकक खेल, रिश्ताक जिम्मेवारी, उपनामक मजाक—केँ वृहत्तर अधिकार-प्रश्नसँ जोड़ैत छथि। दोसर उपलब्धि लोकभाषाक अविरलता अछि। तेसर, फूलो आ रूपवती जेहन पात्रकेँ प्रश्न पुछबाक नाटकीय अधिकार देनाइ अछि। चारिम, सामाजिक सभा, लोक-गीत आ जनसमूहकेँ कथा-संरचनाक भाग बनएबाक कौशल अछि।

मुख्य सीमामे किछु पात्रक एकरेखीयता, एक्कहि विचारक बारम्बार व्याख्या, दीर्घ अनुबन्ध-पाठ, आकस्मिक सहमति आ न्यायप्रक्रियाक अतिशीघ्र समाधान अछि। सुधारवादी नाटकमे स्पष्ट नैतिक पक्ष होएब दोष नहि; दोष तखन बनैत अछि जखन विरोधी पात्र सामाजिक परिस्थितिक स्थानपर केवल अज्ञानक प्रतीक रहि जाइत अछि आ संघर्षक जटिलता घटि जाइत अछि। एहि संग्रहमे ठाम-ठाम एहन संकट अछि।

लोक-हास्यक सीमापर विशेष विचार आवश्यक अछि। ‘रसुन पियोज’मे हँसीकेँ मात्र सृजनशील ऊर्जा बुझि लेनाइ पर्याप्त नहि; नामकरणक माध्यमसँ व्यक्ति कतेक अपमानित भऽ सकैत अछि, तकर पहचानो जरूरी अछि। एक्के तरहेँ ‘बरहम बाबा’मे श्रद्धाक आड़मे सामाजिक तिरस्कार नाटकक विषय बनैत अछि। एहि दुनू रचनाक संयोजन एकटा पैघ नैतिक सूत्र दैत अछि: धर्मक नाम पर हो अथवा मजाकक नाम पर, व्यक्ति-गरिमाक उल्लङ्घनकेँ सामान्य मानब उचित नहि।

समीक्षाक परिणाममे ‘नवघर’केँ मैथिली सामाजिक एकांकीक महत्त्वपूर्ण उदाहरण कहि सकैत छी, जाहिमे समानान्तर रंग-चिन्तनक प्रबल प्रवृत्ति आ सामुदायिक लोकशिक्षाक विश्वास भेटैत अछि। एकर श्रेष्ठता संवादक जीवन्त प्रश्न, लोक-सामाजिक दृश्य आ पात्रक आत्मसम्मानक माँगमे अछि; ओकर कमजोरी समाधानक पूर्वनिर्धारित भाषणमे। ई द्वन्द्व संग्रहकेँ आलोचना योग्य बनबैत अछि।

निष्कर्ष

बेचन ठाकुरक ‘नवघर’क चारू नाटक समेकित रूपेँ आधुनिक मिथिलाक नैतिक जीवनक चारि समस्या खोलैत अछि। ‘नीशा मुक्ति’ असंयमक निजी-लोकक्षति सँ जन-शिक्षा धरि जाइत अछि; ‘बरहम बाबा’ श्रद्धाकेँ मानवीय समानताक सामने राखैत अछि; ‘घोघवाली कनियाँ’ घरेलू सत्ता आ सामाजिक न्याय बीच नवा समझौता खोजैत अछि; ‘रसुन पियोज’ सामूहिक हँसीक भीतर छिपल

अपमान पर प्रश्न करैत अछि। ई केवल सुधारक घोषणा सभ नहि, नाटकीय विवादक अनेक समृद्ध सम्भावना सेहो अछि।

बाल-साहित्यक दृष्टिसँ एहि संग्रहक सही स्थान मिश्रित अछि: किछु दृश्य बालकक अनुभव आ भागीदारीकेँ प्रत्यक्ष रूप दैत अछि, आन दृश्यसभ प्रौढ़ सामाजिक संस्था आ परिवारक दायित्व पर केन्द्रित अछि। एहि भेदक स्वीकारे विधागत ईमानदारी थिक। मैथिली एकांकीक इतिहासमे संग्रहक योगदान लोकभाषा, सामाजिक न्याय आ मंचक सामूहिक प्रकृतिक संगममे निहित अछि। आगाँ एकर मंचन-अभिलेख, पाठान्तर, समकालीन समीक्षा आ दर्शक-अनुभवक दस्तावेज उपलब्ध भेलापर एहि निष्कर्षकेँ आर विशिष्ट रूपेँ जाँचल जा सकत।

संवादक चयनित स्वर

एहि संक्षिप्त संवादसभमे पात्रक मूल स्वर आ नाटकीय परिस्थिति विशेष तीव्रतासँ मुखर होइत अछि।

- नीशा मुक्ति — बदरी सिंह: “मन जेते काबूमे रहत, ओते मानवतामे धनिक रहब।”
- बरहम बाबा — फूलो: “हम प्रेम-श्रद्धाक भूखल छी।”
- घोघवाली कनियाँ — समझौताक पहिल बिन्दु: “खेत-पथार दुनु भाँइ आधा-आधा लऽ ले।”
- घोघवाली कनियाँ — जीतन: “हमरा कोनो दिक्कत नै अछि। हमरा मनोनाय अछि।”
- घोघवाली कनियाँ — रूपवती: “हम कोनो मामूली जनानी छी।”
- रसुन पियोज — फेकू: “रसुन बीस टके किलो छलै, से अस्सी भऽ गेलै”
- रसुन पियोज — फेकू: “हम केकरोसँ कखनो कम छी।”

०२ / ०६

बेटीक अपमान आ छीनरदेवी

कन्या-विरोध, दहेज आ अन्धविश्वासक विरुद्ध रंगमंच

विषय-प्रवेश: साहित्य, सामाजिक समस्या आ रंगक जिम्मेदारी

मैथिली नाटकक अध्ययन प्रायः मुद्रित ग्रन्थ आ चर्चित रंगसंस्थाक इतिहास धरि सीमित भऽ जाइत अछि। ग्रामस्तर पर नियमित मंचन, छात्र-छात्राक भागीदारी, सरस्वती-पूजाक अवसरपर सार्वजनिक प्रस्तुति आ सीमित संसाधनसँ संचालित रंगकर्मकेँ साहित्येतिहासमे समान महत्त्व देब आवश्यक अछि। बेचन ठाकुरक एहि संग्रहक विशिष्टता एतबे नहि जे लेखक दूटा सामाजिक कुरीतिक विरोधमे कथानक रचैत छथि; विशिष्टता ई सेहो जे ओ समस्या देखबैत ग्रामीण परिवार, पड़ोस, पंचायत, विवाह-गोतियारी, भगत, पुरोहित आ दर्शकक साझा नैतिक जगतकेँ नाटकक भीतर आनैत छथि।

एहि नाटकसभक विचारधारा सुधारवादी अछि, मुदा ई एकरेखीय सुधारवाद नहि। पात्र कहियो अपन कथनसँ अपनेक विरोध करैत छथि, सामाजिक मूल्य बदलला पर पुरान लोभ नव वेश धारण करैत अछि, आ धर्मक आवरणमे तर्कक प्रवेश सेहो होइत अछि। एहि कारण लेखकक घोषित सन्देश आ नाट्यकृतिसँ निकलैत व्यापक अर्थ एक्कहि वस्तु नहि छथि। समीक्षाक प्रयोजन न तँ लेखकक सदिच्छाकेँ निर्विवाद प्रशंसा बना देब अछि, ने मंचीय असंगतिक आधारपर हुनकर लोक-रंगकर्मकेँ कमतर मानब; बल्कि पाठमे उपस्थित प्रमाणक आलोकमे कलात्मक उपलब्धि आ आलोचनात्मक सीमाक जाँच करब अछि।

ग्रन्थ आ रंग-सन्दर्भ

‘बेटीक अपमान आ छीनरदेवी’ बेचन ठाकुरक दूटा सामाजिक नाटकक संग्रह अछि। श्रुति प्रकाशनक एहि पुस्तकमे आशीष अनचिन्हारक आमुख आ लेखकक अपन कथन सँ पाठककें सामाजिक प्रश्न तथा ग्रामीण रंग-अनुभवक परिचय भेटैत अछि।

प्रकाशन-विवरणमे प्रथम संस्करण २०१० अंकित अछि, जखन कि आमुखमे २०११ क जनगणनाक उल्लेख अछि। एहि कालगत अन्तरक कारण संस्करण-वर्षक उल्लेख सावधानीपूर्वक देखल जाएब उचित अछि।

लेखक अपन कथनमे स्पष्ट करैत छथि जे ‘बेटीक अपमान’ लिखबाक पाछाँ बेटीक प्रति हीन दृष्टि, दहेज आ गर्भस्थ कन्याक नाशक चिन्ता अछि; ‘छीनरदेवी’क पाछाँ अन्धविश्वासक कारण पारिवारिक सम्बन्धमे घृणा आ वैमनस्य बढ़बाक अनुभव अछि। ओ २००२ सँ प्रत्येक वर्ष सरस्वती पूजापर अपन रचना मंचित करबाक आ अधिकांश प्रस्तुति छात्रा सभक द्वारा भेल होयबाक उल्लेख करैत छथि। एहि आत्मसाक्ष्यकें लेखकक रंग-अनुभवक महत्वपूर्ण प्रमाण मानि सकैत छी; मुदा स्वतन्त्र मंचन-अभिलेखक अभावमे प्रस्तुति-संख्या अथवा प्रभावक ठोस सांख्यिकीय निष्कर्ष निकालब उचित नहि।

आशीष अनचिन्हार आमुखमे ‘छीनरदेवी’कें अन्धविश्वास-विरोधी नाटकक रूपमे पढ़ैत छथि आ हरिमोहन झाक व्यंग्य-परम्परासँ एकर प्रश्नोत्तर-सम्बन्ध बनबैत छथि। ‘बेटीक अपमान’क सन्दर्भमे ओ मिथिला आ हरियाणाक पुत्र-पक्षपातक समस्या तुलनीय मानैत छथि। प्रस्तावना लेखकक प्रशस्ति मात्र नहि, अपन समयक मैथिली मंचसँ सामाजिक विषयपर अधिक प्रत्यक्ष हस्तक्षेपक अपेक्षा सेहो अछि। एतय ई ध्यानयोग्य जे प्रस्तावनाक ऐतिहासिक-सामाजिक दावा आ मूल नाटकक स्वयं उपस्थित प्रमाणकें अलग-अलग श्रेणीमे राखल गेल अछि।

आलोचनात्मक दृष्टि आ विधागत विभाजन

एहि अध्ययनमे पाँच प्रश्न प्रमुख अछि: (क) सामाजिक समस्या कथानकमे घटना बनैत अछि कि उपदेश-मात्र रहि जाइत अछि; (ख) पात्रक कथन आ व्यवहारमे विरोधाभास कोन अर्थ रचैत अछि; (ग) मंचीय क्रिया, दृश्य-परिवर्तन, लोकधुन, वस्तु आ सामूहिक उपस्थिति नाटककें कोना अर्थ दैत अछि; (घ) स्त्रीक आवाज ओकर अपन निर्णयमे परिणत होइत अछि कि पुरुषक नैतिक शिक्षा बनिऽ रहि जाइत अछि; आ (ङ) बाल-पाठक/बाल-अभिनेता लेल रचना-औचित्य कोन सीमा धरि अछि।

‘बेटीक अपमान’ तीन अङ्कक विस्तृत सामाजिक नाटक अछि—पहिल अङ्कमे सात, दोसरमे छओ आ तेसरमे नव दृश्य, अर्थात् कुल बाइस दृश्य। ‘छीनरदेवी’ पाँच दृश्यबला एकाङ्की अछि। दृश्य-गणना शीर्षक आ दृश्य-विभाजनक मिलानपर आधारित अछि। पहिल नाटक क्रमिक पारिवारिक समय, विवाहक अनेक अवसर आ वृद्धावस्था धरि पहुँचैत अछि; दोसर संकुचित काल-प्रसारमे रोग, आशंका, आरोप, मध्यस्थता आ नाटकीय समाधानक बाट बनबैत अछि। अपन-अपन आकारक अनुरूप दुनू नाटकक गति, संवाद-संयोजन आ रंगव्यवस्था अलग-अलग अछि।

‘बेटीक अपमान’: तीन अङ्कक कथाविकासक पृथक पाठविश्लेषण

पहिल अङ्क: बेटा-पक्षपातसँ स्त्रीक देह-क्षय धरि

दृश्य १: इच्छा, पछतावा आ आर्थिक गणित

दीपक अपन तीनू बेटाक बाद एकटा बेटी होयबाक इच्छा प्रकट करैत छथि; वीणा हुनका पुरान कथन स्मरण करबैत छथि जे पहिने कन्या भेलासँ गर्भपात करएबाक सोच छल। आरम्भे ‘इच्छा’ नैतिक पश्चात्तापक रूप लेबैत अछि—जाहि बेटीकेँ जन्मक अवसर नहि देल गेल, तकर अभाव आब अनुभूत होइत अछि। अर्थलाभ आ सामाजिक खर्चक गणना पुत्र-प्रेमक संग जुड़ल अछि। ई दाम्पत्य-संवाद प्रस्तावनात्मक व्याख्यानसँ अधिक प्रभावी अछि, कारण पात्र अपनेक पूर्व निर्णयक साक्षी बनैत छथि।

“एकटा बेटीक इच्छा होइ अछि। बेटा तँ भगवान तीनटा देलनि।”

दृश्य २: श्रम, स्वास्थ्य आ वीणाक मृत्यु

घरेलू ईन्धन, खेतक जलखै, स्त्रीक श्रम आ देहक अस्वस्थता साधारण गृहरससँ करुण परिणतिक बाट खोलैत अछि। वीणा लगातार गर्भधारण, गर्भ-समापन आ औषधिक शारीरिक मूल्यक विषय उठबैत छथि; तकर बाद मंचपर हुनकर मृत्यु घटैत अछि। नाटक दर्शककेँ ई देखबैत अछि जे परिवारक कथित ‘बेटा-रक्षा’ स्त्रीक जीवनकेँ विसर्जित करैत अछि। नाटकीय दृष्टिसँ मृत्यु तीव्र प्रभावक साधन अछि, मुदा चिकित्सकीय कारणक चित्रण साहित्यिक घटना अछि—एकरा स्वतन्त्र चिकित्सकीय प्रमाण नहि मानल जा सकैत अछि।

दृश्य ३: शोकक भीतर नारी-श्रमक स्वार्थ

विधुर दीपक अपन पत्नीकेँ याद करैत छथि, मुदा शीघ्रहि घरमे रान्हनिहारक अभावकेँ बेटी अथवा पुतोहूक आवश्यकता संग जोड़ैत छथि। प्रदीप कुमारक सलाहमे सहानुभूति अछि, तथापि बेटीकेँ घरेलू सेवा-सुविधाक रूपमे कल्पना करबाक जोखिम कायम रहैत अछि। पत्नी-वियोगक बादो श्रम-विभाजन नहि बदलैत; सन्देश ई बनैत अछि जे घरक संकट मात्र ‘स्त्री नहि रहबाक’ संकट नहि, पुरुषक घरेलू श्रमसँ दूरीक संकट सेहो अछि।

दृश्य ४: शिक्षा बनाम घरेलू उपयोगिता

दीपक बेतासभकेँ पढ़बाक आग्रह करैत छथि, फेर पढ़ाइक खर्च आ रान्हन-व्यवस्था देखैत मोहनकेँ नौकरी आ शीघ्र विवाहक दिशि धकेलैत छथि। मोहनक अध्ययन-इच्छा, सोहन-गोपालक विद्यालय-आकांक्षा आ कोचिङ्ग-केन्द्रक उल्लेख ग्रामीण शिक्षाक द्विविधा खोलैत अछि। गोपालक लयात्मक कथन दृश्यकेँ बाल-अभिनय लेल स्मरणीय बनबैत अछि; संगहि विद्यालय, पोशाक, मध्याह्न-भोजन सन सुविधाक सामाजिक स्वीकृति देखाइत अछि। शिक्षा आदर्श अछि, मुदा परिवारक आर्थिक तात्कालिकता ओकरा बाधित करैत अछि।

दृश्य ५: बलवीर-सुनीताक प्रतिपक्ष

बलवीरक दू बेटी मंजू आ संजूक प्रति आत्मविश्वास दीपकक परिवारक प्रतिपक्ष रचैत अछि। बेटीक संख्या नहि, पालन-पोषण आ शिक्षा महत्त्वपूर्ण ठहरैत अछि। सुनीताक आरम्भिक पुत्र-इच्छा संवादक भीतर बदलबैत अछि; ई परिवर्तन प्रतीकात्मक अछि। तथापि ‘डॉक्टर-इन्जीनियर-एस.पी.-कलक्टर’ बनबाक लक्ष्यक अत्यधिक बल बेटीकेँ अपन अस्तित्वसँ बेसी सामाजिक प्रतिष्ठाक साधन बनाबय लगैत अछि। बालशिक्षा आ समान-अधिकारक आधार पर एहि दृश्यक ताकत बहुत अछि।

“की बेटी बेतासँ कम होइ छै?”

दृश्य ६: शालिनीक परिवार आ वर्गगत अन्तर

गरीब किसान हरिश्चन्द्र आ राधाक घरमे एकमात्र बेटी शालिनी अछि। आरम्भमे संतान-संख्याक दुख अछि, मुदा पोषणक सामर्थ्य आ गर्भ-समापनक नैतिकता पर बातचीत होइत अछि। गरीब बेटीकेँ शिक्षा देबाक संकट एतय स्वतन्त्र रूपमे उभरैत अछि। बलवीरक बेटी उच्च शिक्षाक स्वप्न अछि; शालिनीक शिक्षा कठिन प्रयत्नक विषय। नाटक एउ व्यक्तित्व सभक भीतर वर्गानुसार असमान अवसरक संकेत दैत अछि, यद्यपि शालिनीक अपन स्वर एखन कम सुनाइत अछि।

दृश्य ७: विवाहक पृष्ठभूमिक पुनरागमन

प्रदीप द्वारा मोहनक शीघ्र विवाहक परामर्श आ दीपकक दहेजक सम्भावनाक प्रश्न पहिल अङ्कक नैतिक विरोधाभासकें पुनः स्थापित करैत अछि। कन्याक अभावक करुण पछतावा व्यवहारमे फेर वधू-खोज आ लेन-देनक अर्थशास्त्रमे परिणत भऽ जाइत अछि। एतय नाटकक मूल व्यंग्य जन्म लैत अछि: जे व्यक्ति बेटीकें आर्थिक बोझ बुझैत छल, से पुतोहूकें घरेलू समाधान आ दहेजक लाभक साधन बनबैत अछि।

दोसर अङ्क: विवाह-बाजार आ दहेजक अपमानजनक भाषिक संसार

दृश्य १: लड़काक अधिकता कथानकक आर्थिक आधार बनैत अछि

दीपक अपन संगी महेन्द्र पण्डित लग मोहनक विवाह लेल कन्याक खोज करैत छथि। महेन्द्रक कथनमे लड़काक बहुतायत आ कन्याक अभाव उभरैत अछि। आरम्भिक गर्भ-लिङ्ग-भेदक परिणाम आब सामूहिक विवाह-संकट बनिकऽ उपस्थित होइत अछि। व्यक्तिगत निर्णय आ सामाजिक जनसांख्यिकीय असरक बीच नाटक कारण-परिणामक सम्बन्ध स्थापित करबाक प्रयास करैत अछि, यद्यपि पात्रक अनुभव संख्यात्मक सर्वेक्षणक बराबर नहि।

दृश्य २: सम्बन्ध-निर्माणक मध्यस्थता

सुरेश कामत विवाहक मध्यस्थ बनैत छथि आ बलवीरक बेटी लेल प्रस्ताव उठबैत छथि। विवाह गृहस्थी, जातीय-गोतियारी, मध्यस्थक विश्वसनीयता आ पारिवारिक सुविधाक विनिमय छी—एहि सामाजिक ढाँचाक संकेत दृश्य देइत अछि। महिला-पात्र एतय प्रत्यक्ष निर्णायक केन्द्रमे नहि छथि; पुरुष-सम्बन्धी सामाजिक वार्ता रंगमंचपर हावी अछि।

दृश्य ३: चरण-पखारब आ प्रतिष्ठाक आयोजन

बलवीरक घर विवाह-वार्ताक आरम्भमे पाँयर धोबाक विधि पर बल दैत अछि। रीतिक आदर आ वर-पक्षक अधिकारक बीच हास्यमिश्रित टकराव होइत अछि। वस्तुतः चरण-पखारबक आग्रह 'सम्मान'क भाषामे सत्ता-संबन्धक उद्घाटन करैत अछि। लोक-रीतिक दृश्योपयोग रंगमंचकें स्थानीय बनबैत अछि; ई सम्पूर्ण प्रसंगकें केवल अनुष्ठानक उल्लेख नहि, क्रिया बनाकऽ प्रस्तुत करैत अछि।

दृश्य ४: छेका, लेन-देन आ पुरुषसभाक निर्णय

मोहनक छेकाक अवसरपर अनेक पुरुष-पात्रक बहस, रोक-टोक, पान-बीड़ी-नाश्ता, पुरोहित, दक्षिणा आ लोकगीत सभ मिलिकऽ ग्रामीण विवाहक भीड़बला रंग-विन्यास तैयार करैत अछि। एतय लेखकक मंचक अनुभव स्पष्ट अछि; मुदा बहुत पात्र, दोहरायल बात आ दीर्घ वार्ता दृश्यगतिकेँ ढील सेहो दैत अछि। दहेजक मुद्दा भावनात्मक सम्बन्धसँ हटि मोल-भावक रूप लैत अछि, जतय विवाह बजारक लेन-देनसँ भिन्न नहि रहैत।

दृश्य ५: विवाहक उत्सव आ व्यंग्यात्मक प्रदर्शन

जयमालाक तैयारी, परिछन-गीत, बरियाती-सरियाती आ गङ्गारामक अतिशयोक्तिपूर्ण व्यवहार लोक-रंगक उत्सवी सतह रचैत अछि। दहेज-प्रतिष्ठा-खानपानक हास्य नाट्यरस बनबैत अछि, मुदा कन्याक व्यक्तित्वक अभाव शून्य सेहो रचैत अछि: मंचपर विवाहक आयोजन भव्य अछि, दुलहिनक स्वतन्त्र इच्छाक विस्तार अल्प अछि।

दृश्य ६: दहेजक अपूर्ण अपेक्षा आ कर्ज

दीपकक अपेक्षित दहेज नहि भेटबाक क्षोभ नाटकक निर्णायक विडम्बना अछि। ओ माय-बेटीक मानवीय महत्त्वक पाठ एखनहुँ ग्रहण नहि केलनि; पत्नी गेलीह, मुदा लोभ बचल अछि। कर्जक बोझ आ रोगक संकेत तेसर अङ्कक विपत्तिक पूर्वाभास बनैत अछि। करुणा आ उपहास एक्कहि पात्रपर केन्द्रित होइत अछि—एहि मिश्रित प्रभावसँ नाटकक नैतिक दृष्टि अधिक जटिल बनैत अछि।

तेसर अङ्क: दहेजक उलटा प्रवाह आ पछतावाक नाटकीय पराकाष्ठा

दृश्य १: वृद्धावस्थामे पुत्रसँ दूरी

रोगग्रस्त दीपक अपन बेटा-पुतोहूँक उपेक्षाक अनुभव करैत छथि। महेन्द्रक पुनर्विवाह-सलाह समाधानक बदला पुरान सामाजिक संरचना दोहराबय लगैत अछि: देखरेख लेल फेर एकटा स्त्री चाही। वृद्धक पीड़ा वास्तविक अछि, मुदा नाटक स्वयं इहो उद्धाटित करैत अछि जे महिला-श्रमकेँ परिजन-स्नेहक एकमात्र माध्यम बुझल गेल अछि।

दृश्य २: दिल्लीक दाम्पत्य आ प्रवास

मोहन-मंजूक दिल्ली-निवास, पिता-पुत्र आ गाम जेबाक खर्चक चर्चा प्रवासक आर्थिक व्यवहार आ पारिवारिक उत्तरदायित्वक दूरीकेँ जोड़ैत अछि। मंजू अपन पति सँ पिताक प्रति कर्तव्य निभयबाक

आग्रह करैत छथि। एहि दृश्यसँ ‘बेटी’ केवल पारिवारिक संख्या नहि, नैतिक उत्तरदायित्वक वाचक सेहो बनैत अछि—यद्यपि पाठक दृष्टिमे मंजूक स्वतन्त्र जीवनक विस्तार सीमित रहैत अछि।

दृश्य ३: कन्याक अभावक सार्वजनिक स्वीकार

प्रदीप दीपककेँ दहेज, लिङ्ग-परीक्षणक दुरुपयोग आ कन्याक घटैत उपलब्धताक सम्बन्ध समझबैत छथि। नाटक अपन कारण-व्याख्या स्पष्ट करैत अछि। किन्तु दीर्घ भाषण दृश्यसँ क्षणिक बाहर जा कऽ समाजोपदेश बनए लगैत अछि। विचारक तात्कालिकता महत्त्वपूर्ण अछि, शिल्पगत संयम ओतबे अपेक्षित।

“दहेज दुनियाक संतुलनकेँ बिगारि देलक आ बिगारि देत।”

दृश्य ४: शालिनीक सम्बन्धमे सत्ता-पलटा

हरिश्चन्द्रक आँगनमे आइल वर-पक्ष आब विनतीक अवस्थामे अछि। मुखिया रमण कुमार विवाहक शर्त रखैत छथि। पारम्परिक दहेज-दाता आ दहेज-ग्राहकक स्थिति उलटैत अछि: आब वर-पक्षसँ ५१ हजार टाकाक माँग पर सम्बन्ध निश्चित होइत अछि। एहि उलटफेरमे सुधारक नाटकीय चमत्कार अछि, मुदा समतामूलक विवाह नहि। लेन-देनक दिशा बदलि गेलासँ स्त्री अथवा पुरुषक वस्तुकरण समाप्त नहि होइत अछि। लेखकक आलोचना आर्थिक व्यंग्यक माध्यमसँ उभरैत अछि; ओकरा पाठककेँ स्त्री-अधिकारक पूरा प्रतिमान बुझि नहि लेबाक चाही।

दृश्य ५: धनक वचन आ जयमालाक विराम

शालिनीक विवाहमे नगद राशि दैत तखन जयमाला आगाँ बढबाक प्रसंग दहेज-पद्धतिक दर्पण-रूपक अछि। पुरान वर-पक्षक अहंकार आब अपने अपमानक अनुभव करैत अछि। श्रेणीगत दृष्टिसँ ई प्रतिशोधमूलक न्याय छी—शोषणक समाप्ति नहि, ओकर उलटा पुनरावृत्ति। मंचनक दृष्टिसँ जयमालाक रुकनाइ प्रभावी क्रिया बनि सकैत अछि, कारण दर्शक कथन सुनबाक बदला लेन-देनक सार्वजनिक असुविधा देखैत अछि।

दृश्य ६: वृद्धक आर्थिक थकान

दीपकक बढ़ैत रोग, विवाही खर्च आ लगातार असन्तोष सामाजिक लोभकेँ शारीरिक क्षयक रूप दैत अछि। नाटकमे रोग अनेक बेर नैतिक दण्डक निकष बनैत अछि। ई संरचना लोकनैतिक कथाक निकट अछि; समकालीन आलोचना पूछि सकैत अछि जे बीमारीकेँ कुकर्मक फल मानबाक प्रवृत्ति स्वयमेँ करुणा आ देखभालक आधुनिक नैतिकतासँ कतेक मेल खाइत अछि।

दृश्य ७: गोपालक विवाह-सम्बन्धक खोज

सुरेश लग फेर पहुँचब विवाहक दोहराएल चक्र देखबैत अछि। दहेजक अनुभवसँ दीपक उचित पाठ नहि सीखैत छथि; अभाव, लाचारी आ गणितक एकटा नव संस्करण देखाइत अछि। दोहराव लेखकक व्यङ्ग्यकें धार दैत अछि, मुदा दृश्य-व्यवस्था सघन करबासँ एकर असर आर बढ़ि सकैत छल।

दृश्य ८: कन्या-पक्षक मोल-भावक चरम

गोपालक विवाह-प्रसंगमे फेर नगद लेन-देन आ जयमालाक शर्त आबैत अछि। सामाजिक प्रतिष्ठाक पुरान भाषा मंचपर व्यंग्यक रूपमे पलटैत अछि। विवाहसम्बन्धी रीत, दामादक स्थिति आ पुरुषक प्रतिष्ठा सबपर हास्यक आघात अछि। तथापि लेखकक अन्तर्वस्तु एकटा महत्वपूर्ण सीमा राखैत अछि: कन्याक अधिकारक समर्थक समाधान शिक्षा, उत्तराधिकार, परस्पर सहमति आ स्वतन्त्रता होयत; वर-पक्षसँ धन लेबाक नब परम्परा मात्र नहि।

अन्तिम दृश्य: पछतावा, पुत्र-पुतोहू आ मृत्यु

दुःखग्रस्त दीपकक अन्तिम समयमे परिजनक विवाद, चिकित्सकक प्रवेश आ अन्तिम पछतावा एकटा नैतिक परिणतिक चरम बिन्दु अछि। पत्नी वीणाक मृत्यु अङ्क-पहिलमे आ दीपकक मृत्यु अन्तमे —दुनू मिलिकऽ पारिवारिक त्रासदीक वलय बनबैत छथि। ई वलय नाटककें उपदेशात्मक समापन दैत अछि, मुदा संतानक सामूहिक दोषारोपण, रोगक दण्डरूपता आ अतिदीर्घ मृत्यु-दृश्यक कारण करुणानुभव कखनो घोषणाक तले दबि जाइत अछि।

‘छीनरदेवी’: पाँच दृश्यक समीप-पाठ आ वैचारिक द्वन्द्व

दृश्य १: ललनक असामान्य आचरण आ भगतक आगमन

सुभाष—मीराक बेटा ललन अस्थिर आक्रामक व्यवहार करैत अछि। परिवार कारण बुझबाक बदला आत्मा अथवा देवीक प्रभाव मानय लगैत अछि। सुखल कियोट भगतकें बजाओल जाइत अछि; ओ अनुष्ठानिक क्रिया आ पूछताछ करैत छथि, किन्तु अन्तमे अपन असमर्थता प्रकट करैत छथि। ई अन्तिम असमर्थता नाटकक महत्वपूर्ण विघटनकारी क्षण अछि: ‘भगत’ पूर्ण समाधानक सर्वज्ञ पात्र नहि रहैत। तथापि रोगक स्पष्ट चिकित्सकीय निदान दृश्यमे अनुपस्थित अछि।

दृश्य २: डाइन-आरोप, कुटुम्ब-विघटन आ प्रतिरोध

ललनक व्यवहारक अर्थ परिवारक एक महिला सुकनीक विरुद्ध आरोपमे बदलैत अछि। पड़ोसक मटुक-राजू आदि पात्रसँ अफवाह सामाजिक बल प्राप्त करैत अछि। सुकनीक बेटा सोमन अपन मायकेँ बचाबय लेल विरोध करैत अछि। डाइन ठहरएबाक नामपर हिंसा, सार्वजनिक अपमान आ जानलेवा धमकीक संभावना ई दृश्यकेँ सबसँ तीक्ष्ण बनबैत अछि। नाटक दिखबैत अछि जे अन्धविश्वास केवल व्यक्तिगत भ्रम नहि, सम्बन्ध-भङ्ग आ भीड़-हिंसाक तकनीक बनि सकैत अछि।

दृश्य ३: परबतियाक छद्म-दैवी मुद्रा आ विवेक

परबतिया कोइरक पात्र-परिचयमे हुनका मनोवैज्ञानिक कहल गेल अछि, मुदा मंचपर ओ भगत-सदृश आवेश, ‘बोल जय गंगा’क आवृत्ति आ काली-बन्दीक आवरण लऽ कऽ प्रवेश करैत छथि। एहि द्वैध रूपकेँ लेखकक रणनीति बुझल जा सकैत अछि: श्रद्धाक भाषामे प्रवेश कऽ श्रद्धा-जन्य भ्रान्ति तोड़ब। ओ डाइनक सर्वशक्तिमत्ता पर तर्क करैत छथि आ आरोपकेँ मनक शंका ठहरबैत छथि। ई नाटकक बौद्धिक शिखर अछि।

“डायनपर विश्वास केनाइ खाँटी अंध विश्वास छी।”

मुदा परबतिया ललनक समस्या लेल शीघ्र विवाहक उपाय सेहो दैत छथि; एहि बिन्दुपर अन्धविश्वास-विरोध आ विवाहकेँ उपचार मानबाक अनाधारित अपेक्षा एक-दोसरसँ टकराईत अछि। समाजक मनोवृत्ति बदलबाक प्रयत्न जे पात्र करैत छथि, वैह पात्र बीमारीक प्रश्नकेँ चिकित्सकीय परीक्षणक बदला विवाह-समाधान दिस मोड़ि दैत छथि। लेखकक सुधारवादी उद्देश्यकेँ मानैतहुँ एहि असङ्गतिकेँ छिपेनाइ उचित नहि।

दृश्य ४: अनुअंजना, मन्दिर-विवाह आ सहमतिक प्रश्न

घटकराज तुरन्त विवाहक उपाय सुझबैत छथि; अमोलागाछी स्थित काली मन्दिरमे विनोद झाक माध्यमसँ ललन आ अनु अंजनाक विवाह सम्पन्न होइत अछि। हास्य, अल्प-दक्षिणा, मंत्रोच्चार आ वर-वधूक उतावली दृश्यकेँ गतिशील बनबैत अछि। अनु अंजनाक पूर्व विवाहसभक प्रसङ्ग असामान्य चरित्र-हास्य उत्पन्न करैत अछि। मुदा आलोचनात्मक प्रश्न ई अछि जे अस्थिर व्यवहारबला युवककेँ औषधि दऽ शान्त करबाक बाद विवाह कएल जाएबाक स्थिति सहमति, स्वास्थ्य आ जानकारीक कसौटीपर कोना जाँचल जाएत? पाठ एहि प्रश्नक पर्याप्त समाधान नहि देइत अछि।

दृश्य ५: कथित आरोग्य आ नीतिवचन

अन्तिम दृश्य ललनकेँ शान्त देखबैत अछि आ परबतियाक ज्ञान-वचनसँ समापन करैत अछि। सुभाषक घरमे सामञ्जस्यक पुनः स्थापना लेखकक अपेक्षित फल अछि। मुदा विवाहक तुरन्त बाद ‘पूर्ण ठीक’ भऽ जएबाक संकेत असाधारण व्यवहारक जटिल चिकित्सकीय कारणसभकेँ सरल बनबैत अछि। एहिमे लोक-प्रदर्शनक सुखान्त अपेक्षा तृप्त होइत अछि, यथार्थवादी समस्या-विश्लेषण आंशिक रहि जाइत अछि।

“अंध विश्वासमे लोक भटक जिनगीकेँ गर्तमे धकेल लैत अछि।”

स्त्रीक स्वर, पितृसत्ता आ समाज-सुधारक सीमारेखा

‘बेटीक अपमान’क पहिल सशक्त स्वर वीणा छथि। ओ पति द्वारा धन, देहेज आ बेटाक प्राथमिकताकेँ प्रश्नांकित करैत छथि। हुनकर विरोध देहक श्रम, गर्भ-समापनक कष्ट आ आत्मसम्मानक यथार्थ अनुभवसँ निकलैत अछि। त्रासदी ई अछि जे समाजकेँ नैतिक शिक्षा देबाक लेल कथानक हुनकर मृत्युकेँ आवश्यक घटनाक रूपमे बरतैत अछि। वीणाक पीड़ा प्रभावकारी अछि, मुदा हुनकर जीवित प्रतिरोधकेँ बहुत देर धरि कथा-केन्द्रमे रहबाक अवसर नहि भेटैत।

मंजू आ संजू शिक्षित बेटीक सम्भावना चिन्हित करैत छथि; शालिनी गरीबीक कारण अवसर-वञ्चित बेटी छथि; राधा आ सुनीता अलग-अलग सामाजिक अनुभवक स्वर रखैत छथि। तइयो तीनू अङ्कमे विवाहक आर्थिक शर्त प्रायः पुरुषसभ तय करैत छथि। शीर्षक बेटीक अपमानक विरुद्ध अछि, मुदा कन्याक इच्छा, संपत्तिपर अधिकार, उच्च शिक्षा आ वैवाहिक स्वायत्तताक प्रश्न अपेक्षाकृत कम विकसित अछि। एहि सीमाकेँ नाटकक सामाजिक युगसन्दर्भमे बुझि सकैत छी; आलोचनाकेँ एकरा गुण बनाकऽ नहि देखाबक चाही।

‘छीनरदेवी’मे सुकनी डाइन-आरोपक प्रत्यक्ष पीड़िता छथि। परबतिया महिला-तर्कक विचित्र मुदा असरदार प्रतिनिधि छथि, जे भगत-भेषमे वैज्ञानिक संशयक सामान्य भाषा रचैत छथि। एहि विरोधाभासमे नाटकक मौलिकता अछि। एकहि कालमे स्त्री पर आरोप लगब आ स्त्री द्वारा ओकर खण्डन होयब सामाजिक प्रतीकात्मकता बनबैत अछि। तथापि सुकनीक स्वतन्त्र पक्ष अधिक विस्तृत होइत तँ आरोप-संस्कृतिक प्रत्यक्ष मानवीय मूल्य आर उजागर होइत।

नाट्य-शिल्पः लोकवाक्य, पुनरावृत्ति, हास्य, दृश्य-सामग्री आ मंचयोग्यता

बेचन ठाकुरक संवादक भाषा मुख्यतः ग्राम्य मैथिली अछि। पात्र ‘माल-पानी’, ‘भनसा-भात’, ‘नज्/नै’, ‘गोरा लगनाइ’, ‘दुआर’, ‘छेका’, ‘समधि’ सन सामाजिक शब्दावलीसँ अपन परिवेश बनबैत छथि। नाटकक भाव-यथार्थ एतए शुद्ध औपचारिक भाषासँ बेसी लोकबोलीक लयपर निर्भर अछि। हास्यक साधन अपमानजनक संबोधन, पुनरुक्ति, अतिशयोक्ति, सामाजिक प्रतिष्ठाक उलटफेर आ अनुष्ठानिक बातचीत अछि। संवाद कहियो अतिशय फैलैत अछि, मुदा एही विस्तारमे रंगमंचक सामूहिक जीवित बोली सुरक्षित अछि।

मंच-सामग्री विशेष अध्ययनयोग्य अछि—कुरसी, जलक लोटा, चरण-पखारबाक पात्र, छेकाक डाली, बिछाओन, चिट्ठी, खैनी, मृदंग, माटि, विभूति, रोगी लेल बर्तन, विवाह-मण्डप आ दक्षिणाक नगद राशि। ई सभटा वस्तु गामक जीवनक चिन्ह मात्र नहि; अभिनेताक चलन, प्रतीक्षा, आवागमन, हँसी, तनाव आ सार्वजनिक निर्णायक प्रक्रिया सम्भव बनबैत अछि। घर-दलान-आँगन-मन्दिर जेकाँ दोहराएल स्थानसँ कम-संसाधनक स्थानीय मंच पर प्रस्तुति सहज होयबाक सम्भावना अछि।

‘बेटीक अपमान’मे बाइस दृश्य सामाजिक सर्वेक्षण-जकाँ अनेक प्रसंग समेटैत अछि; एहि कारण कथा-केंद्र कखनो दीपकक आत्मपरिवर्तनसँ हटि विवाहक तकनीकी मोल-भावमे बाँटि जाइत अछि। ‘छीनरदेवी’मे पाँच दृश्यक सघन क्रम अपेक्षाकृत एकाग्र अछि, मुदा ललनक असामान्य व्यवहारक कारण आ अनुअंजनाक चरित्रक हास्य-निर्माणमे असावधानी आधुनिक दर्शक लेल समस्या बनि सकैत अछि। अभिनय-निर्देशनमे हिंसात्मक धमकीक दृश्यकेँ आलोचनात्मक दूरीसँ प्रस्तुत करब आवश्यक होएत।

नाटकीय अन्तक तुलना सेहो अर्थपूर्ण अछि। पहिल नाटक मृत्यु आ पश्चात्तापपर समाप्त होइत अछि, दोसर विवाह आ शान्तिपर। एकटा पात्रकेँ दण्ड देइत सामाजिक चेतावनी बनबैत अछि; दोसर सांस्कृतिक मेल-मिलापद्वारा समस्या मेटाएल घोषित करैत अछि। ई दू अन्त सुधारवादी रंगमंचक दू भिन्न तकनीक—भय-जनित शिक्षा आ सुखान्त-जनित शिक्षा—प्रदर्शित करैत अछि।

बाल-साहित्यक इतिहास आ छात्र-रंगमंचः तुलनात्मक विवेचन

सर्वप्रथम विधागत स्पष्टता जरूरी अछि: ‘बेटीक अपमान’ आ ‘छीनरदेवी’ स्वयं पाठ-प्रमाणक अनुसार वयस्क-कुटुम्ब केन्द्रित सामाजिक नाटक छथि। बालक अथवा छात्र द्वारा मंचन भेलासँ कोनो

कृति स्वतः बाल-साहित्य नहि भऽ जाइत अछि। बाल-साहित्यक पहचान बालकक अनुभव-दृष्टि, कथात्मक सुबोधता, भावनात्मक आयु-उपयुक्तता, कल्पना, प्रश्न करबाक अवकाश, आनन्द-तत्त्व आ प्रस्तुति-सन्दर्भ पर निर्भर करैत अछि। एहि पृथक्करणक आधारपर बेचन ठाकुरक कार्यकें ‘बाल-भागीदारीबला सामुदायिक रंगमंच’क इतिहासमे विशेष महत्त्व दैतहुँ बाल-नाटकक शुद्ध विधागत सूचीमे बिना टिप्पणी रखब गलत होएत।

मैथिली नाट्यपरम्पराक पूर्वकालीन अभिलेखक रूपमे विदेह-पोथी भण्डारमे ‘धूर्तसमागम’ आ पुरान नाटकक प्रस्तुति उपलब्ध अछि। ओहि परम्परासँ बेचन ठाकुरक साम्य संस्कृतनिष्ठ नाट्यरूपमे नहि, सामाजिक ढोंग, अनुष्ठान आ विद्रूपक हास्य-उद्धाटनमे ताकल जा सकैत अछि। पुरान प्रहसनमे धार्मिक अधिकारक आडम्बर विडम्बना बनैत अछि; ‘छीनरदेवी’मे भगतक भाषा उलटि कऽ अन्धविश्वास-विरोधी विवेकक माध्यम बनैत अछि। ई तुलनात्मक संकेत अछि, प्रत्यक्ष प्रभावक ऐतिहासिक दावा नहि।

विदेहमे प्रकाशित समकालीन ‘मैथिली बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्र’ बाल-पाठक लेल रस, औचित्य, कथा-रचना आ भाषिक सरलताक विविध कसौटी सामने रखैत अछि। एहि कसौटीपर बेचन ठाकुरक नाटकमे लोकभाषाक तत्क्षण बोध, गीत-संवाद, दृश्याभिनय आ सामाजिक प्रश्नक शक्ति छैक; मुदा गर्भ-समापन, मृत्यु, डाइन ठहरएबाक हिंसात्मक धमकी आ वैवाहिक लेन-देन सन प्रसंग बिना शैक्षिक रूपान्तरण छोट बालक लेल उपयुक्त नहि मानल जा सकैत अछि। वरिष्ठ छात्र-कलाकार लेल ई पाठ सहमति, स्वास्थ्य, लिङ्ग-न्याय आ अन्धविश्वासक विवेचनक आधार अवश्य बनि सकैत अछि।

डॉ. अमरेन्द्रक ‘अंगिका बाल-साहित्य’ पर विदेहमे प्रकाशित तुलनात्मक समीक्षा बाल-रचनाक इतिहास लोरी, खेलगीत, पहेली, कथा आ नव युगक एकाङ्की धरि विस्तृत सांस्कृतिक वंशावलीक रूपमे देखैत अछि। एहि नजरिएँ बेचन ठाकुरक छात्र-प्रस्तुति लिखित नाटक आ सामुदायिक मौखिक सांस्कृतिक बीच सेतु बनैत अछि। तइयो अंगिका आ मैथिली साहित्यक विधागत इतिहास एक समान नहि; एतय तुलना बाल-अभिनयक सांस्कृतिक माध्यम धरि सीमित अछि।

विदेहक ‘मैथिली नाट्यमंच/नाटक लेल एकटा समीक्षा सिद्धान्त’ शृंखला आ ‘नाट्य-नवग्रह’ सन समकालीन आलोचनात्मक सामग्री नाटकक अर्थकें मुद्रित संवादक अतिरिक्त प्रस्तुति, दर्शक-सम्बन्ध आ सामाजिक सत्ता-संरचनामे खोजबाक आधार दैत अछि। बेचन ठाकुरक प्रयोगमे छात्रा सभक अभिनय आ गामक उत्सवी मंचनक सूचना एहि दृष्टिएँ महत्त्वपूर्ण अछि: ई सामग्री नाट्य-साहित्यक इतिहासमे विद्यालयीन शिक्षण आ लोक-भागीदारीक साझा क्षेत्र उद्घाटित करैत अछि। तथापि उपलब्ध

सूचनासँ कार्यक्रमक प्रत्येक वर्षक नाटक, कलाकार-संख्या आ वास्तविक दर्शक-प्रतिक्रियाक क्रमवार इतिहास तयार नहि कएल जा सकैत अछि। [५-६]

बाल-रंगमंचक दृष्टिसँ सम्भावना आ सीमा

बाल-रंग-अध्ययनमे कृति आ मंचनक सम्बन्ध द्विमुखी अछि। गम्भीर कथाकेँ छात्र प्रस्तुत करथि तँ अभिनयद्वारा सार्वजनिक बोलबाक साहस, उच्चारण, स्मृति, एकजुटता आ समाज-संवादक क्षमता विकसित भऽ सकैत अछि। मुदा पाठक सामाजिक दर्शन जखन अभिनेता अपन उमरसँ पैघ अनुभवक आघात सँ संबंधित हो, तँ शिक्षक/निर्देशककेँ प्रसंगक संवेदनशीलता बुझबाक आवश्यकता अछि। विशेषतः वीणाक शारीरिक पीड़ा, सुकनी पर हिंसाक धमकी आ विवाहक सहमतिक प्रश्नकेँ बाल-हितैषी संवादमे बदलब अपेक्षित अछि। एहि भेदभावक सम्यक् विवेचन बिना ‘बाल-नाटक’क श्रेणी बहुत विस्तार पाबि अर्थहीन भऽ सकैत अछि।

नैतिक परिणति आ आलोचनात्मक उपलब्धि: चारि तुलनात्मक निष्कर्ष

पहिल, दुनू नाटकमे सामाजिक संकटक जड़ सामूहिक मनोवृत्ति अछि। कन्या-विरोध वैयक्तिक गर्भ-निर्णयक पाछाँ दहेजक आर्थिक विचारधारा छैक; डाइन-आरोप वैयक्तिक भयक पाछाँ पड़ोस, कुटुम्ब आ मनगढ़न्त सत्ता छैक। एहि साझा संरचनाक कारण दुनू नाटककेँ एक पोथीमे संकलित करब अर्थपूर्ण अछि।

दोसर, दुनू नाटक परिणामसँ शिक्षा देब चाहैत अछि। ‘बेटीक अपमान’मे स्त्रीक मृत्यु आ वृद्धक पछतावा; ‘छीनरदेवी’मे परबतियाक तर्क आ सुखान्त। मुदा कारणक अतिसरल रेखांकन कखनो वास्तविक सामाजिक जटिलताकेँ घटबैत अछि। भ्रूण-समापन, मानसिक स्वास्थ्य आ घरेलू हिंसा सन विषयक मंचीय पुनर्प्रस्तुति आजुक विवेकमे भेदभावसँ मुक्त, पीड़ित-केन्द्रित आ साक्ष्य-संवेदी होयबाक चाही।

तेसर, नाटककारक सर्वाधिक सफल शिल्प-विधान ‘बोलैत समाज’क निर्माण अछि। ई मंच एक नायकक एकालाप नहि; ओहिमे काका, मामा, पड़ोसी, मुखिया, बौआ, भगत, पुरोहित, दुलहा-दुलहिन, डॉक्टर आ घरक स्त्री सभक शोर उपस्थित अछि। सामाजिक असङ्गतिक उद्घाटन एहि बहुवक्ता संसारसँ होइत अछि। मुदा बात दोहराएब, दीर्घ मोलभाव आ नीतिपाठक अधिकता कथ्यक धार कखनो कम करैत अछि।

चारिम, नारी-मुक्तिक प्रश्न नाटकक प्रमुख नैतिक शक्ति होइतहुँ ओकरा भीतर अपूर्ण अछि। बेटीकेँ नहि मारबाक आग्रह स्त्रीक जीवन-अधिकारक आवश्यक आरम्भ अछि; मुदा स्त्रीक विवाह, शिक्षा, उत्तराधिकार, देह, स्वास्थ्य आ निर्णयपर अपन अधिकार साहित्यिक परीक्षणक अगिला पड़ाव अछि। ‘छीनरदेवी’क विवेक-शिक्षा सेहो तखने पूर्ण होयत जखन डाइन-आरोपक खण्डनक संग मानसिक स्वास्थ्यक सम्मानजनक देखभाल आ वैवाहिक सहमति सेहो कथाक केन्द्र बनत।

संवादक वैचारिक प्रतिध्वनि

एहि संवादसभमे पारिवारिक निर्णय, स्त्रीक स्थिति आ सुधारवादी अन्तर्विरोधक तनाव एकाग्र होइत अछि।

“एकटा बेटीक इच्छा होइ अछि। बेटा तँ भगवान तीनटा देलनि।”

पात्र: दीपक; ‘बेटीक अपमान’, पहिल अङ्क, पहिल दृश्य।

“की बेटी बेटासँ कम होइ छै?”

पात्र: बलवीर; ‘बेटीक अपमान’, पहिल अङ्क, पाँचम दृश्य।

“दहेज दुनियाक संतुलनकेँ बिगारि देलक आ बिगारि देत।”

पात्र: प्रदीप; ‘बेटीक अपमान’, तेसर अङ्क, तेसर दृश्य।

“डायनपर विश्वास केनाइ खाँटी अंध विश्वास छी।”

पात्र: परबतिया; ‘छीनरदेवी’, तेसर दृश्य।

“अंध विश्वासमे लोक भटकि जिनगीकेँ गर्तमे धकेल लैत अछि।”

पात्र: सुभाष; ‘छीनरदेवी’, अन्तिम दृश्य।

निष्कर्ष

‘बेटीक अपमान आ छीनरदेवी’केँ मिथिलाक ग्राम-समाजमे रचल सामाजिक सुधारवादी रंगक एक महत्त्वपूर्ण पाठ मानल जाए। एकर साहित्यिक शक्ति अनुभवक निकटता, बोलचालक मैथिली, लोक-

रीतिक रंगसम्भावना, सहज हास्य, नारी-पीड़ाक प्रभावी उद्घाटन आ अन्धविश्वाससँ उपजल हिंसाक सार्वजनिक विरोधमे अछि। ई नाटक दूटा अलग कुरीतिक विरोध नहि करैत; दुनू एक प्रकारक सामूहिक अज्ञान आ असमान सत्ता-वितरणक परिणाम देखबैत अछि।

एहि शक्तिक संग सीमा स्पष्ट अछि: शिक्षाक घोषणाक बीच स्त्रीक स्वायत्त स्वर सीमित, दहेजक निरसनक बदला लेन-देनक उलटफेर प्रमुख, आ रोगक उपचार विवाहद्वारा घटित मानबाक वृत्ति वैज्ञानिक चेतनासँ विरोधी अछि। नाटकक अन्तिम नीतिवचनकेँ ओही कारण आलोचनात्मक प्रश्नसँ मुक्त नहि कएल जाए। बेचन ठाकुरक महत्त्व एहि कारण घटैत नहि, बल्कि अधिक ऐतिहासिक बनैत अछि—हुनकर रंगजगत हमर समाजक परिवर्तनक इच्छा आ ओकर अन्तर्विरोध, दुनूकेँ अभिलेखित करैत अछि।

बाल-साहित्यक इतिहासमे संग्रहक स्थान केवल विशुद्ध बाल-नाटकक रूपमे नहि, छात्र-सहभागिताबला मैथिली सामुदायिक रंगमंचक सन्दर्भमे अधिक युक्तिसंगत अछि। लेखकक कथनमे दर्ज छात्रा सभक मंच-योगदान आ विदेहक पूर्वप्रकाशन ई सम्बन्ध स्थापित करैत अछि। उपलब्ध अभिलेखमे एहि दावाक सीमा यथावत् राखैत, भविष्यक रंग-इतिहासक लेल मूल पटकथा, मंचीय संस्करण, कलाकार-साक्षात्कार, प्रस्तुति-तिथि आ दर्शक-स्मृतिक संकलन सर्वाधिक उपयोगी अगिला काज होयत।

०३ / ०६

बाप भेल पित्ती आ अधिकार

पीढ़क पितृत्वसँ नागरिक अधिकार धरि

कृतिद्वयक परिचय

बेचन ठाकुरक ‘बाप भेल पित्ती आ अधिकार’ श्रुति प्रकाशन, दिल्लीसँ २०१२ मे प्रकाशित युग्म-नाट्यकृति अछि। पहिल नाटक तीन अङ्कमे बालकक पारिवारिक सङ्घर्ष विकसित करैत अछि; दोसर नाटक नागरिक अधिकार, आवास-सहायता आ भ्रष्टाचार-विरोधक प्रश्न उठबैत अछि।

नाट्यदृष्टि: दुनू नाटकक साझा सूत्र

दुनू कृतिक नायक सत्ता आ संसाधनक केन्द्रसँ बाहर छथि। पहिल नाटकमे मनोज आ संतोष घरक भीतर अधिकारहीन बालक बनैत छथि; दोसरमे मंजूर ग्राम-प्रशासनक आगाँ असहाय निर्धन नागरिक छथि। पहिलमे अपमानक भाषा घरेसँ आरम्भ होइत अछि आ विद्यालयक द्वार बन्द करैत अछि; दोसरमे अपमानक भाषा कुरसी आ भुइँक दूरीसँ आरम्भ होइत अछि आ राज्यक दुआर धरि पसरि जाइत अछि। एहि समरूपतासँ पोथीक युग्म-प्रकाशन एकटा अर्थपूर्ण आलोचनात्मक इकाई बनैत अछि।

तथापि संरचनात्मक भिन्नता सेहो मूलभूत अछि। पहिल नाटक त्रिअङ्की विस्तार, घरेलू प्रतिपक्ष, गीत, दुर्घटना, सफलता आ पुनर्मिलनक भावुक-नैतिक यात्रापर चलैत अछि। दोसर नाटक पनरह दृश्यक अनुक्रममे आवेदनसँ कार्यालय आ कार्यालयसँ सार्वजनिक पहचान धरि एक नागरिक अभियान रचैत अछि। ई भेद सामाजिक यथार्थक दू उपागम—करुणा द्वारा मन-परिवर्तन आ अधिकार द्वारा संस्था-परिवर्तन—कै स्पष्ट करैत अछि।

‘बाप भेल पित्ती’: कथा, पात्र आ तीन अङ्कक रचना

पिताक असफलताकें नाटकक शीर्षकमे केन्द्रित करब आलोचनात्मक रूपेँ महत्त्वपूर्ण अछि। लखनक पहिल पत्नी दिवङ्गत छथि; पुत्र मनोज आ संतोष एखनो बालक छथि। दोसर विवाहक निर्णयक पछाति नव पत्नी मीनाक अपन सन्तानकें विशेषाधिकार भेटैत अछि, जखन कि पहिल विवाहक पुत्र शिक्षा आ भोजनक न्यायोचित हिस्सा लेल सङ्घर्ष करैत छथि। शीर्षकक प्रश्न मात्र ‘सौतेली माएक निर्दयता’ नहि; पिताक नैतिक निष्क्रियता सेहो अछि।

प्रतिकथाक रूपमे रामलालक घर उभरैत अछि, जतए दू पत्नी, बच्चासभ आ परस्पर सहयोगक सहअस्तित्व आरम्भमे देखाओल गेल अछि। ई समानान्तर घर लेखक लेल यथार्थक सम्पूर्ण सर्वेक्षण नहि, बल्कि नाटकीय तुलनात्मक प्रतिमान अछि: एक ठाम संसाधन विभाजित अछि, दोसर ठाम सामूहिक देखभालक आदर्श। परस्पर तुलना आकर्षक अछि, मुदा एकरा आदर्श परिवारक सर्वमान्य समाजशास्त्रीय चित्र नहि बुझबाक चाही।

पहिल अङ्क: विवाहक निर्णयसँ विभेदक आरम्भ धरि

दृश्य १: लखन अपन दू पुत्रक पालन-पोषणक चिन्तासँ दोसर विवाहपर विचार करैत छथि। बौहूक चेतावनीमे सौतेल सम्बन्धक जोखिम उपस्थित अछि। भावी दुर्घटनाक बीज एतहि पड़ैत अछि, कारण वयस्कक निर्णयमे बालकक स्पष्ट सहमति वा इच्छा प्रश्न बनि नहि पबैत अछि।

दृश्य २: मदनक घर विवाह-सन्धिक विनिमयक थल बनैत अछि। कुटुमैती, मध्यस्थक आश्वासन आ शीघ्र विवाहक आग्रह सँ नाटक परम्परागत विवाह-व्यवहारक गति पकड़ैत अछि। स्त्रीक प्रश्न गौण रहि जाइत अछि; एतए विवाह कथानकक यन्त्र अछि, स्त्रीक आत्मवृत्तान्त नहि।

दृश्य ३: शिवमन्दिरक विवाहमे मनोज-संतोषक प्रश्न, नाच-गानक अपेक्षा आ पण्डितक दक्षिणा-केन्द्रित व्यवहार हास्य उपजबैत अछि। बच्चासभक हास्य वयस्कक रीतिकें सवालक कटघरामे अनैत अछि; दक्षिणाक प्रसंग धार्मिक कर्मकाण्डक अर्थव्यवस्थापर व्यङ्ग्य रचैत अछि।

दृश्य ४: रामलाल, लक्ष्मी आ सन्तोषीक घरक परिचय शिक्षा-प्रेमी समवेत परिवारक दृश्य रचैत अछि। विद्यालयक फीस देबाक सहज प्रक्रिया आगाँ लखनक परिवारमे शिक्षा-वञ्चनाक प्रतिलोम तैयार करैत अछि।

दृश्य ५: मुखिया रमाकान्त आ वाई सदस्य बलदेव आवास-सहायताक बात लऽ कऽ अबैत छथि। धनक लेन-देनक प्रसङ्ग राज्यक ग्रामीण उपस्थितिक आरम्भिक छवि अछि; एतहि आन नाटक ‘अधिकार’क आवास-योजनावला प्रश्नक अप्रत्यक्ष पूर्वाभास देखल जा सकैत अछि। ई अन्तर्पाठीय व्याख्या थिक, घोषित लेखक-योजना नहि।

दृश्य ६: मीना अपन पुत्र-पुत्रीक संग खेलक प्रसङ्गमे सौतेल पुत्र सभसँ भिन्न व्यवहार करैत छथि। कृष्णाक प्रश्न—एक्के पिताक सन्तानमे भेद किएक—बाल-न्यायबोधक महत्त्वपूर्ण क्षण अछि। एहि बिन्दुपर बालक स्वयं नैतिक मूल्याङ्कन करैत अछि।

दोसर अङ्क: बाल-अधिकारक निषेध आ असाधारण प्रतिरोध

दृश्य १: रामलालक घरमे अस्वस्थ सोनी आ सन्तोषीक बीच भोजनक प्रसङ्गसँ विवाद उठैत अछि। लक्ष्मी हस्तक्षेप करैत छथि आ रामलाल सामञ्जस्य स्थापित करबैत छथि। नाटककार सहपरिवारक संकटकेँ शीघ्र समाधानमे बदलि दैत छथि; ई आदर्शिकरण तुलना करबाक सुविधा दैत अछि, मुदा मनोवैज्ञानिक जटिलता घटबैत अछि।

दृश्य २: मनोज आ सन्तोष अपन नाम विद्यालयमे लिखेबाक माँग करैत छथि। आर्थिक असमर्थता कहि लखन पाछाँ हटि जाइत छथि, जखन कि मीना अपन सन्तानक पढ़ाइक व्यवस्था करैत छथि। अन्ततः बच्चासभकेँ मारि भगाओल जाइत अछि। ई नाटकक नैतिक केन्द्रीय दृश्य अछि—एक्के घरमे शिक्षाक दू मापदण्ड।

दृश्य ३: घर छोड़ल मनोज-सन्तोषकेँ राधाक भोजन आ सहानुभूति भेटैत अछि। राधा बालकक पुनरुत्थानक पहिल सामाजिक आश्रय बनैत छथि; ओ हुनका पढ़ाइ नहि छोड़बाक प्रेरणा दैत छथि। नाटक घरक बाहर मानवीय सम्बन्धक विकल्प रचैत अछि।

दृश्य ४: दुनू भाय लोकगीत आ थारी-लोटाक तालपर भीख माँगबाक योजना करैत छथि। अपमानक निज अनुभव सार्वजनिक गीत बनि जाइत अछि; भेटल पैसा निजी विलासपर नहि, पढ़ाइपर खर्च करबाक निर्णय राजनीतिक अर्थमे आत्म-अनुशासनक उद्घोष अछि।

“पहिने पढ़ैक जोगार कर बौआ।” — मनोज;

दृश्य ५: मनोज-सन्तोषक अनुपस्थितिमे मीना आ लखनक सम्बन्धक असमान शक्ति स्पष्ट होइत अछि। मीना अपन पुत्र-पुत्रीक विद्यालयीय उपलब्धि पर गर्व करैत छथि, मुदा परिणाम अनुकूल नहि पड़ैत अछि। कथानक दर्शबैत अछि जे धन आ पक्षपात शैक्षिक सफलता सुनिश्चित नहि करैत।

दृश्य ६: रेलवे स्टेशनक दृश्य समयक छलाँग दैत अछि। विद्यालयीय भ्रमणक बस-दुर्घटनामे मनोजक एक हाथ कटि जाइत अछि आ सन्तोष दृष्टि गमा बैसैत छथि। सन्तोषक गीतमे घरक त्याग, शिक्षाक संघर्ष आ दिव्याङ्गता जोड़ल गेल अछि। दुर्घटनासँ उत्पन्न दुःख कथाकेँ करुणरसक गाढ़ रूप दैत अछि, मुदा यथार्थवादी कारण-परिणामक प्रस्तुति एतए तीव्र संक्षिप्त अछि।

“आन्हर भऽ नै पढ़ि सकलौँ” — सन्तोषक गीतक अंश;

तेसर अङ्क: असफल अहङ्कार, सफलता आ पुनर्मिलन

दृश्य १: लखन घरेलू श्रम करैत छथि, मीना अपन दू सन्तानक परीक्षाफलसँ उच्च आशा रखैत छथि। रामपरी आ कृष्णाक अनुत्तीर्ण भेला पर मीना हुनका पढ़ाइ रोकबाक निर्णय करैत छथि। शिक्षा एतए अधिकार नहि, केवल प्रतिस्पर्धात्मक सफलताक शर्त बनि जाइत अछि।

दृश्य २: रामलालक परिवारमे बच्चासभक परीक्षाफलक सुखद प्रतिक्रिया शिक्षाक सामूहिक आनन्दक रूपमे प्रस्तुत अछि। ई दृश्य लखनक घरमे दण्डात्मक परिणाम-प्रतिक्रियाक तीक्ष्ण प्रतिलोम बनैत अछि।

दृश्य ३: रेलवे स्टेशनपर सन्तोषक लोकगायन चलैत अछि; मनोज प्रशासनिक सेवाक सफलताक समाचार लऽ कऽ लौटैत छथि। अपन उपलब्धिक श्रेय छोट भाय आ सहायक जनसमुदायकेँ देनाइ कथा-संरचनामे नैतिक प्रतिदानक क्षण अछि।

“हम आजीवन हिनकर आभारी रहबनि।” — मनोज;

दृश्य ४: कलक्टरक आवासपर दीन-हीन रामलालक उपस्थिति आ सन्तोषक संग भेट प्रशासनिक प्रतिष्ठा आ गरीबक सामाजिक आवश्यकताकेँ एकठाम अनैत अछि। मंचपर पहचानक अन्तर, परिचय-पत्र आ सेवा-संबन्ध मानवीय सम्बन्धक नव समीकरण बनबैत अछि।

दृश्य ५: मनोज आ सन्तोष विवाह-प्रस्ताव पर विचार करैत छथि। उच्च पदस्थ स्त्री आ अपेक्षाकृत कम औपचारिक योग्यता वला स्त्रीक बीच मूल्याङ्कनमे पात्रसभ प्रतिष्ठा, गृहस्थ-सम्बन्ध आ पारिवारिक समीपता पर तर्क करैत छथि। ई संवादक मूल्यांकन लैङ्गिक भूमिकासँ मुक्त नहि अछि।

दृश्य ६: काली मन्दिरमे मनोज-सोनीक विवाह पारिवारिक कथासूत्र जोड़ैत अछि। पहिल अङ्कक विवाह आ एहि विवाहक तुलना करलापर सामाजिक विश्वास आ परस्पर सम्मानक आदर्श अग्रसर देखाइत अछि, मुदा विवाह-प्रसङ्गक समाधान अत्यन्त शीघ्र अछि।

दृश्य ७: मीनाक रोग आ लखनक असहायता घरेलू प्रभुत्वक पट बदलि दैत अछि। जे सन्तानक आवाज दबाएल गेल छल, तिनकर अनुपस्थिति फेर परिवारक विकलतामे स्मरण होइत अछि। रोगक प्रस्तुति दण्डक नैतिक प्रतिमान बनबाक जोखिम उठबैत अछि।

दृश्य ८: कलक्टरक आवासक हँसी-मजाक, वीरभद्रक उपस्थितिसँ प्रशासनिक जीवनक हलुक लय अबैत अछि। गाम वापसीक बात उठलासँ कथानक भावी पुनर्मिलनक दिशामे बढ़ैत अछि; तथापि किछु हास्य कृति केर प्रमुख बाल-अधिकार प्रश्नसँ ध्यान हटबैत अछि।

दृश्य ९: लखनक घरमे मीनाक गम्भीर अस्वस्थताक समय मनोज-सन्तोष पहुँचैत छथि। पुरान अपमानक स्मृति बनल रहितहुँ ओ लोकनि उपचार लेल आग्रह करैत छथि। ई दृश्य बदला आ देखभालक बीच नैतिक चयन रचैत अछि।

दृश्य १०: अस्पतालमे चिकित्सकीय सहायता, रक्त-मिलान, ऑपरेशन आ सम्बन्धक पहचान कथानकक समापन करैत अछि। मनोज उपचारमे सहयोग दैत छथि आ मीनाक पश्चात्ताप उद्घाटित होइत अछि। क्षमादानक भावुक सुखान्त सामाजिक संदेश दैत अछि, मुदा बालकसभपर भेल हिंसाक संरचनात्मक प्रतिपूर्तिक प्रश्न अनुत्तरित रहि जाइत अछि।

पहिल नाटकक केन्द्रीय आलोचनात्मक प्रश्न

पितृत्वक निष्क्रियता। नाटकक सतहपर मीना स्पष्ट प्रतिनायक जकाँ छथि; मुदा लखनक कृत्यक पुनर्पाठ जरूरी अछि। ओ पुत्रसभक विद्यालय-प्रवेश लेल निर्णायक हस्तक्षेप नहि करैत छथि, घरसँ निकालल गेलापर खोजखबरो समुचित रूपेँ नहि रखैत छथि, आ परिवारक दोसर सत्ताक आगाँ झुकैत छथि। तँ नाटकक वास्तविक आरोप केवल स्त्रीपर नहि, नैतिक उत्तरदायित्वसँ पलायन करनिहार पितृत्वपर अछि। ई अर्थ शीर्षकसँ पुष्ट होइत अछि।

बालकक कर्तृत्व। मनोज आ सन्तोष करुणाक निष्क्रिय पात्र नहि छथि। अपन घरसँ बहिष्कृत भेला पर ओ गीत रचैत छथि, लोकसँ मदद माँगैत छथि, पैसाक उपयोगपर विमर्श करैत छथि आ शिक्षाकेँ पहिल प्राथमिकता बनबैत छथि। एहि कारण कृति बाल-अनुभवक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज बनैत अछि। मुदा प्रश्न उठैत अछि जे बालककेँ पढ़बाक लेल भीख माँगबाक परिस्थितिमे छोड़ि देबाक कथा, जँ प्रेरक सुखान्त मात्र बनि रहए, तँ सामाजिक सुरक्षा-व्यवस्थाक विफलताकेँ आच्छादित करि सकैत अछि।

दिव्याङ्गताक आलोचना। बस-दुर्घटनाक बाद मनोजक हाथ कटब आ सन्तोषक दृष्टिहीन होएब नाटकमे दुःखक आकस्मिक घनत्व बढ़बैत अछि। सन्तोषक गीत सामाजिक सहानुभूति जुटबैत अछि,

आ भाईक शिक्षाक निरन्तरता सुनिश्चित करब ओकर सकारात्मक कर्तृत्व अछि। मुदा दृष्टिहीन सन्तोषक अपन शिक्षाक अवकाश शीघ्र छोड़ि देबाक प्रसङ्गक आलोचना आवश्यक अछि। मंचीय अनुकूलनमे ओकर स्वतन्त्र शिक्षण-संभावना आ पहुँच-व्यवस्थाक प्रश्न जोड़ल जाए सकैत अछि। दिव्याङ्गता केँ केवल दयाक पात्र बनाओल नहि जाए—ई पाठक आधुनिक पुनर्वाचनक एक जरूरी कसौटी अछि।

स्त्री-चरित्रक असन्तुलन। मीनाकेँ प्रायः एकरेखीय क्रूरता, लक्ष्मी-सन्तोषीकेँ सामञ्जस्य, राधाकेँ सेवा आ सोनीकेँ स्नेहक ध्रुव बनाओल गेल अछि। एहि विभाजनसँ मंचीय विरोध तीक्ष्ण होइत अछि, मुदा महिला पात्रसभक सामाजिक दबाव, मानसिक विकल्प आ आर्थिक स्वायत्तताक विस्तार कम भेटैत अछि। अतः सौतेल सम्बन्धक सभ कठिनाईकेँ स्त्रीक स्वभावक दोष मानबाक बदला पारिवारिक सत्ताक संरचनामे देखनाइ अधिक सम्यक् हएत।

माध्यमक प्रश्न। अङ्क तीनमे आरम्भिक विद्यालय-दृश्यसँ प्रशासनिक सेवाक सफलता धरि कथाक छलाँग व्यापक अछि। समय-परिवर्तनक सङ्केत अपेक्षाकृत कम भेटैत अछि; ओतए गीत, पुनरावृत्ति आ प्रतीकात्मक पात्र-प्रवेश घटनाक बीच पुलक काज करैत अछि। नाटकक शिल्प एतए यथार्थक सावधान क्रमिकता नहि, लोकनाट्यक त्वरित न्याय-बोध चुनैत अछि।

‘अधिकार’: पनरह दृश्यक नागरिक-नाट्य

‘अधिकार’क नायक मंजूर बाढ़िसँ क्षतिग्रस्त आश्रय, अल्प आय आ ग्रामीण सत्ताक भ्रष्ट व्यवहारसँ पीड़ित रिक्शाचालक छथि। मुखिया चन्दन आ हुनक निकटस्थ अमरनाथ आवास-सहायता लेल घूस माँगैत छथि; विनोद नामक सहयोगी मंजूरकेँ आवेदन-प्रक्रियामे सहायता करैत छथि। मंजूर ब्लॉक, अनुमण्डल, जिला, नेता आ सूचना-आयुक्त धरि जाएब स्वीकार करैत छथि। अन्तिम चरणमे अखबारी चर्चा, सम्मान समारोह आ मुखियाक पश्चात्तापसँ कथा पूर्ण होइत अछि।

‘अधिकार’क शीर्षक निजी लाभक आग्रहसँ पैघ अछि। मंजूरक अनुभव ई प्रश्न उठबैत अछि जे लिखित योजना आ व्यवहारिक पहुँचक बीच जे दूरी अछि, ओकरा कम के करत। एहि नाटकमे अधिकार केवल कानूनी पद नहि, नागरिकक बोलबाक साहस, प्रमाण माँगबाक क्षमता आ अपमान अस्वीकार करबाक सामर्थ्यक नाम अछि। तथापि नाटकक आवेदनसभमे उल्लिखित अति-संक्षिप्त जवाब-अवधि आ संस्था-प्रक्रियाकेँ विधिक रूपसँ प्रमाणित नियम नहि, नाटकीय प्रतिपादन बुझबाक चाही।

दृश्यवार पाठ-परीक्षण

दृश्य १: मुखिया चन्दनक दलानमे मंजूर जमीनपर बैसैत छथि आ कुर्सीकेँ उच्च पदक प्रतीक मानैत छथि। बीस हजार टाकाक आवास-सहायतामे पाँच हजार घूसक माँग सत्ताक अन्याय उजागर करैत अछि। कुर्सी आ भुइँक दूरी एहि नाटकक पहिल प्रभावकारी दृश्य-रूपक अछि।

दृश्य २: विनोदक संग संवादमे मंजूर पहिल बेर व्यावहारिक कानूनी उपायक दिशा पबैत छथि। ओ पढ़ल-लिखल नहि छथि, ताहू पर अपने पक्षक नैतिक वैधता बुझैत छथि। विनोद लिखित आवेदन द्वारा साक्षरता आ अधिकारक बीच सेतु बनैत छथि।

दृश्य ३: मुखिया समक्ष पहिल लिखित निवेदनमे आवासक आवश्यकता आ सूचनाक माँग एकसाथ उपस्थित अछि। चन्दनक उपहास संस्थागत निरङ्कुशताक मंचीय प्रदर्शन अछि। मंजूरक विरोध आब विनतीसँ लिखित प्रतिवादमे बदलि जाइत अछि।

दृश्य ४: विनोद बी.डी.ओ., एस.डी.ओ. आ डी.एम. लेल आवेदन बनबैत छथि। प्रशासनिक शृङ्खला नाटकमे एक प्रकारक सीढ़ी बनैत अछि—प्रत्येक नव दुआर आशा आ भय दुनू बढ़बैत अछि।

दृश्य ५: खण्ड विकास कार्यालयमे निवेदन उपेक्षित होइत अछि; आवेदन कूडामे फेकि देबाक क्रिया कागजी अधिकारक अवमाननाक सटीक दृश्य-बिम्ब अछि। एहि दृश्यसँ नाटकक संघर्ष सरकारी भाषा बनाम जीवित भूखक संघर्ष बनैत अछि।

दृश्य ६: अनुमण्डल कार्यालयक चक्कर न्याय लेल लगातार श्रमक लागत स्पष्ट करैत अछि। पहिने सँ निर्धन नागरिककेँ रोजी छोड़ि कार्यालय पहुँचनाइ स्वयं एकटा दण्ड थिक; एहि दृश्ये प्रशासनिक यात्राक आर्थिक पक्षक संकेत भेटैत अछि।

दृश्य ७: समाहरणालयमे कलक्टर चन्द्रकान्तक समक्ष मंजूरक निवेदन सेहो अपेक्षित फल नहि दैत अछि। निम्न कर्मचारीक व्यवहार आ ऊपरक उपेक्षा मिलि संस्थागत असंवेदनशीलता देखबैत अछि; एक कार्यालयक गलती नहि, क्रमिक व्यवस्था कृतिक आलोच्य बनैत अछि।

दृश्य ८: पन्द्रह दिनक थकानक बाद विनोद पहिने हार मानबाक सलाह दैत छथि, मुदा मंजूर आगू बढ़बाक इच्छा रखैत छथि। एतए नायकक धैर्य सहायक पात्रक यथार्थबोधसँ टकराइत अछि।

दृश्य ९: श्यामानन्दसँ भेंट होइत अछि आ सूचना-आयुक्त लेल निवेदनक बाट खुलैत अछि। न्याय-प्राप्तिमे लोकमध्यस्थक भूमिका देखाओल गेल अछि; मुदा एहन ‘भला नेता’क आकस्मिक हस्तक्षेपपर निर्भरता संस्थागत आलोचनाकेँ आंशिक रूपेँ व्यक्तिगत सद्भावपर टिका दैत अछि।

दृश्य १०: मंजूरक घरक अभाव, पत्नी नजीमाक चिन्ता, बटखर्चाक कमी आ एक मुठी मुरही नागरिक आन्दोलनक वास्तविक आर्थिक धरातल बनबैत अछि। ई नाटकक सभसँ मार्मिक दृश्यसभमे एक अछि, कारण प्रशासनिक प्रक्रिया घरेक भुखसँ जोड़ल गेल अछि।

दृश्य ११: सूचना-आयुक्तक कार्यालयमे मंजूरक प्रयत्नकेँ प्रशंसा भेटैत अछि। पत्रकारसभ हुनकर कथा सार्वजनिक करैत छथि। एहि दृश्यसँ निजी शिकायत सार्वजनिक नागरिक उदाहरणमे रूपान्तरित होइत अछि, यद्यपि निर्णायक आधिकारिक आदेशक विवरण कथामे विस्तारसँ नहि देल गेल अछि।

दृश्य १२: समाचार-माध्यमक प्रतिनिधि अखिलेशक ध्यान मंजूरक दिस आकर्षित होइत अछि। मीडिया एकरा असाधारण नागरिकक कथा बनबैत अछि; नाटकमे प्रचारक शक्ति प्रेरक अछि, मुदा सुर्खीक सफलता आ वास्तविक संस्थागत सुधारक दूरी पर विचार जरूरी अछि।

दृश्य १३: मंजूरक परिवारक दिल्ली-यात्राक तैयारीमे बच्चासभक चञ्चल प्रश्न आ घरेलू विनोद अछि। नाजीमा, सलमा आदिक बातचीत नागरिक उपलब्धिक सामूहिक आनन्द देखबैत अछि, मुदा स्त्रीक स्वतन्त्र अधिकार-बोध एतए सीमित रहैत अछि।

दृश्य १४: दिल्लीक समारोहमे मंजूरकेँ पुरस्कार देल जाइत अछि। हुनक भाषणमे भ्रष्टाचारक जन्म आ पालन-पोषणमे सार्वजनिक सहभागिताक प्रश्न राखल गेल अछि। ई नाटकक वैचारिक उत्कर्ष अछि; मुदा प्रशस्ति-संवाद दीर्घ भऽ कऽ नाटकीय टकराव घटबैत अछि।

दृश्य १५: मुखिया बीस हजारक सहायता आ अपन दिससँ पाँच हजार देबाक प्रस्ताव लऽ कऽ अबैत छथि। मंजूर पहिने अवैध धन अस्वीकार करैत छथि, तकर बाद क्षमा लेल सार्वजनिक सद्व्यवहारक शर्त रखैत छथि। अन्तिम विनोद-वक्तव्य शिक्षा आ भ्रष्टाचार-निरोधकेँ जोड़ैत अछि।

“हमरा हरामक पाइ नै चाही” — मंजूर;

“जय हिन्द ! जय भारत !! जय शिक्षा !!!” — अन्तिम उच्चार;

‘अधिकार’क शिल्प आ नायकत्व

लोकतान्त्रिक नायकक निर्माण। मंजूरक विशेषता उच्च शिक्षा, आर्थिक शक्ति वा वंशगत प्रतिष्ठामे नहि, अपन न्यायसंगत माँग छोड़ि नहि देबाक संकल्पमे अछि। पहिल दृश्य सँ अन्तिम दृश्य धरि हुनकर भाषिक संकोच घटैत अछि। ओ प्रारम्भमे कुर्सीपर बैसबाक अधिकारी अपनेकेँ नहि मानैत छथि; अन्तमे समाजसँ वचन लैत छथि जे सभक संग नीक व्यवहार होअए। ई आत्म-सम्मानक धीमा अर्जन नाटकक सबसँ विश्वसनीय अन्तःक्रम अछि।

अभिलेख, आवेदन आ मंचीय वस्तु। एहि नाटकमे कागज, फाइल, दरखास, कुरसी, सिक्कोरिटी-दुआर आ समारोहक मालासभ केवल सजावट नहि, सत्ताक मूर्त संकेत अछि। चन्दनक कुर्सी आ मंजूरक जमीन पर बैसब, अधिकारीक फाइल आ कूड़ामे आवेदन फेकब, अन्तमे नागरिककेँ माला पहिराएब—ई क्रम वस्तु-चिह्नद्वारा अर्थक परिवर्तन करैत अछि। सीमित साधनवला रंगमंचक लेल ई शिल्प उपयोगी अछि।

मध्यस्थक नैतिकता। विनोद बिना मंजूरक सङ्घर्ष एतेक आगू नहि बढ़ैत। ई सहयोग अशिक्षित जनक नागरिक अधिकारपर प्रश्न उठबैत अछि: अधिकार संविधानसम्मत होएबाक अतिरिक्त आवेदन लिखि सकबाक व्यावहारिक क्षमता सेहो माँगैत अछि। मुदा विनोदक सहायता नायकक स्वतन्त्रताकेँ शून्य नहि करैत—अन्तिम निर्णय, यात्रा आ कष्ट मंजूर स्वयं सहैत छथि।

धर्म-सामाजिक बहुस्वरता। मंजूर, नजीमा आ हुनकर बालकसभक घरेलू दृश्यक संग विनोद, श्यामानन्द आ आन अधिकारीक सह-अस्तित्व नाटककेँ साझा नागरिक प्रश्नक भूमिमे अनैत अछि। पात्रक नामसँ सांस्कृतिक वैविध्य उपस्थित अवश्य अछि, मुदा कृतिक मूल द्वन्द्व सम्प्रदाय-आधारित नहि, आर्थिक-वर्गीय आ प्रशासनिक अछि। एहि विश्लेषणमे पाठसँ आगाँ जाति अथवा समुदाय सम्बन्धी असत्यापित अनुमान नहि कएल गेल अछि।

सुखान्तक सीमा। अधिकारीसभक प्रारम्भिक विफलताक उपरान्त पत्रकारिता, पुरस्कार आ मुखियाक त्वरित पश्चात्ताप सबटा समस्या सुलझाओल-सन करैत अछि। ई लोकनाट्यक नैतिक विजयक ढाँचा अछि। तथापि तकर मूल्य पर किछु प्रश्न आवश्यक अछि: आवेदनक अभिलेखीय स्थिति की भेल, घूसक शिकायतपर कोन प्रक्रिया चलल, आन पात्रसभक अनुभव बदलल कि नहि? नाटक एहि संस्थागत उत्तरसभपर अपेक्षाकृत मौन अछि।

संवाद, करुणा आ प्रतिरोध

दुनू नाटकक चयनित संवादमे परिवारक करुणा आ नागरिक प्रतिरोधक अलग-अलग भङ्गिमा भेटैत अछि। कथ्यक निर्णायक क्षणपर पात्रक वाणी नाटकीय अर्थकेँ तीव्र करैत अछि।

‘पहिने पढ़ैक जोगार कर बौआ’ कथन पैसाक उपयोगमे बालनायकक प्राथमिकता बतबैत अछि। ‘आन्हर भऽ नै पढ़ि सकलौं’ आत्मवृत्तान्त शिक्षाक इच्छासँ विच्छेदक पीड़ा बनैत अछि। दुनूकेँ संग पढ़लापर शिक्षा कतेक आवश्यक अछि आ पहुँचक साधन नष्ट भेला पर इच्छा अपने कतेक अपूर्ण रहि

जाइत अछि, से स्पष्ट होइत अछि। मनोज द्वारा सफलता केर श्रेय सन्तोषकेँ देब सामाजिक प्रतिदानक नैतिक धुरी अछि।

‘अधिकार’मे ‘हमरा हरामक पाइ नै चाही’ राज्य-सहायताक उद्देश्य आ अनुचित व्यक्तिगत लाभक बीच नायकक भेद बतबैत अछि। ‘जय हिन्द ! जय भारत !! जय शिक्षा !!!’ नागरिक अधिकारक विमर्शकेँ अन्ततः शिक्षा-केन्द्रित सामूहिक आदर्शमे परिणत करैत अछि। मुदा शिल्प-दृष्टिसँ अन्तिम घोषवाक्य संवादक बहुअर्थता घटा कऽ एकरेखीय उपदेश बनबाक सम्भावना सेहो राखैत अछि।

बाल-साहित्यक इतिहासक तुलनात्मक प्रसङ्ग

बालनाटकक कोटि निर्धारित करैत समय विषय मात्र नहि, लक्षित पाठक, भाषिक जटिलता, मंचनक समय, हिंसा-दृश्यक प्रस्तुति, बालपात्रक क्रियाशीलता आ बाल-दर्शकक भावनात्मक वहन-क्षमताकेँ देखबाक होइत अछि। ‘बाप भेल पित्ती’ मे बालक कथाक केन्द्र छथि; किछु प्रसङ्ग बालमञ्च पर अपनाएल जा सकैत अछि। मुदा सम्पूर्ण त्रिअङ्की नाटकमे वयस्क विवाह, पारिवारिक हिंसा, भिक्षाटन, गम्भीर दुर्घटना, चिकित्सा आ विवाह-सुखान्तक दीर्घ विस्तार अछि। तँ एकरा सीधा विशुद्ध बालनाटक घोषित करब विधागत दृष्टिसँ अशुद्ध होएत। ‘अधिकार’मे बालपात्र सहायक छथि; ओकर मूल केन्द्र अधिकार-अभियान आ प्रशासनिक व्यवहार अछि।

विदेहक उपलब्ध सन्दर्भ-संसार एहि भेदकेँ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि प्रदान करैत अछि। फूलचन्द्र झा ‘प्रवीण’क ‘मैथिली शिशु लोक साहित्य’ (विदेह, अङ्क ५०, २०१०) आ योगानन्द झाक ‘मैथिली बाललोककथा: स्थिति आ अपेक्षा’ (अङ्क ७६, २०११) बाल-लोकपरम्पराकेँ अध्ययनक विषय बनबैत अछि। दुर्गानन्द मण्डलक ‘नेना लेल सुन्दर चित्रकथा’ (अङ्क ११६, २०१२) बाल-पाठकक दृश्य-संसारक विमर्शक प्रमाण अछि। एहि लेखसभक विदेह-अभिलेखमे स्पष्ट प्रविष्टि उपलब्ध अछि; मुदा एतए अप्राप्त मूल लेखक विस्तृत तर्क हुनकर नामपर आरोपित नहि कएल गेल अछि।

२०१२ क ‘सगर राति दीप जरय’क विदेह प्रतिवेदनमे बेचन ठाकुरक एहि पोथीक लोकार्पण-सूचना भेटैत अछि। एही प्रतिवेदनमे ‘बाल मण्डली/किशोर जगत’, ‘विदेह शिशु उत्सव’ आ आन नाट्यकृतिक उल्लेख सेहो अछि। एहिसँ बाल/किशोर साहित्य आ वयस्क सामाजिक नाटकक समकालीन प्रकाशन-परिसरक साक्ष्य भेटैत अछि; मुदा एहि एकल प्रतिवेदनसँ समूचा मैथिली बाल-साहित्यक ‘पहिल’ वा ‘सबसे पैघ’ इतिहास निर्धारित नहि कएल जा सकैत।

रमेश रञ्जनक 'मैथिली बालनाटक सीमा विस्तार करैत — चौआरि' (विदेह, अङ्क १२६, १५ मार्च २०१३) जकाँ नामित आलोचनात्मक प्रविष्टि बालनाटककें पृथक अध्ययन-विषयक रूपमे दर्शबैत अछि। २०२६ मे गजेन्द्र ठाकुरक 'मैथिली बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्र' (विदेह, अङ्क ४४७) बाल-पाठकक कर्तृत्व, सामाजिक दृष्टि आ उपयुक्तताक प्रश्नकें विस्तार दैत अछि। एही अङ्कक 'नाट्य-नवग्रह' बाल आ प्रौढ़ नाटकक पारस्परिक अन्तर-विचारक एकटा उपयोगी तुलनात्मक आधार प्रदान करैत अछि। ई अध्ययनसभ २०१२ क नाटकसँ कालक्रममे पछाति प्रकाशित भेल अछि; तँ हुनकर अवधारणा इहाँ उत्तरकालीन समीक्षा-कसौटीक रूपमे लगाओल गेल अछि, नाटककारक तत्कालीन घोषित मंशाक रूपमे नहि।

बाल-अनुभव आ नागरिक-अनुभव: तुलनात्मक कसौटी

पहिल कसौटी बालकक बोलबाक अधिकार अछि। 'बाप भेल पिती'मे कृष्णा अपन मायसँ एक्के पिताक संतानक प्रति भेदभावक प्रश्न करैत अछि; मनोज-सन्तोष विद्यालयक नामाङ्कन माँगैत छथि आ पाठकीय सहानुभूतिसँ आगाँ अपन निर्णय लैत छथि। 'अधिकार'मे मंजूर प्रौढ़ छथि; तिनकर आवेदन सेहो अपमानित मनुष्यक आवाज पुनः हासिल करबाक कथा अछि। दुनू नाटक नागरिक शिक्षा लेल उपयोगी भऽ सकैत अछि, मुदा बालक आ प्रौढ़क अनुभूतिक अलग आकार बनल रहबाक चाही।

दोसर कसौटी गीत आ मंचीय सहभागिता अछि। पहिल नाटकक सार्वजनिक गायनक दृश्य बाल/किशोर रंगमञ्च लेल विशेष अनुकूल बनि सकैत अछि, कारण गीत कथन, लय, सामूहिक श्रोता आ न्याय-माँगकें एकठाम करैत अछि। दोसर नाटकमे दरखास पढ़ब, कार्यालय-द्वार पार करब आ सार्वजनिक सम्मान मुख्य मंचीय क्रिया अछि। एहि कारण लघु शैक्षिक रूपान्तर सम्भव अछि, मुदा पूर्ण नाटकक लक्ष्य-वर्ग स्वतः बदलि नहि जाइत।

तेसर कसौटी कष्टक प्रस्तुति अछि। बाल-दर्शक लेल घरसँ निकालब, हिंसा, दुर्घटना आ दिव्याङ्गताक प्रसङ्गकें संवेदनशीलता तथा आयु-अनुकूल दृश्य-योजनासँ खेलाएब आवश्यक अछि। कृतिक मौलिक यथार्थक पीड़ा घटाएब नहि, ओकर प्रदर्शनक मात्रा आ दृष्टिकोण सावधान करब अपेक्षित अछि। नाटककें नैतिक पाठक एकरेखीय माध्यम बनौनाइ बालकक अपन प्रश्न करबाक अधिकार घटा सकैत अछि।

रस, भाषा, रंग-विधान आ लोकसमाज

करुण आ प्रतिकार। ‘बाप भेल पिती’मे करुणरसक स्रोत बालकक भूख, तिरस्कार आ दुर्घटना अछि। बालकक गीत एहि करुणाकेँ सामूहिक करुणामे बदलैत अछि। तेसर अङ्कक सफलतासँ वीर-उत्साह आ शान्त-सुलहक भाव उपस्थित होइत अछि। ‘अधिकार’मे प्रारम्भिक दैन्यक संग प्रतिरोधक उत्साह बढ़ैत अछि; मंजूरक फाइल-दर-फाइल अभियान वीररसक लोक-नागरिक रूप रचैत अछि।

हास्य आ व्यङ्ग्य। विवाहक रीति, पण्डितक दक्षिणा, बालकक चञ्चल बोली, वीरभद्रक मिश्रित भाषा आ दिल्लीक यात्राक हास्य नाटकसभक गम्भीर कथ्यकेँ बीच-बीचमे विराम दैत अछि। तथापि किछु हास्य अत्यधिक लम्बा होइत अछि आ पात्रकेँ चुटकुलाक वाहन बनबैत अछि। शिल्पगत संयमसँ नाटकीय गति आ सामाजिक आलोचना दुनू तीक्ष्ण भऽ सकैत अछि।

बोलीक विविधता। ग्रामीण मैथिली मूल संवादक आधार अछि; प्रशासनिक शब्दावली, हिन्दी-प्रभावित पद, अंग्रेजी पदनाम आ संस्कृत-आश्रित मन्त्र ओकर भीतर आवाजाही करैत अछि। एहि मिश्रणकेँ सरलीकृत ‘शुद्ध-अशुद्ध’क दोहरी कसौटीपर नहि, पात्रक वर्ग, पेशा, स्थिति आ विडम्बनाक रूपमे पढ़बाक चाही। उद्धरणमे मूल वर्तनी सुरक्षित रखल गेल अछि, जखन कि आलोचनात्मक गद्य मानक मैथिलीमे प्रस्तुत अछि।

मंचीय व्यावहारिकता। घरक दलान, बाट, विद्यालय, स्टेशन, अस्पताल, कार्यालय आ समारोह कएटा दृश्यस्थल बनबैत अछि। कम बजटक मञ्चनमे स्थिर चौकी-कुर्सी, प्रकाश-परिवर्तन आ ध्वनि-सङ्केतसँ स्थल-परिवर्तन सम्भव होएत। मुदा पहिल नाटकक अस्पताल/दुर्घटना आ दोसरक दिल्लीक सार्वजनिक समारोह अतिरिक्त नाट्य-सम्पादन माँगैत अछि। नाट्य-पाठ आ सफल मञ्चनकेँ समान नहि मानबाक चाही।

द्वन्द्व, अन्तर्विरोध आ आलोचनात्मक सीमा

१. परिवारक आदर्शीकरण: रामलालक परिवार तुलनाक मूल्यवान उपकरण अछि, मुदा अत्यन्त सहज सुलहसँ गम्भीर गृहस्थ-विवादक वास्तविक गहराइ घटैत अछि। दोसर दिस मीनाक व्यक्तित्वमे लगभग निरन्तर नकारात्मकता विरोधी पात्रकेँ सपाट बनबैत अछि।

२. उपलब्धिक न्यायः मनोजक प्रशासनिक सफलता बाल-दुःखक ऐतिहासिक प्रतिकार जकाँ रचल गेल अछि। मुदा असंख्य वञ्चित बालक उच्च पदपर नहि पहुँचथि; तिनकर अधिकारो कम नहि होइत। शिक्षा-न्यायक नैतिकता उपलब्धि-आधारित पुरस्कारसँ अधिक व्यापक अछि।

३. दिव्याङ्ग जीवनः सन्तोषक अन्धत्वक पछाति ओकर अध्ययनक निरन्तरता प्रश्नांकित अछि। भाईक सेवा द्वारा आत्मसम्मान स्थापित करबाक प्रसङ्ग भावुक अछि, मुदा स्वतन्त्र संसाधन, शिक्षण आ सार्वजनिक पहुँचक प्रश्न आर विस्तार माँगैत अछि।

४. लैङ्गिक पूर्वधारणाः मीनाक एकल-नकारात्मक प्रस्तुति, स्त्रीक चरित्रनिर्माणमे विवाह/सेवाक केन्द्रीयता आ आदर्श पत्नी-छविक प्रधानता पर आलोचनात्मक ध्यान जरूरी अछि। महिला पात्रक वैकल्पिक दृष्टि जोड़लापर कथाक सामाजिक क्षमता बढ़त।

५. अधिकारक प्रक्रियागत प्रस्तुतिः ‘अधिकार’मे सूचना-अधिकारक प्रावधानक रूपरेखा नाटकीय सरलतासँ देल गेल अछि। तँ एकरा कानूनी आवेदनक प्रमाणित नमूना नहि, अधिकारचेतनाक सांस्कृतिक पाठ बुझबाक चाही। शोधक विषय कानूनक इतिहास बनत तँ पृथक आधिकारिक अभिलेखक जाँच आवश्यक हएत।

६. वैयक्तिक सम्मानक समाधानः मंजूरक संघर्षक पुरस्कार आ मुखियाक क्षमा-याचनाक सुखान्त नाटकीय आश्वासन दैत अछि, मुदा व्यवस्था-सुधारक मापदण्ड पर अपर्याप्त अछि। भ्रष्टाचारक स्थायी प्रतिरोध लेल सामूहिक निगरानी आ सार्वजनिक उत्तरदायित्वक चित्र आओर पैघ भऽ सकैत छल।

७. दीर्घ व्याख्यात्मक संवादः दोसर नाटकमे आवेदन-प्रपत्र आ अन्तिम भाषणक विस्तार कखनो-कखनो क्रियाशील नाट्यसँ अधिक घोषणात्मक वक्तव्य बनैत अछि। अभिनय-प्रधान प्रस्तुति लेल एहि अंशसभक छँटाइ होय तँ मूल तर्क बचा कऽ गति सुधरि सकैत अछि।

विदेहक समकालीन सन्दर्भ आ पाठकक स्थान

मूल पोथीक मे सम्पादक गजेन्द्र ठाकुर बेचन ठाकुरक नाट्य-कार्य, ग्रामीण रंगमञ्च आ मैथिली नाटकक आलोचना-परिसरक विषयमे विस्तृत टिप्पणी करैत छथि। ई टिप्पणी लेखकक नाटकक भीतरक संवाद नहि, पोथीक स्वतन्त्र सम्पादकीय परिपाठ अछि। एहिमे ‘अधिकार’क सामाजिक प्रसङ्ग तथा समकालीन रंगमञ्चक संस्थागत असमानता सम्बन्धी दाबी अछि; शोधमे ओकरा सम्पादकीय दृष्टिकोणक रूपमे पढ़बाक चाही।

विदेहक २०१२ क लोकार्पण-प्रतिवेदन पोथीक तत्कालीन परिसंचरणक बाह्य साक्ष्य दैत अछि। एहि आधारपर ई कहब संगत अछि जे पुस्तक मुद्रित प्रकाशनक संग सार्वजनिक साहित्यिक मंचपर सेहो उपस्थित छल। मुदा उपलब्ध प्रमाण मात्रसँ सभ प्रदर्शनक स्थान, संख्या, दर्शक-वर्ग वा प्रतिक्रिया निर्धारित करब सम्भव नहि; एहि विषयमे अलग मञ्चन-अभिलेखक आवश्यकता अछि।

निष्कर्ष

‘बाप भेल पिती आ अधिकार’क समग्र उपलब्धि ई अछि जे ई मैथिली रंग-भाषामे अधिकारहीन मनुष्यक दुःख आ प्रतिवादकें सार्वजनिक दृश्य बनबैत अछि। पहिल नाटकमे अनाथ-सन छोड़ल बालक घरक बाहर जनसमुदायक सहानुभूति पबैत अछि आ अध्ययनक स्वप्न बचबैत अछि; दोसर नाटकमे निर्धन रिक्शाचालक ग्रामसत्ता आ अधिकारीक उपेक्षाक बीच अपन नागरिक गरिमा सुरक्षित रखैत अछि। दुनू रचनाक अन्त सुखान्त अछि, मुदा ओकरा धरि पहुँचबाक बाट भूख, अपमान, श्रम आ संस्थागत असमानतासँ भरल अछि।

साहित्यिक मूल्यांकनमे सम्यक् निष्कर्ष दू स्तरपर अछि। कथ्यक स्तरपर बेचन ठाकुर बालशिक्षा, अभिभावकीय उत्तरदायित्व, सामाजिक सहयोग, भ्रष्टाचार-विरोध आ अधिकारचेतनाक समर्थ पक्षधर छथि। शिल्पक स्तरपर लोकबोली, संवाद-प्रधान विन्यास, गीत, दृश्य-वस्तुक प्रतीकात्मकता आ सार्वजनिक नायकक निर्माण हुनकर विशेषता अछि; तहिना चरित्रक एकरेखीयता, असाधारण संयोग, अत्यधिक उपदेश आ संस्थागत समस्याक शीघ्र व्यक्तिगत समाधान हुनकर सीमा अछि।

बाल-साहित्यक इतिहासमे पहिल नाटककें ‘बाल-अनुभव केन्द्रित सामाजिक नाट्य’क स्थान देब उचित अछि; विशुद्ध बालनाटकक कोटिमे राखबाक लेल लक्षित उमेर आ मंचीय रूपान्तरक अतिरिक्त प्रमाण चाही। दोसर नाटक बाल-अधिकारक प्रत्यक्ष पाठ नहि, मुदा किशोर/युवा नागरिक-शिक्षामे उपयोगी वैचारिक संसाधन बनि सकैत अछि। ई विधागत सूक्ष्मता राखलापर पोथी मैथिली सामाजिक रंगमञ्च आ बाल-न्यायचेतना दुनू क्षेत्रक बीच एकटा महत्वपूर्ण संवाद-सेतु सिद्ध होइत अछि।

०४ / ०६

ऊँच-नीच

जाति, शिक्षा आ सामाजिक समताक नाट्य-द्वन्द्व

उपक्रम: समीक्ष्य कृति, प्रश्न आ प्रतिपाद्य

‘ऊँच-नीच’क कथा केवल दू जातिक बीचक बाहरी टकराहट नहि थिक। ओकर भीतरी धुरी अछि—जन्मसँ भेटल सामाजिक दर्जा आ श्रम-शिक्षासँ अर्जित मानवीय योग्यता बीचक अन्तर। नाटक पूछैत अछि जे समाजमे प्रतिष्ठा निर्धारणक आधार वंश आ सम्पत्ति रहत, अथवा व्यवहार, श्रम आ ज्ञान? एहि प्रश्नक उत्तर लेखक पहिने गरीब दम्पतीक दैनन्दिन जीवन, फेर शिक्षा-संस्थान आ साहूकारीक सम्बन्ध, आ अन्तमे प्रेम-विवाह तथा सामुदायिक न्याय-व्यवस्थाक द्वारा खोजैत छथि। एहन रचना केँ केवल जातिवाद-विरोधी सन्देशपर सीमित केलासँ ओकर आर्थिक आ नाट्यगत जटिलता ओझराएत।

पाठक धुरी मङ्गल-मरनी-दुखनक परिवार अछि। हुनका सभक बाँसक काज, कोनी-पथिया बिनब, शुल्क जुटेबाक प्रयत्न, खेत-जमीन आ गहना गुमेबाक बाध्यता—ई सभ कथानकक ठोस भौतिक आधार बनबैत अछि। एकर समक्ष चन्द्रेश झाक सम्पन्न घर, बेटीकेँ चिकित्सक बनेबाक आकांक्षा, साहूकारीसँ लाभ, प्रतिष्ठाक उत्कण्ठा आ जातिगत अहङ्कार उपस्थित अछि। अन्तिम अङ्कमे दुनू घरक सन्तान वयस्क रूपमे भेटैत अछि आ परिवार-द्वयक पुरान सम्बन्ध नव नैतिक कसौटीपर परखल जाइत अछि।

बेचन ठाकुरक ‘ऊँच-नीच’ श्रुति प्रकाशन, दिल्लीसँ २०१३ मे प्रकाशित सामाजिक नाटक अछि। तीन अङ्कमे क्रमशः छओ, नओ आ सात दृश्य अछि।

कथानकक समग्र स्थापत्यः श्रमसँ शिक्षाक बाट आ शिक्षासँ अधिकारक बाट

पहिल अङ्कमे परिवारक भौतिक अभाव आ मरनीक विचारशील व्यवहार नाटकक समस्या निर्धारित करैत अछि। मङ्गल शराबक आदति, बाजारक दाम, बेटाक अध्ययन आ पारिवारिक अपेक्षाक बीच डोलैत अछि। मरनी ओकरा संयम, स्वास्थ्य आ पढ़ाइक दिशामे मोड़ए चाहैत छथि। दुखनक शुल्क-समस्या एहन क्षण बनैत अछि जतए रोजीरोटी आ भविष्य-दूनू आमने-सामने ठाढ़ होइत अछि। गरीब परिवारक हस्तशिल्पमूलक उत्पादक बिक्रीमे ग्राहक आ भूमिपतिक असमान सामर्थ्य भीषण भऽ उठैत अछि। एतऽ आर्थिक सम्बन्ध, सम्मानसूचक सम्बोधन आ असहाय विनती एक्कहि दृश्य-रचनामे जुड़ैत अछि।।

दोसर अङ्क शिक्षा-परियोजनाक दीर्घकालिक दाम स्पष्ट करैत अछि। सफल परिणाम उत्साह दैत अछि, मुदा अगिला कक्षा, महाविद्यालय, प्रशिक्षण आ अभियान्त्रिकी शिक्षाक खर्च परिवारकैँ कर्जाक चक्रमे घोंघियबैत अछि। समृद्ध घरक बेटी उच्च शिक्षाक लेल नगरक दिशामे बढ़ैत अछि, जखन कि दुखनक पढ़ाइ ले मरनीक गहना आ परिवारक डीहक प्रश्न उठैत अछि। एतऽ समान प्रतिभाक सामाजिक असमान प्रवेश-द्वार मुखर होइत अछि। पुरान घरेलू समयक समानान्तर नब शहर—महाविद्यालय—रोजगारक संसार कथानकमे प्रवेश करैत अछि।।

तेसर अङ्कमे शिक्षित सन्तान पुरान जातिगत अनुशासनपर प्रश्न उठबैत अछि। दुखन अभियन्ता अछि; सम्पन्न घरक बेटी चिकित्सकीय शिक्षा प्राप्त कऽ आत्मनिर्णयक आकांक्षा रखैत छथि। प्रेम, नियुक्तिमे पक्षपात, परिवारक मर्जी, सामाजिक अपमानक भय आ प्रत्यक्ष हिंसा—सभटा संघर्ष एकाग्र करैत अछि। अन्तमे सार्वजनिक पञ्चायत ओहि निजी प्रेमसम्बन्धकैँ समुदाय-सम्बन्धी निर्णयमे बदलैत अछि। ई सुखान्त आशा देइत अछि, मुदा आर्थिक क्षतिक प्रतिपूर्ति आ हिंसाक विधिसम्मत परिणामक प्रश्न शेष रखैत अछि।।

दृश्यवार पृथक पाठविश्लेषण

पहिल अङ्कः दृश्य १ — घर-आँगन, श्रम आ मायक तर्क

मङ्गल आ मरनीक कोनी-पथिया बिनबाक क्रममे शुरू भेल गपशप स्वास्थ्य, मद्यपान, परिवार-व्यय आ दुखनक शिक्षापर पहुँचैत अछि। मरनी औपचारिक पढ़ाइ नहियो भेटलापर सुनल सामाजिक उपदेशकैँ अपन जीवनानुभवसँ जोड़ैत छथि। ओ मङ्गलकैँ शराबक खर्च घटेबाक आ बेटाक पढ़ाइक

चिन्ता करबाक दिशा देखबैत छथि। ई दृश्य नाटकक नैतिक नायकत्व मायक तर्कशील श्रमपर स्थापित करैत अछि। तथापि मङ्गलक बेटा-प्राथमिकता लिङ्गगत पूर्वाग्रहक उपस्थितिक सेहो संकेत अछि। घरक भीतरक भाषा एतऽ सरल उपदेश नहि, संसाधन-वितरणक बहस बनैत अछि। (ठाकुर, २०१३)।

पहिल अङ्क: दृश्य २ — शुल्क, वस्तु आ असमान मोल-भाव

दुखनक आवेदन वा अध्ययन-सम्बद्ध शुल्क परिवारकें हठात् आर्थिक संकटमे धकेलैत अछि। उत्पादक श्रमक वस्तु—कोनी, पथिया—बेचबाक योजना बनैत अछि, मुदा ग्राहकक सामने मङ्गलक मोल-भावक सामर्थ्य कम पड़ैत अछि। एतऽ वस्तुक मूल्य केवल बाजारक मूल्य नहि, एक बालकक भविष्यक प्राणदाम बनि जाइत अछि। ग्राहकक सौदेबाजी आ परिवारक विनती बीचक विषमता पूँजीक सामाजिक शक्ति दिखबैत अछि। नाटक गरीबीकें आलस्यक फल नहि, अनिश्चित आय आ असमान लेनदेनक नतीजा रूपमे स्थापित करैत अछि। (ठाकुर, २०१३)।

पहिल अङ्क: दृश्य ३ — हवेली, अपमान आ प्रतिरोधक पहिल स्वर

मरनी उत्पाद बेचबाक आशासँ चन्द्रेश झाक हवेली पर पहुँचैत छथि। कम दाम, देरीक आरोप, बकायाक दबाव आ स्त्रीपर हाथ उठेबाक धमकी एकहि दृश्यमे जकाँ-जकाँ बढ़ैत अछि। सम्पन्न घरक युवती द्वारा हस्तक्षेप स्थिति बदलैत अछि। एतऽ उच्चवर्गीय घर स्वयं एकरूप नहि अछि—पिता शोषणक पक्षमे छथि, बेटी अन्यायकें देखैत छथि। नाटककार भविष्यक जातिविरोधी सम्भावनाक बीज एहि पीढ़ीगत अन्तरमे रोपैत छथि। सीमा ई जे निर्णयक अधिकार तुरन्ते भूमिपतिक घरमे केन्द्रित रहैत अछि; मरनीक श्रमक सम्मान ओकर स्वायत्त शक्ति सँ नहि, परिवारक भीतरक हस्तक्षेपसँ अस्थायी रूपमे भेटैत अछि। (ठाकुर, २०१३)।

पहिल अङ्क: दृश्य ४ — शराब, पुरुष-संगति आ मायक भार

मङ्गल सुगर तकबाक बहानासँ रबीयाक संग मद्यपानक दिशामे फुसलि पड़ैत अछि। मद्यपानक बाद बोली आ व्यवहारमे विकृति, आपसी मारपीट आ मरनीक आक्रोश पारिवारिक संकटकें दृश्यात्मक बनबैत अछि। दृश्य हास्य आ करुणाक मिश्रण अछि; नशाक भाषिक उच्छृङ्खलता दर्शककें हँसाबैत अछि, मुदा शुल्क-जुटानक कठिनाई ओकर सामाजिक मूल्य पुनः स्मरण करबैत अछि। मरनीक सशर्त क्षमा घरक नैतिक अनुशासन निर्माण करैत अछि। जँ मंचनमे एहि दृश्यकें केवल मदिरापानक तमाशा बनाओल जाए तँ परिवारक शिक्षा-संकट ओझरा सकैत अछि। (ठाकुर, २०१३)।

पहिल अङ्क: दृश्य ५ — सूदखोरीक सूक्ष्म नाटक

चन्द्रेशक घरमे लाभ-हानिक आत्मालापक बाद सीतारामसँ सूद-मूलक हिसाब उठैत अछि। बहुते छोट रकम, जोड़-घटाव आ धनी-ऋणीक असमान आसन दैनन्दिन शोषणक हावभाव प्रस्तुत करैत अछि। चन्द्रेशक धार्मिकता आ धनलोलुपता बीच व्यङ्ग्यात्मक अन्तर पाठमे घना बनैत अछि। सार्वजनिक आदर प्राप्त व्यक्तिक भीतर शोषक प्रवृत्तिक उद्घाटन एहि दृश्यक प्रभाव अछि। तथापि सीतारामक एजेसी सीमित अछि; लेखक आर्थिक नियन्त्रणक तन्त्र देखबैत छथि, मुदा वैकल्पिक सामूहिक प्रतिरोध विस्तृत नहि करैत छथि। (ठाकुर, २०१३)।

पहिल अङ्क: दृश्य ६ — परीक्षा आ ऋणक पूर्वपीठिका

दुखनक परीक्षा, अध्ययन-सामग्री आ आवश्यक खर्च फेर घरक बचतक प्रश्न खड़ा करैत अछि। मरनीक धैर्यपूर्वक बचत आ मङ्गलक बेचैनी एक-दोसरकेँ पूरक सेहो अछि आ टकरबैत सेहो। चन्द्रेशसँ लेनदेन आ अनुग्रहक अपेक्षा गरीबक निर्भरता देखबैत अछि। पहिल अङ्कक समापन पाठककेँ बुझबैत अछि जे केवल योग्य छात्रक मनोबलसँ सामाजिक गतिशीलता सम्भव नहि—संसाधनक निरन्तर व्यवस्था चाही। (ठाकुर, २०१३)।

दोसर अङ्क: दृश्य १ — चाह-दोकानक लोकपरिसर

झिङ्गुरक चाह-दोकान महँगाइ, अध्ययन, युवा भविष्य आ प्रतिस्पर्धाक खुलल सार्वजनिक मंच बनि जाइत अछि। विभिन्न युवाक गप-सपसँ नाटक निजी परिवारसँ निकलि ग्रामीण शिक्षित समाजक विस्तृत चित्र दिशामे बढैत अछि। चाहक दामक छोट प्रश्न शिक्षा-बाजारक पैघ प्रश्नसँ गुँथल अछि। संवादक बहुलता सामाजिक संसार विस्तृत करैत अछि, मुदा कथानकक गति एतऽ शिथिल होएबाक जोखिमो अछि। (ठाकुर, २०१३)।

दोसर अङ्क: दृश्य २ — सम्पन्न घरक बेटी आ शैक्षिक निवेश

चन्द्रेश आ मनीषा बेटीकेँ भेटल शैक्षिक सफलतापर हर्ष व्यक्त करैत छथि। उच्च शिक्षाक लेल दरभङ्गा दिशा प्रस्थानक तैयारी होइत अछि। एकहि नाटकमे दुखनक पढ़ाइ लेल दैनिक मजदूरीक बिक्री आ सम्पन्न बेटी लेल संसाधनक सुरक्षित जोगार तुलना उत्पन्न करैत अछि। बेटी-शिक्षा सकारात्मक प्रयोजन अछि, मुदा पिताक भविष्य-कामनाक केन्द्रमे विवाह-प्रतिष्ठा आ सामाजिक रूपसँ

ऊँच घरक चिन्ता सेहो रहैत अछि। बेटीकेँ उच्च शिक्षा देब सामाजिक समानता स्वीकार कऽ लेबाक पर्याय नहि—ई विरोधाभास दृश्यकेँ प्रखर बनबैत अछि। (ठाकुर, २०१३)।

दोसर अङ्क: दृश्य ३ — अगिला पढ़ाई बनाम मायक स्मृतिगहना

दुखनक परिणाम प्रसन्नताक कारण बनैत अछि, मुदा अगिला पढ़ाई लेल परिवार अपारदर्शी खर्चक सम्मुख अछि। मरनीक हँसली—माय-बापक स्मृति—गिरवी राखबाक सम्भावना भावनात्मक संघर्ष जन्मबैत अछि। बेटाक भविष्य आ मातृ-स्मृतिक संरक्षणमध्य केकरा प्राथमिकता भेटत? नाटक आर्थिक अभावक नैतिक मूल्य एतऽ महीन रूपमे पकड़ैत अछि। गहना बेचब मात्र पूँजी हस्तान्तरण नहि, पीढ़ीगत स्मृतिक विस्थापन अछि। दुखनक उत्कट पढ़ाइच्छा पाठकीय सहानुभूति दैत अछि, मुदा माताक निर्णय स्वयं संकटसँ मुक्त नहि। (ठाकुर, २०१३)।

दोसर अङ्क: दृश्य ४ — बन्धक-व्यवस्था आ सत्ताक दूरी

मरनी हँसली लऽ कऽ चन्द्रेश लग पहुँचैत छथि। धनी व्यक्तिक घरक भीतर दूरी, स्वर, प्रकाश आ आशंका धन-सत्ताक नाटकीय सज्जा बनैत अछि। ऋणक शर्त आ अधिक सूद गरीबक वस्तुकेँ धनीक अधिकारमे सरकबैत अछि। पूर्वक पथिया-व्यापारक दृश्यसँ तुलना कएल जाए तँ शोषणक परिमाण बढ़ल अछि: पहिने हस्तशिल्पक मूल्य घटाओल जाइत छल, आब स्मृति-वस्तु बन्धक बनैत अछि। (ठाकुर, २०१३)।

दोसर अङ्क: दृश्य ५ — नामाङ्कनक टाका आ सम्बन्धक दबाव

मङ्गल आ दुखन मरनीक लौटबाक बाट जोहैत छथि; अन्तिम तिथि तथा विलम्ब-शुल्क समयकेँ आर्थिक विरोधी बनबैत अछि। भेटल रकमसँ नामाङ्कन सम्भव होइत अछि, मुदा परिवारक देनदारी समाप्त नहि। पछिला घरेलू हास्यक प्रसङ्ग दृश्यकेँ मानवीय रखैत अछि; तइयो कथाक पैघ चिन्ता उच्च शिक्षा धरि पहुँचनाइ अछि। लेखक पाठककेँ बुझबैत छथि जे गरीबक लेल कालबद्ध आवेदन-प्रणाली स्वयं बाधा बनि सकैत अछि। (ठाकुर, २०१३)।

दोसर अङ्क: दृश्य ६ — उच्च शिक्षाक संग नियन्त्रणक भय

सम्पन्न परिवारमे बेटीकेँ पढ़बाक लेल बाहर पठेबाक निर्णयक संग प्रतिष्ठा आ यौन-नियन्त्रणक आशंका बढ़ैत अछि। समाचारक आधारपर युवतीक स्वतन्त्रता सन्दिग्ध मानबाक प्रवृत्ति उभरैत अछि। मनीषा आ चन्द्रेशक संवादमे स्नेह, संशय, विवाह-प्रबन्धन आ परिवारक प्रतिष्ठाक अन्तर्द्वन्द्व अछि। ई

दृश्य संकेत करैत अछि जे आर्थिक साधन होइतो स्त्रीक स्वायत्तता स्वतः सुरक्षित नहि होइत। (ठाकुर, २०१३)।

दोसर अङ्क: दृश्य ७ — अभियान्त्रिकी शिक्षा आ असम्भव शुल्क

दुखन उच्चतर प्राविधिक शिक्षाक लक्ष्य बतबैत अछि। मङ्गल ओकर अभिप्राय बुझबाक प्रयास करैत अछि; ‘पढ़ब’ आ ‘अभियन्ता बनब’ बीच सामाजिक दूरी स्पष्ट अछि। घरक जनजातीय अथवा जातीय पहचान निर्णायक नहि; आर्थिक साधन आ जानकारीक अभाव अधिक सघन संकट बनैत अछि। एहि दृश्यमे पढ़ाइ सामाजिक गतिशीलताक परियोजना बनैत अछि, मुदा धन-अभाव ओकर पथ अस्थिर करैत अछि। (ठाकुर, २०१३)।

दोसर अङ्क: दृश्य ८ — डीहक मूल्य आ हस्ताक्षरक राजनीति

अभियान्त्रिकी शिक्षाक आर्थिक व्यवस्थाक चर्चा अन्ततः चन्द्रेशक कागजी लेनदेन धरि पहुँचैत अछि। दस्तखत आ औंठा-निशानक माध्यमसँ चारि लाख टाका देबाक प्रसङ्ग अछि; बादक स्वगत कथनसँ मङ्गलक डीह आ हँसलीपर अधिकार स्थानान्तरित भेनाइ स्पष्ट होइत अछि। ई नाटकक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मोड़ अछि: शिक्षा-सफलताक सम्भावना जमीनहीन भेनाइ सँ खरीदल जाइत अछि। कागत एतऽ निर्जीव वस्तु नहि, सत्ता-निर्माणक नाट्य-उपकरण अछि। ऋणक शर्तक सूक्ष्म कानूनी विवरण पाठमे पूर्ण पारदर्शी नहि, तँ एहि सम्बन्धकें ‘स्वेच्छापूर्वक समान विनिमय’ कहल गलत होएत। (ठाकुर, २०१३)।

दोसर अङ्क: दृश्य ९ — सरकारी गाछी आ विस्थापित परिवार

मङ्गल आ मरनी आब सरकारी गाछीमे सिरकी तानि रहैत छथि। अपार कष्टक बीच दुखनक नामाङ्कन भेल अछि; गाछीक अस्थायी वास शिक्षा-व्ययक ऐतिहासिक कीमतक दृश्य प्रमाण बनैत अछि। मणिकान्तक सहानुभूति, रबीयाक पुरान दुर्व्यवहारपर पश्चात्ताप आ मरनीक शिक्षापर आग्रह मिलि नाटककें सामाजिक समुदायसँ जोड़ैत अछि। एहि दृश्यपर दोसर अङ्क बन्द होइत अछि—परिवार आर्थिक रूपेँ खाली, मुदा भविष्यक भरोसासँ भरल। (ठाकुर, २०१३)।

तेसर अङ्क: दृश्य १ — शिक्षित युवाक पुनर्भेट

नव स्थानमे चिकित्सकीय शिक्षा प्राप्त युवती आ अभियन्ता दुखनक भेट होइत अछि। शिक्षित मन आ पुरान ग्रामसमाजक जातिगत दूरी बीच द्वन्द्व स्पष्ट होइत अछि। दुखनक माता-पिता द्वारा जमीन

गुमेबाक कथा युवतीकेँ अपन पिताक आर्थिक आचरणसँ परिचित करबैत अछि। एतय प्रेमक सम्भावना मात्र आकर्षण नहि, साझा न्यायबोधक दिशामे बढ़ैत अछि। तँओ दुनूक आर्थिक-सामाजिक पृष्ठभूमि बीचक असमानता सहजहि मेटि नहि जाइत। (ठाकुर, २०१३)।

तेसर अङ्क: दृश्य २ — नौकरीमे सौदा, पैरवी आ जाति

रेलवे नियुक्तिक प्रसङ्गमे दुखनसँ भारी रकमक माँग आ जातिक कारण अपमान देखाओल गेल अछि। तकर समानान्तर चन्द्रेश अपन बेटी लेल सामाजिक पहुँच तथा जातीय सम्बन्धक उपयोग करबाक चेष्टा करैत अछि। नाटक दू उम्मीदवारक समक्ष अलग-अलग संस्थागत द्वार खोलैत अछि: एक लग योग्यता अछि मुदा साधन नहि, दोसर लग सम्पर्क अछि। घटना रोजगार-व्यवस्थाक नैतिक विफलता उद्घाटित करैत अछि, मुदा नाटकमे ई प्रसङ्ग समग्र संस्थागत दस्तावेज नहि, एकटा व्यङ्ग्यात्मक सामाजिक दृश्य थिक—एहि अन्तरकेँ राखब जरूरी अछि। (ठाकुर, २०१३)।

तेसर अङ्क: दृश्य ३ — प्रेम आ आन्तरिकीकृत हीनताबोध

दुखन आ सम्पन्न घरक युवतीक आत्मीयता धीरे-धीरे प्रेम-स्वीकार धरि पहुँचैत अछि। दुखन स्वयं अपन जातिगत दर्जाकेँ सम्बन्धक सम्भावनाक विरोधी मानबाक क्षण सँ गुजरैत अछि; युवती एहि हीनताबोधपर प्रश्न उठबैत छथि। एहि दृश्यक नाटकीय बल प्रेम-स्वीकार मात्र नहि, सामाजिक विभाजनक भीतर व्यक्ति-मनक दोहरी आवाज अछि। तथापि प्रेमक अभिव्यक्तिमे भावुक पुनरावृत्ति किछु समय मंचीय गति धीमी करैत अछि। (ठाकुर, २०१३)।

तेसर अङ्क: दृश्य ४ — शिक्षित बेटी आ कुल-प्रतिष्ठाक दीवार

घरमे विवाह-विचार शुरू भेलापर युवती समानता आ निजी इच्छाक आधारपर निर्णयक पक्ष लैत छथि। पिता कुल, जाति आ प्रतिष्ठाकेँ सर्वोच्च मानैत छथि। मनीषा आरम्भमे अपेक्षाकृत सहानुभूतिशील देखाइतो दुखनक जाति बुझिते स्वयं सशङ्क भऽ जाइत छथि। एहिमे नाटक एकटा महत्त्वपूर्ण सत्य पकड़ैत अछि: सैद्धान्तिक उदारता आ अपन घरक विवाहक प्रसङ्गमे व्यावहारिक उदारता अलग वस्तु अछि। चिकित्सक युवतीक व्यक्तित्व बौद्धिक स्वतन्त्रताक रूपमे उभरैत अछि। (ठाकुर, २०१३)।

तेसर अङ्क: दृश्य ५ — जातीय अपमानसँ योजनाबद्ध हिंसा

चन्द्रेशक स्वाभिमान आ प्रतिष्ठाभय क्रोधमे बदलैत अछि। दुखनकेँ शिक्षा प्राप्त करबाक लेल पूर्व आर्थिक लेनदेनक स्मृति उलटा ‘उपकार’क दम्भ बनैत अछि। साथीक सहयोगसँ उत्पन्न झगड़ा आ

मारपीटक घटना जातिगत शक्ति-प्रदर्शनक चरम रूप अछि। कथा एतऽ सत्याग्रह-समान तर्कवादसँ आगाँ शारीरिक हिंसाक धरातलपर पहुँचैत अछि। पठनीय प्रश्न ई अछि जे हिंसा उपरान्त न्याय निजी मेल-मिलापक सीमामे रहि सकत अथवा उत्तरदायित्वक औपचारिक संरचना चाहत। (ठाकुर, २०१३)।

तेसर अङ्क: दृश्य ६ — शिक्षाक अर्थ आ सामुदायिक न्याय-खोज

मारपीटक बाद घायल दुखन अपन प्रेम आ जातिभेदविरोधी दृष्टि स्पष्ट करैत अछि। मरनीक मातृ-चिन्ता, मङ्गलक धीरज आ मणिकान्तक विवेक एक संग उपस्थित अछि। निर्णय तुरन्त प्रतिशोधक नहि, साझा विचार आ पंचायत दिशामे बढ़ैत अछि। एहि दृश्यसँ शिक्षा केवल नौकरीक साधन नहि, सामाजिक समानताक आलोचनात्मक चेतना रूपमे पुनर्परिभाषित होइत अछि। मुदा नाटकक संवाद कखनहुँ भाषणात्मक भऽ जाइत अछि—आन्तरिक मनोदशाक सूक्ष्मता घटैत अछि। (ठाकुर, २०१३)।

तेसर अङ्क: दृश्य ७ — पञ्चायत, समता आ सुखान्तक सीमा

विद्यालय-परिसरमे बैसल पञ्चायत निजी विवादकें सार्वजनिक न्यायप्रश्न बनबैत अछि। सरपञ्च मोतीलाल दलित पात्रक पक्ष सुनैत छथि, जाति-धनसँ अलग गुण आ मानवीय सम्मानक आग्रह करैत छथि, आ विवाहक पक्षमे निर्णय दैत छथि। चन्द्रेशक स्वीकार, जयमाला, समधी-मिलन आ सामूहिक आशीर्वादसँ नाटक समाप्त होइत अछि। दृश्य लोक-रंगमंचक सामूहिक उत्सवभाव सृजैत अछि; रबीयाक हास्य-उपकथा कथाक तनाव घटबैत अछि। तथापि मारपीटक दण्ड, गैरबराबर आर्थिक सौदाक सुधार आ दलित परिवारक गुमल भूमि वापस करबाक प्रश्न अन्तिम समाधानमे स्पष्ट रूपेँ सुलझल नहि देखाइत अछि। एही कारण ई समताक आदर्शात्मक सुखान्त अछि, सम्पूर्ण सामाजिक न्याय सम्पन्न भऽ गेलाक तथ्यात्मक प्रमाण नहि। (ठाकुर, २०१३)।

पात्र-विवेचन: विरोधाभास, अभिलाषा आ कर्म

मरनी: अनौपचारिक ज्ञान, श्रम आ नैतिक दृढ़ता

मरनीकेँ केवल त्यागमयी मायक प्रतिमान बनाय देब ओकर नाट्यगत सक्रियताकेँ छोट करब होएत। ओ मङ्गलक मद्यपानपर प्रश्न उठबैत छथि, लोकसँ सुनल स्वास्थ्यविचार अपनबैत छथि, सन्तानक शिक्षाक पक्षमे संसाधन जुटबैत छथि, बाजारक ग्राहकसँ मोल-भाव करैत छथि, अपमानक सामने प्रतिवाद करैत छथि आ अन्ततः अपन माय-बापक स्मृतिगहना धरि जोखिममे रखैत छथि। एहि कर्मक

अर्थ अछि जे स्त्रीक ज्ञान केवल विद्यालयक प्रमाणपत्रसँ नहि निर्धारित होइत अछि। श्रम, अनुभूति आ तर्क-क्षमता परिवारक प्रमुख बौद्धिक संसाधन बनैत अछि।

तथापि ‘उदार माए’क छविमे जोखिम अछि। नाटक कतेको बेर मरनीसँ परिवारक त्यागक असीमित अपेक्षा करैत अछि; अपन देह, स्मृति, सम्पत्ति आ भावनाकेँ बचा राखबाक हुनकर स्वतन्त्र इच्छा सन्तानक अभिलाषाक अधीन चलि जाइत अछि। एक स्त्रीवादी पुनर्पाठ एहिसँ प्रश्न करैत अछि—गरीब मायक बलिदानक महिमामण्डन आ ओकर श्रमक न्यायपूर्ण सामाजिक मान्यता एक्कहि बात नहि थिक।

मङ्गल: पितृत्व, कमजोरी आ परिवर्तित जिम्मेवारी

मङ्गल एकरेखीय सज्जन पात्र नहि छथि। मद्यपानक आदत, पितृसत्तात्मक बोल, असंगठित निर्णय आ रबीयाक संगति हुनक कमजोरी अछि। दोसर दिस बेटाक अध्ययन लेल बचत, श्रमक निरन्तरता, पारिवारिक उद्वेग आ अन्तिम अङ्कमे विचारपूर्वक सामुदायिक समाधान खोजब हुनक जिम्मेदारीक उभरैत पक्ष अछि। एहि द्वैतक कारण ओ विश्वसनीय ग्राम्य पात्र बनैत छथि। हुनकर स्वाभिमानक सीमा खास महत्त्व रखैत अछि—व्यवसायिक ग्राहकक समक्ष ओ झुकैत छथि, मुदा बेटाक विकासक प्रसङ्गमे दृढ़ बनैत छथि।

दुखन: प्रतिभाक कथा आ सामाजिक गतिशीलताक विरोधाभास

दुखनक यात्रा शुल्क भरबाक मोहताज छात्रसँ अभियन्ता धरि जाइत अछि। एहि रेखामे बचपनक मेहनत, युवाक शिक्षा आ वयस्कक आत्मनिर्णय समाहित अछि। मुदा ओकर उपलब्धि व्यक्तिवादी ‘मेहनत करब तऽ सभ सम्भव’ बला कथा नहि: मायक गहना, डीहक परित्याग आ परिवारक विस्थापन एहि सफलताक सामूहिक दाम अछि। तेसर अङ्कमे ऊँच-नीचक प्रश्नकेँ निजी सम्बन्धमे लागू करब ओकर आलोचनात्मक परिपक्वताक सूचक अछि। दुखन समाजक मानदण्डसँ विद्रोह करैत अछि, मुदा कथाक किछु मोड़पर ओकर एजेंसी सार्वजनिक पंचायतक निर्णयसँ परिभाषित रहि जाइत अछि।

चन्द्रेश झा: दानक आवरणमे अधिग्रहण

चन्द्रेश धनक संचय, समाजमे सम्मान, बेटीकेँ श्रेष्ठ शिक्षा देब आ कुल-प्रतिष्ठा बचायब चाहैत छथि। हुनकर स्वतःसन्तुष्ट धारणा गरीबक दैनन्दिन कठिनाइकेँ बेसी दाम वा बकायाक प्रश्नक रूपमे देखैत अछि। ओ धनी पिता छथि, मुदा न्यायशील समाजपिता नहि। एकर समक्ष बेटीक विवाहविषयक

स्वायत्तताक प्रश्न हुनक अधिकारक सीमा दर्शबैत अछि। चरित्रक महत्त्व एतऽ ई नहि जे ओ ‘खराब व्यक्ति’ छथि, बल्कि ई जे श्रेणीबद्ध समाजक लाभ ओहन व्यक्तिमे जमैत अछि, जे अपन व्यवहारकेँ सामान्य मानि लेइत अछि। अन्तिम मतपरिवर्तन भावनात्मक छूट दैत अछि, मुदा आरम्भिक शोषणक परिणामकेँ सहजहि समाप्त नहि करैत।

शिक्षित युवती, मनीषा आ पीढ़ीगत स्त्री-अन्तर

सम्पन्न परिवारक युवती चिकित्सकक प्रशिक्षण आ जीवनसाथीक निर्णयक अधिकार दूनू चाहैत छथि। पिता अपन आर्थिक निवेशकेँ विवाह-नियन्त्रणक आधार बनबैत छथि; बेटी शिक्षाकेँ नैतिक स्वायत्तताक आधार बनबैत छथि। मनीषाक व्यवहार बेसी जटिल अछि—ओ पिता-आक्रोशकेँ कखनहुँ नरम करैत छथि, मुदा बेटी द्वारा जाति-सीमा पार कएलापर परम्परागत पूर्वाग्रह सँ बाहर नहि रहि पबैत छथि। एहि त्रिकोणमे नाटक स्त्री-अनुभवक एकरूपता पर प्रश्न करैत अछि।

मणिकान्त, मोतीलाल, रबीया आ सहायक समाज

मणिकान्त मध्यस्थ विवेकक, मोतीलाल सार्वजनिक निर्णयक, आ रबीया लोकहास्यक प्रवाहक प्रतिनिधि बनैत छथि। मणिकान्त श्रमजीवीक कष्ट सुनबाक आ संवादक अवसर देबाक पात्र छथि। मोतीलाल पञ्चायतकेँ सार्वजनिक न्यायमंच बनबैत छथि, मुदा हुनकर निर्णय व्यक्तिगत उदारतापर कतेक निर्भर अछि, ई प्रश्न शेष अछि। रबीया हास्य उत्पन्न करैत छथि, आ शराबक प्रसङ्गमे मङ्गलक विपरीत विकल्प सेहो बनैत छथि। एहन हास्यक संग सावधानी आवश्यक अछि—दलित वा श्रमजीवी पात्रक अस्मिताकेँ मात्र मसखरीक सामग्री नहि बनाओल जाए।

सामाजिक प्रश्नक गहन विश्लेषण

जाति आ वर्ग: दू भिन्न, परस्पर सम्बद्ध सत्ता

नाटकक शीर्षकक ‘ऊँच’ आ ‘नीच’ पद केवल सामाजिक सम्बोधन नहि, संसाधनक विभाजनक प्रणाली अछि। कोन लोक उत्पादक श्रम करत, कोन लोक मूल्य निर्धारित करत, केकरा कर्जक शर्त सुनाओल जाएत, केकर शिक्षा सहज होएत आ केकर विवाह सम्मानजनक कहल जाएत—ई पाँच अलग प्रश्न एकहि जाति-वर्ग सम्बन्धमे जुड़ैत अछि। दुखनक अभियन्ता भऽ जेबो ओकर पूर्व सामाजिक दर्जाक कलङ्क क्षणमात्रमे मेटि नहि सकैत अछि। ओ रोजगारमे सेहो भेदभाव भोगैत अछि,

आ प्रेमसम्बन्धमे सेहो। एहि अर्थमे ‘योग्यता’ जातिक स्वचालित विनाश नहि करैत; सामाजिक संस्थाक संरचना बदलबाक अतिरिक्त आवश्यकता नाटकक घटनासँ सामने अबैत अछि।

तथापि लेखक वर्गक विश्लेषण कतेको स्थानपर विशिष्ट धनी पुरुषक लोभपर केन्द्रित रखैत छथि। चन्द्रेशक व्यक्तिगत उदारता आ पञ्चायतक स्वीकारसँ कथाक अन्त होइत अछि। जँ जाति असमान भूमि-अधिकार, पदानुक्रम आ प्रतिष्ठाक संस्थागत रूप अछि, तँ एक विवाह ओकर अन्तिम समाधान नहि होएत। ई अन्तर नाटकक आदर्श आ ओकर सामाजिक यथार्थक बीच सार्थक आलोचनात्मक तनाव अछि।

श्रम, वस्तु आ जमीनक क्रमिक विस्थापन

पथिया आ कोनीसँ आरम्भ भेल आर्थिक उपकथा हँसली धरि पहुँचैत अछि आ फेर डीहक विक्रयक रूप लैत अछि। वस्तु-क्रम नाटकक राजनीतिक अर्थव्यवस्था रचैत अछि: दैनिक उत्पादन → बचत → स्मृतिगहना → घर-जमीन → अस्थायी सिरकी। एहि क्रममे परिवार भौतिक सम्पत्तिसँ वञ्चित होइत अछि, मुदा सन्तानक शिक्षा-पूँजी अर्जित करैत अछि। लेखक शिक्षा-सफलताक महत्त्व घटबैत नहि छथि; ओ देखबैत छथि जे हाशियाक परिवारक लेल ओकर दाम दुहरा अछि—शुल्क देब आ सामाजिक जोखिम सहब। चन्द्रेशक घरमे बढ़ैत धन आ मङ्गलक घरमे घटैत अचल सम्पत्ति समानान्तर दृश्य-योजना बनबैत अछि।

शिक्षा: मुक्तिक आशा आ संस्थागत असमानता

दुखनक विद्यालयी जीवनक बाधा शुल्क आ परीक्षा-तिथि अछि; महाविद्यालयीक बाधा बड़ राशि; रोजगारक बाधा पैरवी आ रिश्तक माँग। शिक्षा संस्था ओकरा बौद्धिक योग्यता दैत अछि, मुदा जाति-वर्गक पुरान तन्त्र नव दरवज्जापर भेटैत अछि। समृद्ध बेटी उच्च शिक्षाक लाभ लैत छथि, मुदा घरमे जाति-आधारित विवाह-नियन्त्रणसँ जूझैत छथि। दूनू शिक्षायात्राक तुलना उपयोगी अछि: शिक्षा स्त्री आ दलित युवक दूनूक लेल मुक्ति-सम्भावना अछि, तथापि मुक्तिक शत्रु अलग-अलग रूपमे लौटैत अछि।

पितृसत्ता, स्त्री-कर्तृत्व आ प्रेम-विवाह

मरनीक निर्णयक अधिकार परिवारक अर्थ-संकट सीमित करैत अछि। शिक्षित युवतीक निर्णयक अधिकार पिता कुलप्रतिष्ठा सीमित करैत छथि। दूनू स्त्री अलग वर्गीय स्थानपर रहितो स्वायत्तताक संघर्षमे जुड़ल छथि। प्रेम-विवाहक कथानक जाति-सीमा तोड़ैत अछि, मुदा स्त्रीक अधिकारकें केवल

प्रियतमक चयन तक सीमित नहि राखब चाही। ओकर पेशागत भविष्य, देहपर हिंसाक भय, घरक सम्पत्तिमे अधिकार आ समाजक सार्वजनिक भागीदारी सेहो प्रश्न थिक। नाटक एहि सभ प्रश्नक संकेत दैत अछि; हर प्रश्नकेँ पूरा विकास देबाक जगह नहि दैत।

धर्म, दिखाबा आ आर्थिक नैतिकता

धनी पात्रक धार्मिक आचरणक चर्चा आ गरीबक प्रति कठोर व्यवहार बीचक दूरी नाटकमे व्यङ्ग्य रचैत अछि। धार्मिक यात्रा वा पूजा सामाजिक दायित्वसँ मुक्तिक प्रमाण नहि—ई विचार चन्द्रेशक लोभसँ उत्पन्न विरोधाभासक भीतर उभरैत अछि। नाटक धार्मिक विश्वास पर समग्र आक्रमण नहि करैत; ओ आचरणक नैतिक विसंगति देखबैत अछि। एहि कारण एकरा नैतिक व्यङ्ग्यक रूपमे पढ़ब अधिक प्रमाणसङ्गत अछि।

नाट्यशिल्प, रंग-भाषा आ मंचनीयता

बेचन ठाकुरक रचना दृश्य-आधारित, संवादप्रधान आ ग्रामीण जीवनक क्षुद्र वस्तु-स्थिति सँ संचालित अछि। हस्तशिल्प, कुरसी, डायरी, कागज, हस्ताक्षर, गहना, रुपया, सिरकी, विद्यालय आ पञ्चायती आसन बारम्बार अर्थ-बाहक मंच-सामग्री बनैत अछि। वस्तु-प्रयोगक अर्थपूर्ण क्रम पात्रक सामाजिक दूरी दर्शककेँ बिना विशद व्याख्यान सेहो बुझा सकैत अछि। उदाहरणार्थ मङ्गलक घरक कार्यरत हाथ आ चन्द्रेशक दलानक आरामक आसन एक्कहि मंच-संरचनामे प्रभावकारी विरोध प्रस्तुत कऽ सकैत अछि।

संवाद स्थानीय जीवनक उद्गार आ मुहावराक कारण भूमिसँ जुड़ल अछि। साधारण गप-सप एकटा आर्थिक वा नैतिक मुद्दाक दिशामे मुड़ि जाइत अछि। मरनीक प्रश्नोत्तर, मङ्गलक शराब-सम्बद्ध असंगति, रबीयाक विनोद, चन्द्रेशक आदेशक भाषा आ मोतीलालक पञ्चायती घोषणा एक-दोसरसँ भिन्न सामाजिक स्वर रचैत अछि। तेसर अङ्कमे नौकरीक प्रसङ्गमे मैथिली आ हिन्दीभाषी प्रशासनिक संवादक अन्तर सेहो सामाजिक प्रभुत्वक ध्वनि बनि उठैत अछि।

शिल्पक सीमा सेहो चिन्हित होएबाक चाही। अनेक दृश्य पात्रद्वारा नीतिक प्रत्यक्ष उद्घोषणा पर टिकैत अछि; एक्कहि मन्तव्यक पुनरावृत्ति पात्रक भितरी द्वन्द्वक जटिलताकेँ कम करैत अछि। दोसर अङ्कक किछु विस्तृत गप-सप, तेसर अङ्कक प्रेम-स्वीकार आ अन्तिम पञ्चायती भाषणकेँ मंचनमे सटीक सम्पादनक आवश्यकता भऽ सकैत अछि। किन्तु मूल प्रकाशित पाठक आलोचना आ रंगमंचीय

संक्षिप्तीकरणक प्रस्ताव अलग प्रक्रिया अछि; मूल रचनाकेँ अभिलेखीय रूपमे अक्षुण्ण राखब आवश्यक अछि।

नाटकमे हास्य सामाजिक शक्ति-सम्बन्धपर खुलि सकैत अछि। मद्यपान आ रबीयाक भूख-सम्बद्ध हास्य अभिनयमे अतिरेक भेला पर उत्पीड़नक गंभीरता कम कऽ सकैत अछि; संयमित अभिनय एहि विरोधाभासकेँ अधिक अर्थवान बनाओत। स्त्री पात्रक सम्मानपूर्ण प्रस्तुति, जातिसूचक अपमानक आलोचनात्मक सन्दर्भ, हिंसाक गैर-रोमानीकरण आ पञ्चायतमे सन्तुलित देह-स्थिति मंच-निर्देशनक केन्द्रीय काज बनत।

समय-विस्तार महत्वपूर्ण अछि: प्राथमिक शिक्षासँ व्यावसायिक रोजगार धरि नायकक आयु बदलैत अछि। तीन अङ्कक स्थापत्य एहि काल-विस्तारकेँ सम्भव बनबैत अछि, मुदा दृश्य-सन्धिक बीच समयक संक्रमण, पाठकीय धैर्य आ पात्रक परिपक्वताक क्रम स्पष्ट करबाक भार मंचक प्रकाश-ध्वनि आ अभिनयपर रहत। एहि संदर्भमे ‘ऊँच-नीच’ पुस्तक-पाठ आ लोकमंचक बीच सहज गमनशील, मुदा सम्पादन-संवेदनशील नाटक थिक।

मैथिली बाल-साहित्यक इतिहास: तुलनात्मक विवेचन

मौखिक शिशु-लोकसाहित्यसँ लिखित विधा धरि

फूलचन्द्र झा ‘प्रवीण’क ‘मैथिली शिशु लोक साहित्य’ (विदेह, अङ्क ५०, २०१०) शिशु-गीत आ लोकपरम्पराक मौखिक प्रसारपर बल दैत अछि। ओ लालन-पालन, खेल-मनोरंजन आ ज्ञानोपयोगी लोक-साहित्यक भेद प्रस्तुत करैत छथि। ई परम्परा परिवारकेँ बाल-समाजीकरणक पहिल शिक्षालय मानैत अछि। ‘ऊँच-नीच’क मङ्गल-मरनीक घर एहि लोक-ज्ञानक पारम्परिक स्थानक आधुनिक रूप देखबैत अछि, मुदा ओकर प्रमुख लक्ष्य शिशु-मनोरंजन नहि; विद्यालयी प्रमाणपत्र, सामाजिक असमानता आ नागरिक प्रतिष्ठाक प्रश्न अछि। एहि कारण दूनू विधाक स्रोत-परिवेश समान होइतो पाठकीय उद्देश्य भिन्न अछि।

योगानन्द झाक ‘मैथिली बाललोककथा: स्थिति आ अपेक्षा’ (विदेह, अङ्क ७६, २०११) कथा-रुचि, सहज भाषा, ज्ञान आ मनोरंजनक विविध उदाहरण देइत अछि। ओ लोककथा-संचयनमे कथाक मूल भाषा सुरक्षित रखबाक महत्त्व देखबैत छथि। एहि प्रतिमानसँ ‘ऊँच-नीच’क ग्रामीण बोलीक

साहित्यिक मूल्य समझल जा सकैत अछि; मुदा लोककथाक संक्षिप्त कौतूहल-विधान आ एहि नाटकक दीर्घ सामाजिक द्वन्द्व एक्कहि प्रकारक पाठ नहि अछि।

चित्रकथा, बालनाटक आ दलित नायकत्वक दृश्यपरम्परा

दुर्गानन्द मण्डलक २०१२क विदेह-लेख 'नेना लेल सुन्दर चित्रकथा' प्रीति ठाकुरक चित्रकथा मार्फत गोनू झा, सलहेस, दीना-भदरी, छेछन आदि लोकचरित्रकें नव पीढ़ी लग पहुँचेबाक प्रशंसा करैत अछि। उक्त समीक्षामे सामाजिक रूपसँ हाशियाक नायक आ अन्तरजातीय प्रेमक कथाक उल्लेख भेटैत अछि। एतऽ सादृश्य महत्वपूर्ण अछि: 'ऊँच-नीच'मे दुखन आधुनिक शिक्षित दलित नायक अछि, जखन कि अनेक चित्रकथा लोकस्मृति आ लोकनायकक द्वारा मानवीय सम्मानक प्रश्न उठबैत अछि। विधा आ प्रस्तुति अलग, मुदा वर्चस्वक प्रतिमानक विरुद्ध कथा-नायक चयनक सांस्कृतिक प्रयत्न तुलना योग्य अछि।

विदेहक पोथी-संग्रहमे मुन्ना जीक 'तीन टा बाल नाटक' अलगसँ 'मैथिली बाल साहित्य' वर्गमे सूचीबद्ध अछि; एहि संग्रहमे बेचन ठाकुरक 'ऊँच-नीच'कें स्पष्ट रूपमे 'नाटक' लिखल गेल अछि। एतऽ सूचीकरण स्वयं उपयोगी विधागत साक्ष्य अछि। बालनाटक कहबाक कसौटी केवल बाल-चरित्रक उपस्थिति नहि: बाल अभिनेता द्वारा सम्भव मंचन, सीमित अवधि, वयसोपयुक्त हिंसा-चित्रण, बाल-मनक सक्रियता, भाषाक ग्रहणीयता आ चरित्रक अनुभवजन्य गति सेहो अपेक्षित अछि। ई कसौटी पर 'ऊँच-नीच'किशोर दर्शक लेल चुनिन्दा दृश्य सहित उपयोगी, मुदा सम्पूर्ण रूपमे व्यापक सामाजिक रंग-रचना अछि।

समकालीन आलोचना आ बाल-साहित्यक विस्तारित सीमाना

विदेहक शोध-सूचीमे रमेश रञ्जनक 'मैथिली बालनाटक सीमा विस्तार करैत—चौआरि' शीर्षक लेख (अङ्क १२६, २०१३) दर्ज अछि। ई अभिलेख बालनाटकक पृथक आलोचनात्मक शब्दावलीक उपलब्धताक संकेत देइत अछि; उपलब्ध पृष्ठक शीर्षक आ भीतरक सामग्रीक असंगति देखते एहि लेखसँ बिना पाठसमर्थन कोनो विशेष वैचारिक स्थापना आरोपित नहि कएल गेल अछि। २०२६ मे प्रकाशित 'मैथिली बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्र' बाल-पाठकक कर्तृत्व, जातिगत प्रतिनिधित्व, लोकगाथा आ औचित्य-विचारक आलोचनात्मक भाषा विस्तृत करैत अछि। एहि पछिला विमर्शकें २०१३क कृतिपर इतिहाससम्मत सावधानीसँ लागू कएल जा सकैत अछि; वर्तमान सिद्धान्तक प्रभाव पूर्वकालीन लेखकपर सिद्ध मानल नहि जाए। [५, ६]

एहि तुलनाक निष्कर्ष तीन स्तरक अछि। पहिल, ‘ऊँच-नीच’मे विद्यार्थी दुखनक जीवन-कथा बाल-अधिकार आ शिक्षा-अधिकारक अध्ययन लेल विशिष्ट उपयोगी अछि। दोसर, जाति-आधारित अपमानक नाट्यचित्र किशोर दर्शककें सामाजिक असमानताक कठिन प्रश्न पुछबाक अवसर दैत अछि। तेसर, प्रौढ़ मद्यपान, शारीरिक हिंसा, साहूकारी-लेनदेन, दीर्घकालिक प्रेम आ पञ्चायतक निर्णय एकरा सामान्य आरम्भिक बालनाटक बनबासँ रोकैत अछि। अतः पाठकवर्गक निर्धारण वयस आ शिक्षण-उद्देश्यसँ करबाक चाही, लेखकक विधागत पहिचान उलटाकऽ नहि।

बेचन ठाकुरक रंग-परम्परा आ विदेहक आलोचनात्मक सन्दर्भ

आशीष अनचिन्हार २०११ मे प्रकाशित ‘बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी’क समीक्षामे नाटककारक रंग-निर्देशन, गामक मंचक परम्परा आ सामाजिक अन्धविश्वास-विरोधी स्वरपर विचार करैत छथि। ओ बेचन ठाकुरक नाटक सभक मंचनपरक प्रकृति आ साहित्य-रंगक परस्पर सम्बन्ध चिन्हित करैत छथि। ई पूर्ववर्ती समीक्षा ‘ऊँच-नीच’कें पढ़बाक लेल ऐतिहासिक पृष्ठभूमि प्रदान करैत अछि—बेचन ठाकुरक नाटक केवल पोथीक भीतर सिमटल रचना नहि, लोकमंचक सम्भावनासँ जुड़ल सामाजिक लेखन अछि। मुदा ‘छीनरदेवी’क विषय आ ‘ऊँच-नीच’क शिक्षा-जाति-सम्पत्ति विमर्श अलग अछि; दुईटा कृतिक विषयगत एकरूपता मानब भूल होएत।

विदेहमे प्रकाशित दलित साहित्यक सौन्दर्य-विमर्श आ नाट्य-समीक्षाक नव प्रयास मैथिलीमे श्रेणीक्रमक आलोचना आ मंच-प्रदर्शनक प्रश्नक समकालीन शब्दावली देइत अछि। ई सन्दर्भ एहि नाटकक पात्रकें दया-प्राप्त गरीब नहि, सामाजिक अधिकारक दावेदार मानि पढ़बाक अवसर दैत अछि। तथापि परवर्ती समीक्षा-ग्रन्थकें मूल नाटकक प्रामाणिक अर्थक निर्णायक प्रमाण नहि, तुलनात्मक आलोचनात्मक उपकरण मानल गेल अछि। [८, ९]

पाठक आलोचनात्मक उपलब्धि आ सीमा

प्रथम उपलब्धि पात्रक वर्गीय अन्तरक दृश्यात्मक स्थापन अछि। मङ्गलक घरमे पथिया बिनबाक ठठेरी आ चन्द्रेशक आरामक दलान जखन एक्कहि सामाजिक भूगोलमे रहैत अछि, तखन ‘ऊँच-नीच’ शीर्षक भौतिक अर्थ प्राप्त करैत अछि। दोसर उपलब्धि मरनीक सक्रियता अछि; ओ परिवारक कर्तव्यक पहिल संगठक छथि आ कठिन समयमे सामाजिक तर्कक पहिल स्रोत सेहो। तेसर उपलब्धि शिक्षाक दीर्घकालिक खर्चक चित्रण अछि—बालकक भविष्य सामान्य अभिलाषा नहि, पीढ़ीक श्रम-निवेशक

विषय अछि। चारिम उपलब्धि आर्थिक रूपान्तरण आ जातिगत असमानताक अनुपातहीन सम्बन्ध अछि: बेटा अभियन्ता बनैत अछि, मुदा सम्बन्ध आ रोजगारक दरवज्जापर जातिक प्रश्न फेर उपस्थित अछि।

पाँचम उपलब्धि सार्वजनिक पञ्चायतक रंगमंचीय प्रयोग अछि। विद्यालयक परिसरमे बैसल पंचायत स्थल-प्रतीक रूपमे प्रभावशाली अछि—जतए पढ़ाइ सामाजिक प्रश्न उठेबाक कौशल दैत अछि, ओतहि सामाजिक न्यायपर बहस होइत अछि। छठम उपलब्धि बेटीकेँ शिक्षित बनाबय चाहनिहार पिताक आधुनिकता आ अन्तरजातीय विवाहसँ आतंकित कुल-रक्षाक पुरान आग्रह बीच विरोधाभासक चित्रण अछि।

सीमाक पहिल पक्ष उपदेशक पुनरावृत्ति अछि। अनेक संवाद सामाजिक सुधारक सैद्धान्तिक तर्क स्पष्ट करैत छथि, मुदा पात्रक स्वाभाविक अनुभव कखनहुँ विचारक वाहक बनि रहि जाइत अछि। दोसर सीमा हिंसाक परिणामक सरलीकरण अछि। दुखनपर सामूहिक आक्रमण एक पैघ अन्याय अछि, जकर बाद पञ्चायत तुरन्त विवाहक समाधान देइत अछि; आपराधिक उत्तरदायित्व, पीड़ितक सुरक्षित पुनर्वास आ संस्थागत अन्यायपर विस्तृत विचार नहि उभरैत। तेसर सीमा सम्पत्तिक प्रश्नक अधूरापन अछि—डीह आ हँसलीक लूट-समान असमान लेनदेन निजी मेल-मिलापक कारण स्वतः न्यायसङ्गत नहि भऽ जाइत।

चारिम सीमा स्त्री-स्वतन्त्रताक विवाहकेन्द्रित परिभाषा अछि। चिकित्सक युवतीक शिक्षित नागरिक रूप होइतो अन्तिम सुखान्तमे पेशागत जीवन आ दीर्घकालीन स्वायत्तता गौण भऽ सकैत अछि। पाँचम सीमा दलित सामूहिक संगठनक कम दृश्यता अछि; नायकक व्यक्तिगत प्रतिभा आ प्रेमक साहस अधिक उजागर अछि, सामूहिक सुधारक रूपरेखा कम। ई आलोचना नाटकक ऐतिहासिक योगदान नकारैत नहि, बल्कि ओकर नीतिपरक सुखान्तक सीमा पहचानैत अछि।

शैक्षिक आ नाट्य-प्रयोगक सम्भावना

उच्च माध्यमिक आ विश्वविद्यालय स्तरपर एहि नाटकक चुनिन्दा दृश्य आर्थिक असमानता, श्रमक सम्मान, शैक्षिक पहुँच, जातिगत पूर्वाग्रह, विवाहमे सहमति आ समुदायिक न्यायपर चर्चाक आधार बनि सकैत अछि। मङ्गल-मरनीक घरेलू बहसक संग चन्द्रेशक बाजार-दृश्य पढ़ाओल जाए तँ विद्यार्थी समझि सकत जे निजी परिवारक शिक्षा-इच्छा बाजारक असमानता सँ कोना प्रभावित होइत अछि। दोसर अङ्कक हँसली-डीह-सिरकी क्रम संसाधन-अधिकारक दृश्य-व्याकरण सिखेबाक अवसर दैत

अछि। तेसर अङ्कक रोजगार आ पञ्चायत प्रसङ्ग संस्थागत न्याय आ निजी मेल-मिलाप बीचक अन्तर स्पष्ट करए सकैत अछि।

पूर्ण रंगमंचीय प्रस्तुति लेल अङ्कान्तक समय-छलाङ्ग स्पष्ट करब, संवादक पुनरावृत्तिक सन्तुलन, जातिसूचक अपमानक संवेदनशील अभिनय, हिंसाक नियंत्रित मंचांकन आ अन्तिम निर्णयक बाद आर्थिक न्यायक अनुत्तरित प्रश्नकें दर्शक-संवादमे खोलब उपयोगी होएत। विद्यार्थी मंचनक सन्दर्भमे मूल नाटकक हिंसक आ प्रौढ़ प्रसङ्गक वयसोपयुक्त प्रस्तुति आवश्यक अछि। एहि प्रयोगक उद्देश्य मूल पाठक भाषाकें फेर सँ लिखि देब नहि, बल्कि सामाजिक चिन्तनक विविध स्तर बुझब थिक।

उपसंहार

‘ऊँच-नीच’क महत्त्व एहि बातमे अछि जे ई एकटा गरीब परिवारक शिक्षायात्राकें मिथिलाक सामाजिक श्रेणीक्रमक मूल प्रश्न बनबैत अछि। मङ्गल-मरनीक श्रम, दुखनक उच्च शिक्षाक प्यास, चन्द्रेशक संचयी धनतन्त्र आ युवतीक आत्मनिर्णयक पक्ष मिलि एक सामाजिक त्रिभुज रचैत अछि: ज्ञान, सम्पत्ति आ सम्मान। नाटक बारम्बार सिद्ध करैत अछि जे शिक्षा मनुष्यकें क्षमता दैत अछि, मुदा समाज ओहि क्षमताकें सम्मान देबाक संस्कार सीखबाक आवश्यकता रखैत अछि। ई रचनाक नैतिक उपलब्धि थिक।

आलोचनात्मक निष्कर्ष अधिक कठोर अछि। विवाह-मिलन जातिभेदक विरुद्ध प्रतीकात्मक विजय अवश्य अछि, मुदा जमीनक अधिग्रहण, ऋणक दबाव, रोजगारमे पक्षपात आ शारीरिक हिंसाक सम्पूर्ण प्रतिकार नहि। नाटक अतः सामाजिक न्याय सम्पन्न भऽ गेलाक दस्तावेज नहि; सामाजिक न्यायक आवश्यकता रंगमंचपर तीव्र रूपमे रखनिहार कृति अछि। मैथिली बाल-साहित्यक इतिहासक संग एकर सार्थक सम्बन्ध शिक्षाक प्रश्न आ युवा कर्तृत्वमे निहित अछि, मूल विधागत पहिचान प्रौढ़ सामाजिक नाटक रूपें सुरक्षित रहैत अछि। एहने विभाजित, प्रमाणाधारित पाठक आधारपर ‘ऊँच-नीच’ मैथिलीकें जाति-वर्गसम्बद्ध जनजीवनक एक महत्त्वपूर्ण रंगमंचीय अभिव्यक्ति प्रदान करैत अछि।

०५ / ०६

बिसवासघात

भरोसाक विघटन, भूमिअर्जन आ लोकन्याय

प्रस्तावना: नाटकक साहित्यिक प्रश्न

‘बिसवासघात’क शीर्षक अपन विषयक घोषणा करैत अछि। विश्वास केवल निजी सद्गुण नहि, सामाजिक व्यवहारक आधार होइत अछि: भाइक प्रति भाइक भरोसा, पति-पत्नीमे सलाहक स्वीकार, पिता-पुत्रमे अधिकारक सम्बन्ध, नागरिकक प्रशासनपर आस्था आ समाजक न्यायक संस्थापर विश्वास। नाटक एहिमे प्रत्येक स्तरक टूटन देखबैत अछि। आर्थिक मुआवजाक घटना निजी सम्पत्तिक झगड़ा बनिकऽ नहि रहि जाइत; ओ सत्ता आ धनक असमान वितरणक सार्वजनिक नाटक बनि उठैत अछि।

ई पाठ नाटक अछि, उपन्यास अथवा बाल-कथा नहि। मुद्रित अधिकार-पृष्ठपर अङ्ग्रेजीमे सेहो “Biswasghat, Play by Bechan Thakur” देल अछि। शिल्पक आधार पात्र-नामक संग संवाद, कोष्ठकमे अभिनय-निर्देश, प्रवेश-प्रस्थान, पटाक्षेप आ अङ्क-दृश्यक विभाजन अछि। तँ समीक्षाक प्राथमिक आधार कथासार नहि, घटना आ मंचपर देखाओल कृत्यक परस्पर सम्बन्ध अछि।

एहि शोध-पाठक प्रमुख प्रश्न अछि: नाटक कोना देखबैत अछि जे कुटुम्बीय विश्वास भ्रष्टाचारक सुरक्षाकवच बनि सकैत अछि; प्रतिरोध करैत युवक कतेक हृदयक नैतिक आदर्श बनैत अछि; स्त्री-पात्रक विवेक आ अवाज केना अस्वीकार होइत अछि; आ अन्तिम समाधानमे नीतिसम्मत न्याय तथा प्रशासनिक बल-प्रयोगक बीच कोन विरोधाभास रहि जाइत अछि?

कथाक तीन अङ्क: भरोसासँ न्याय धरि

पहिल अङ्क: कागजक सत्तामे बदलैत विश्वास

पहिल दृश्य तीनू भाइक स्नेहपूर्ण चाह-परिसर अछि। राम किशुन, लखन आ सियाराम सड़कक निमित्त जमीन अधिग्रहणक सूचना पर विचार करैत छथि। राम किशुन अपन सरकारी पहुँच देखबैत दुनू भाइक कागज मँगबैत छथि; एहिठाम भरोसा एकटा वाचिक आश्वासन नहि, अधिकारपत्र सौंपबाक भौतिक कृत्य बनैत अछि। दोसर दृश्य लखनक पत्नी लक्ष्मीक सावधानी प्रस्तुत करैत अछि। ओ जानकारी राखनिहार लोकसँ पुछलाक बादे जमीनक कागज देबाक सलाह दैत छथि, मुदा लखन 'स्त्रीक बात' कहि अविश्वास करैत छथि। बादक दुर्घटनाक प्रथम पूर्वाभास एहि अनसुनीमे निहित अछि।

होलीक भेंट-भोज, अफसरक चाह-आतिथ्य, भू-अर्जन कार्यालय आ अभियन्ताक संग लेन-देन—ई दृश्यसभ रिश्तकेँ कोनो एकटा नितान्त गोपनीय अपराध नहि, बल्कि सामाजिक सम्पर्कक विस्तारक रूपमे स्थापित करैत अछि। नाटकक पाँचम दृश्य विशेषतः निर्णायक अछि: मूल मुआवजा लखनक अस्सी हजार, सियारामक एक लाख आ राम किशुनक एक लाख चालीस हजारक आधार पर कुल तीन लाख बीस हजार छल; अभियन्ताक हेरफेरसँ ओ क्रमशः आठ, दस आ चौदह लाख, अर्थात् कुल बत्तीस लाख होइत अछि। अभियन्ता आठ लाख अग्रिम माँगैत अछि; पाछाँ भू-अर्जन कर्मचारी आ चपरासीक लेन-देन सहयोगी बनैत अछि।

कागजक प्रमाण आ रकमक सत्यता घूसक गोपनीय विनिमयमे खोइ जाइत अछि। राम किशुन भाइसभकेँ भुगतानक वास्तविकता नुका कऽ लखनकेँ पचास हजार आ सियारामकेँ सत्तर हजार दैत छथि। ओ अपन कथित असफल प्रयत्न, असाध्य सरकारी तन्त्र आ दयालु सहयोगक अभिनय करैत छथि। रामलाल समाचारपत्र, कार्यालयी अभिलेख आ धनराशिक अन्तर जोड़िकऽ फाँक पकड़ैत अछि। ओ वयस्कक आज्ञापालन आ तर्कसम्मत सत्यापनक बीच नव पीढ़ीक द्वन्द्वक प्रतिनिधि बनैत अछि।

पहिल अंकक अन्तिम चरणमे सरपंच गंगारामक दरबार रामलालक दावाकेँ प्रमाण-अभाव आ पिता लखनक असहयोगक कारण खारिज करैत अछि। बात तकर बाद घर धरि पहुँचैत अछि: लखनक घरेलू हिंसा आ रामलालक हिंसक प्रत्युत्तर, सादा कागजपर जबरदस्ती ओँठाक निशान, अधिकारक लडाइकेँ पीड़ितक पक्षमे रहितो नैतिक जटिलता देइत अछि।

दोसर अङ्क: संस्थागत पहुँच आ प्रतिरोधक हत्या

दोसर अंकमे लखन अपन बेटासँ डरि राम किशुनक आश्रय लैत छथि। रामलालक दरखास्त अनुमण्डल अधिकारी आ जिला अधिकारी धरि पहुँचैत अछि, जतयसँ थानापर जाँचक आदेश जाइत अछि। मुदा थाना कतेको बेर शिकायतक स्थल सँ लेन-देनक स्थल बनि जाइत अछि। अन्वेषणक जिम्मेदारी सम्भारनिहार कर्मचारी पुलिसिय अधिकारकेँ दबाव, चाय-पानी आ रकमक सौदाबाजीमे बदलैत छथि।

एहि अंकमे जिला अधिकारी बीजेन्द्रक व्यक्तित्व पहिने तुलनात्मक रूपसँ जाँच करय चाहनिहार अधिकारी जकाँ उभरैत अछि; आ राम किशुन अपन राजनीतिक-पुलिसीय सम्पर्क लगा शिकायत दबाबय चाहैत छथि। मुदा दबाव बढ़िते ओ बीर नामक सहयोगीक मार्फत अपराधी सरदार राजाक टोली सँ रामलालक हत्या करबाबयक योजना बनबैत छथि। योजना, अग्रिम धन, बहलाबा आ हत्या नाटकक सर्वाधिक भयानक प्रसङ्ग अछि। चाह-दोकानसँ रामलालकेँ दोस्तीक आवरणमे निकालल जाइत अछि; निर्दोष युवक अपन हत्यारासँ नैतिक अपील करैत अछि, मुदा ओकर हत्या भऽ जाइत अछि।

एहि हिंसा सँ संघर्षक स्वरूप बदलैत अछि। आब लक्ष्य केवल मुआवजाक बाँटवारा नहि, अपराधक सत्य आ मृतकक न्याय अछि। लक्ष्मीक मातृत्व, छोट बेटा झामलालक चिन्ता, मामा लक्ष्मणक सक्रियता आ गाँवक लोकसभक प्रतिक्रिया क्रमशः एकटा सामूहिक प्रतिरोधक रूप ग्रहण करैत अछि। लेखक एहि फेरबदलकेँ केवल घटना-वृद्धि लेल नहि, निजी संघर्षक सार्वजनिक परिणतिक रूपमे गढ़ने छथि।

तेसर अङ्क: समाज, प्रशासन आ अपूर्ण क्षतिपूर्ति

तेसर अंकमे लक्ष्मण आ झामलाल समाजक बैसार करबैत छथि। पहिल पंचैतीक असफलता पाछाँ दोसर पंचायतमे तथ्य आ सार्वजनिक उपस्थिति बढ़ैत अछि; लखनक दुःस्थिति आ रामलालक हत्या सामूहिक विवेकक मुद्दा बनैत अछि। राम किशुन क्षतिपूर्तिक सामाजिक प्रस्तावक विरुद्ध प्रतिरोध करैत छथि, तँ संघर्ष धरना-प्रदर्शन आ उच्च प्रशासनिक हस्तक्षेप धरि पहुँचैत अछि।

एहि क्रममे प्रशासनिक प्रक्रियाक चित्रण स्वयं अन्तर्विरोध सँ भरल अछि। अधिकारी आ पुलिसक कार्रवाईमे अभिलेख-जाँच आ अपराधी धरपकड़ अछि, मुदा संगहि अपमानजनक मारि-पीट आ दण्डक असंवैधानिक रूप सेहो प्रस्तुत अछि। सरदारक गिरोहक मृत्युकेँ नाटकीय समाधानक उपलब्धि मानबाक प्रवृत्ति प्रश्न उत्पन्न करैत अछि। कानूनक मर्यादा आ न्यायिक सुनवाइक बिना दण्डक प्रशंसा करब नाटकक आलोचनात्मक सीमामे गनल जाएत।

जनता दरबारमे चारि गोटेक जिम्मेदारी निश्चित कएल जाइत अछि: राम किशुन पाँच लाख, बीर एक लाख, अभियन्ता उमा शंकर दू लाख आ भू-अर्जन कर्मचारी सुशील दू लाख—कुल दस लाख टाका लखनकें देबाक घोषणा होइत अछि। अन्तिम दृश्यमे रकमक सुपुर्दगी आ राम किशुनक क्षमा-याचना भऽ जाइत अछि। तथापि अन्तिम दुःख पैसा नहि, रामलालक अभाव अछि। मुदा मृतकक हत्या, सरकारी धनक हेराफेरी आ अपराधी-प्रशासनक उत्तरदायित्वकें केवल निजी माफी वा स्थानीय आर्थिक समाधानसँ समाप्त मानब न्यायिक अर्थमे पर्याप्त नहि अछि। नाटक स्वयं एहि अनिर्णीत प्रश्नकें पढ़बाक अवसर दैत अछि।

शीर्षक, प्रतीक आ वस्तुक नाटकीय अर्थ

‘बिसवासघात’क मूल विडम्बना ई अछि जे भरोसा आ छल एके संबंधमे पलैत अछि। राम किशुनक विनम्र भाषण आ सेवाभाव आन्तरिक हिसाब-किताबक विपरीत अछि। लखनक अन्धविश्वासकें केवल निजी मूर्खता कहि टारि देब उचित नहि: परिवारिक ज्येष्ठता, सामाजिक प्रतिष्ठा, सरकारी दफ्तरसँ भय आ कानूनी प्रक्रियाक अपरिचय संयुक्त रूपसँ ओकरा असुरक्षित बनबैत अछि।

कागज एहि नाटकक केन्द्रीय मंच-वस्तु अछि। पहिने मूल भूमि-दस्तावेज, फेर नोटिस, फेर संशोधित रकम, चेक, कार्यालयी पंजिका, प्रार्थना-पत्र, पंचायतक सूचना, सादा कागजपर ओंठाक निशान आ अन्तमे निर्णय—हरेक कागज ककरो स्वामित्व वा कथ्यक वैधता बनबैत वा बिगाड़ैत अछि। एखन तक जे विश्वास मौखिक संबंधपर टिकने छल, ओ लिखित प्रमाण आ अभिलेखक ताकतसँ टकराइत अछि। एहि अर्थमे ई ‘दस्तावेजी नाटक’क विशेषता रखैत अछि, भले शिल्प पारम्परिक संवादप्रधान हो।

चाह आ अतिथि-सत्कार बारम्बार लौटैत अछि। आरम्भमे चाह भाइक मेलक चिन्ह अछि; बादमे अफसरक लग चाह घूसक प्रस्तावक तैयारी बनैत अछि; पुलिस आ मध्यस्थक चाह आतिथ्य आ सत्ताक समझौताक औजार बनि जाइत अछि; आ हत्या सँ पहिने बीर रामलालकें चाय-दोकानसँ अपन संग लैत अछि। एके वस्तुक अर्थक एहि क्रमिक परिवर्तनसँ नाटक रोजमर्रा जीवनमे छिपल विश्वासघातक संकेत दैत अछि।

अस्सी हजार, आठ लाख, पचास हजार, पाँच लाख आदि रकमसभ केवल सांख्यिक ब्यौरा नहि। रकमक गणित नाटकमे सत्ता-सम्बन्धक नाडर अछि: जे कागज पढ़ि सकैत अछि, अधिकारिक फाइल

तक पहुँच सकैत अछि, आ दफ्तरक लोक खरीद सकैत अछि, ओहि लोकक हिस्सा बढ़ैत अछि।
आर्थिक अन्याय तँ जमीनक मोल मात्र नहि, ज्ञान आ पहुँचक असमानतासँ सेहो जनमैत अछि।

पात्र-परख: एकरेखीय नायक-विरोधीसँ आगाँ

राम किशुन: उदारताक अभिनय आ हिसाबक हिंसा

राम किशुनक चरित्रक शिल्प दुनू स्तरपर चलैत अछि। बाहरी व्यवहारमे ओ आदरपूर्ण, मिलनसार, चाय-पानी पियाबनिहार आ अधिकारीसँ चिन्ह-पहिचान रखनिहार भाय छथि। आन्तरिक उद्देश्य आर्थिक लाभ, प्रमाणक नियन्त्रण आ चुनौती दमन अछि। ई द्वैध रङ्गमंचपर प्रभावी भऽ सकैत अछि, कारण प्रेक्षक किछु दृश्य बाद ओकर वास्तविकता जनैत छथि, मुदा लखन आ सियाराम अन्हारमे छथि। नाटकीय व्यङ्ग्यक केन्द्र एतहि अछि।

राम किशुन अपराधक कारण केवल लोभी व्यापारी नहि, व्यवस्थाक खामीक लाभ उठेनिहार पात्र छथि। ओ अभियन्ताक संग साझेदारी करैत, दफ्तरक कर्मचारीकेँ रिश्त दैत, पुलिसक मनमानीक संग सौदा करैत आ अन्ततः हत्या करबैत छथि। किन्तु अन्तमे ओकर पश्चात्ताप अचानक नैतिक परिवर्तन जकाँ उपस्थित होइत अछि। प्रश्न ई नहि जे अपराधी सुधरि सकैत अछि कि नहि; प्रश्न ई अछि जे एतेक गंभीर हिंसाक उपरान्त मात्र सार्वजनिक शर्म आ शपथकेँ पर्याप्त प्रायश्चित्त कहब कतेक विश्वसनीय अछि।

लखन आ सियाराम: विश्वासक पीड़ित, मुदा विवेकक दायित्वसँ मुक्त नहि

लखनक भोलापन नाटकक दयनीय आ आलोच्य दुनू पक्ष अछि। ओ घरक स्त्रीक तर्क सुनैत नहि छथि, पुत्रक सूचना नकरैत छथि, तथ्य जाँचबासँ कतरैत छथि। पुनः पत्नीपर हिंसा करैत छथि; एहि कारण ओकर पीड़ित होयब मात्र ओकर नैतिक निर्दोषता सिद्ध नहि करैत अछि। सियारामक भूमिका मुख्यतः सहमति, अविश्वासक विलम्ब आ छोट-छोट आशाक माध्यम अछि। दुनू पात्र बतबैत छथि जे सामाजिक अधिकारक रक्षा लेल नातेदारीक संग स्वतन्त्र जाँच आवश्यक अछि।

रामलाल: अधिकारक साहस, क्रोधक अतिरेक आ शहीदीकरण

रामलाल हेराफेरीक गणित पुछैत अछि, समाचारपत्र पढ़ैत अछि, दफ्तर जाइत अछि आ दरखास्त दैत अछि। ओकरा आधुनिक नागरिक-विवेकक वाहक कहब उचित अछि। तथापि ओकर व्यवहार पूर्णतः

अहिंसक नहि। माएक रक्षा करैत पिता पर चढ़ब, सादा कागजपर जबरदस्ती निशान लेब, क्रोधक भाषण—ई प्रसङ्ग ओकरा निर्द्वन्द्व आदर्श बनय सँ रोकैत अछि। लेखक ओकर साहसक महत्ता देखबैत छथि; समीक्षाकें एहि साहसक संग हिंसाक आलोचना सेहो जोड़य पड़त।

रामलालक हत्या पाठमे नैतिक उग्र बिन्दु अछि। मरबाक पूर्वक ओकर अपराधीकें ‘ईमानदारी’क बात कहब प्रतिरोधक भाषाक चरम रूप अछि। तथापि एकटा युवकक मृत्युकें केवल ‘भरोसाक मूल्य’कहि छोड़ब ओकर जीवित नागरिक दावाकें विस्मृत करैत अछि। अन्तिम अंकमे मृतकक स्थान झामलाल आ लक्ष्मणकें भेटैत अछि, मुदा रामलालक स्वायत्त अवाज स्मृतिमे रहि जाइत अछि।

लक्ष्मी, झामलाल आ लक्ष्मण: अनसुनी चेतावनी सँ सामाजिक नेतृत्व

लक्ष्मी आरम्भमे धरातलीय विवेकक प्रतिनिधि छथि। ओ अधिकारिक कागत बुझि कऽ देबाक सलाह दैत छथि, किन्तु पितृसत्तात्मक निर्णय ओकरा खारिज करैत अछि। तकर बाद ओ घरेलू हिंसा सहैत छथि, बेटाक हत्यासँ आहत होइत छथि, आ सार्वजनिक न्याय लेल परिवारकें प्रेरित करैत छथि। मातृत्वक शोक महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा स्त्रीक राजनीतिक बुद्धिकें केवल आँसूक पाछाँ नहि छिपायल जाउ—एहि पाठक एक आवश्यक नारीवादी पुनर्पाठ एहीमे अछि।

झामलाल अपन भाइक अभावमे पढ़ाइ, जीविका आ सामाजिक संलग्नताक चिन्ता करैत अछि। लक्ष्मणक आगमन कथानकमे संगठनक क्षमता बढ़बैत अछि। ओ व्यक्तिगत शिकायतकें जनबेसार, धरना आ जिला प्रशासनक समक्ष प्रमाणयुक्त मांगमे बदलैत छथि। तथापि निर्णायक शक्ति फेर एकटा प्रभावशाली पुरुष अधिकारीक हाथमे समर्पित भऽ जाइत अछि; जनसंगठनक उपलब्धि आ राज्यक संरक्षणक बीच तनाव अन्तिम अंकक महत्त्वपूर्ण प्रश्न अछि।

प्रशासनिक पात्र: भ्रष्ट तन्त्र आ आदर्शाधिकारीक संकट

सुशील, उमा शंकर, थाना-कर्मचारी, राजनीतिक पहुँच रखनिहार अधिकारी आ सरपंच—सभ व्यक्ति एकरूप नहि, मुदा ओकरा सभक बीच सत्ता आ रकमक सम्बन्ध बारम्बार बनैत अछि। विशेष प्रश्न जिला अधिकारी बीजेन्द्रक अछि: ओ शिकायत सुनैत छथि, दस्तावेजक अर्थ बुझैत छथि, मुदा पुलिसिय मारि-पीट आ गैर-न्यायिक दण्डक समर्थन करैत छथि। ओकर ई अन्तरविरोध नाटककें एकदम सरल ‘ईमानदार अधिकारी बनाम भ्रष्ट समाज’क ढाँचामे रखब सँ रोकैत अछि।

संवाद, बोली, समय आ रङ्गमंचीय संरचना

संवाद नाटकक प्रमुख बल अछि। परिजनक घरेलू बातचीतमे मैथिलीक अपनत्व, उलाहना आ कटुता अछि; थाना आ दफ्तरमे मिश्रित कार्यालयी बोली, हिन्दी-प्रभावित वाक्य आ हुक्मी स्वर अछि; अपराधी गिरोहक संवादमे धमकी आ गर्व अछि। एहि सामाजिक-भाषिक अन्तरक कारण एके मंचपर अलग-अलग शक्ति-सम्बन्ध सुनाइ पड़ैत अछि। किन्तु किछु पात्रक दीर्घ उपदेशक कारण संवाद अभिनयक जीवित टक्कर छोड़ि घोषणापत्र जकाँ सेहो भऽ जाइत अछि।

तीन अङ्क आ चालीस दृश्यक विस्तार सामाजिक परिसरक जटिलता देखबैत अछि। छिन्न-भिन्न स्थान—दलान, ओसारा, चाह-दोकान, भू-अर्जन कार्यालय, थाना, सरपंचक बैठक, समाहरणालय, अपराधीक अड्डा, सामुदायिक भवन—सामाजिक नाटकक बहुस्तरीय मानचित्र बनबैत अछि। मुदा लगातार प्रवेश-प्रस्थान, पर्दा-परिवर्तन आ लम्बा कार्यालयी वार्तालापक कारण पूर्ण मंचनमे समय, दृश्य-संयोजन आ गति चुनौतीपूर्ण होयत।

नाटकमे पृष्ठभूमिक हिंसा नहि, प्रत्यक्ष मंच-निर्दिष्ट मारि-पीट आ हत्या देल अछि। एहि परम्परागत लोकनाट्य-जकाँ प्रभावक संग आधुनिक रङ्गमंचक प्रश्न जुड़ैत अछि: भयंकर हिंसाकेँ सीधे मंचपर देखाएब वा ध्वनि, प्रकाश, नेपथ्य आ प्रतिक्रियाक माध्यमसँ संकेत करब? उचित रंग-व्यवस्थासँ घटना प्रभावशाली भऽ सकैत अछि; अत्यधिक प्रत्यक्ष हिंसा नाटकक सामाजिक प्रश्नकेँ सनसनीमे बदलि सकैत अछि।

परिहासक स्तरपर चाहबला लालूक बारम्बार ‘माने जे’, थानाक गप-सप आ अधिकारीक औपचारिकता दृश्यगत विश्राम दैत अछि। मुदा रामलालक हत्या सँ बाद अनावश्यक हास्य अथवा मारि-पीटक प्रदर्शन करुण प्रभावकेँ तोड़ि सकैत अछि। नाट्यरूपान्तरणमे सन्तुलित सम्पादन सम्भव अछि; मूल पाठक पूर्ण अध्ययनमे ई घटनासभ हटेनाइ उचित नहि।

अर्थ-व्यवस्था, सत्ता, जाति-वर्ग आ नागरिकता

भूमि-अधिग्रहणक घटना आधुनिक विकासक अँतरी सच्चाइ प्रस्तुत करैत अछि: सड़क सार्वजनिक सुविधा मानल जाइत अछि, मुदा सड़क बनबाक प्रक्रिया ककरो बास-डीह, खेती, घर आ सामाजिक स्थिरता हटा दैत अछि। मुआवजा एहन स्थितिमे महज कीमत नहि, विस्थापित जीवनक पुनर्वासक

साधन अछि। नाटक एहि सवालकेँ जमीनक किनबेचसँ आगाँ घर बनाबय, कर्ज चुकाबय, परिवार बसाबय आ पढ़ाई कराबयक प्रश्नमे विस्तार दैत अछि।

कथामे सत्ता धरि पहुँच आत्मीय व्यवहार, दारू-पार्टी, पहिचान आ रुपैयाक आदान-प्रदानसँ बनैत अछि। भ्रष्टाचार एकटा एकाकी पात्रक चरित्र-दोष नहि, विभिन्न संस्थाक जाल बनिकऽ अबैत अछि। एकर सामाजिक असर गरीब पर बेसी पड़ैत अछि: जे स्वतन्त्र वकील, दस्तावेजी प्रमाण वा दफ्तरक कागज तक पहुँच नहि राखैत अछि, ओकरा ‘विश्वास’क मूल्य अपन सर्वस्वसँ चुकाबय पड़ैत अछि।

दूसरी दिशा मे जनसंगठन आ लिखित आवेदन नाटकक लोकतान्त्रिक ऊर्जा अछि। रामलालक पत्र आ लक्ष्मणक सामूहिक बैठक कहल जाइत अछि जे प्रमाण, सार्वजनिक समर्थन आ लिखित अभिलेखक बिनु अपमानित नागरिकक आवाज दबि सकैत अछि। मुदा राज्यक न्याय स्वयं कानूनक सीमामे रहनाइ चाही। नाटक एहन मान्यता प्रस्तावित करैत अछि कि कठोर शासक नैतिक न्याय दिला सकैत अछि; आलोचनात्मक पाठ पुछैत अछि जे हिंसक अधिकारीक हाथमे गरीबक अधिकार अन्ततः केना सुरक्षित रहत?

न्याय, दण्ड आ अन्तक द्विविधा

अन्तिम जनता दरबार आर्थिक प्रतिकारक दृश्य अछि। चारि दोषीक दस लाखक देनदारी समाजक समक्ष तय होइत अछि; भुगतान साक्षीसभक सामने होइत अछि। मंचीय दृष्टिसँ ई ‘प्रत्यक्ष निर्णय’क संतोष दैत अछि। मुदा अपराधक प्रकृति—सार्वजनिक मुआवजाक कृत्रिम वृद्धि, रिश्तत, दस्तावेजक दुरुपयोग, सुपारी, हत्या—प्रत्येक लेल स्वतन्त्र जाँच, विधिसम्मत अभियोजन आ पीड़ित परिवारक अधिकारक प्रश्न बनैत अछि। आर्थिक समझौता ओहि सभक विकल्प नहि।

अभियुक्तसभकेँ मारि कऽ स्वीकारोक्ति लेब, कथित अपराधी गिरोहकेँ बिना अदालती प्रक्रिया समाप्त करब, आ अधिकारीक ‘दण्ड-दाता’ बनब—ई स्थिति न्याय-सिद्धान्तक दृष्टिसँ गंभीर आलोचनाक विषय अछि। लेखकक आशय भ्रष्टाचार-विरोधी न्याय सम्भवतः अछि, मुदा साधनक मर्यादा सेहो न्यायमे अनिवार्य अछि। उचित सामाजिक समाधान केवल सजाय देब नहि, दोष-सिद्धिक पारदर्शी प्रक्रिया, असल पीड़ितक पुनर्वास आ भविष्यक संस्थागत सुधार होयबाक चाही।

लखनक अन्तिम प्रश्न सर्वाधिक सशक्त मानवीय प्रश्न अछि—क्षतिपूर्ति बेटेकेँ जीवित नहि आनैत। ई पङ्क्ति नाटकक आदर्शवादी समाप्तिक भीतर अधूरापन सुरक्षित राखैत अछि। राम किशुनक सार्वजनिक माफी भावनात्मक दृश्यक समापन करैत अछि, मुदा एकटा ‘माफी’ सँ विश्वास फेर तुरन्त

बहाल भेल मानब नाटकक अपन घटनाक वजनकेँ हलुक करैत अछि। नाटकक सर्वोत्तम आलोचनात्मक अर्थ ई नहि जे अन्तमे सभ ठीक भऽ गेल; बल्कि ई जे सामाजिक विश्वास भंगलापर आर्थिक न्यायो सम्बन्धक अपूरणीय क्षति नहि मेटा सकैत अछि।

मैथिली नाट्यपरम्परा आ बाल-साहित्यक तुलनात्मक सन्दर्भ

मैथिली नाट्यक अध्ययने ‘बिसवासघात’केँ सामाजिक भ्रष्टाचार आ ग्रामजीवनक यथार्थपरक दीर्घ नाटकक धरातलपर पढ़ल जाएबाक चाही। विदेह अङ्क ८२ (१५ मई २०११) मे आशीष अनचिन्हारक बेचन ठाकुरक ‘छीनरदेवी’ विषयक समीक्षा उपलब्ध अछि। ओहि समीक्षामे लेखक बेचन ठाकुरक ग्रामीण रंगमंच-संलग्नता आ नाटकक सामाजिक प्रश्नपर चर्चा करैत छथि। एहि स्वतन्त्र सन्दर्भसँ बेचन ठाकुरक नाट्यरुचि आ सामाजिक विषयक निरन्तरता देखबाक एकटा मार्ग भेटैत अछि; मुदा ‘छीनरदेवी’ आ ‘बिसवासघात’क कथ्य समान अछि, एहन दावा नहि कएल जा सकैत।

विदेहक शोध-सूचीमे रमेश रञ्जनक ‘मैथिली बालनाटक सीमा विस्तार करैत—चौआरि’ (अङ्क १२६, २०१३) बालनाट्य-चर्चाक एकटा अभिलेख अछि। फूलचन्द्र झा ‘प्रवीण’क ‘मैथिली शिशु लोक साहित्य’ (अङ्क ५०, २०१०), योगानन्द झाक ‘मैथिली बाललोककथा: स्थिति आ अपेक्षा’ (अङ्क ७६, २०११) तथा दुर्गानन्द मण्डलक ‘नेना लेल सुन्दर चित्रकथा’ (अङ्क ११६, २०१२) सँ बालसाहित्यक भीतर लोककथा, चित्रकथा आ बालनाट्यक अलग-अलग विधागत उपस्थिति स्पष्ट होइत अछि। ई उदाहरण एकटा सम्पूर्ण कालक्रम नहि, बल्कि विदेहमे उपलब्ध प्रमाणित प्रतिनिधि पढ़ाव छथि।

बालसाहित्यक एकटा कसौटी भाषा आ जिज्ञासाकेँ बालकक अनुभव-संसार अनुरूप गढ़ब अछि; दोसर कसौटी विषयगत हिंसा, भय, विचारक जटिलता आ प्रस्तुतीकरणक उपयुक्तता अछि। ‘बिसवासघात’मे घरेलू मारि-पीट, हत्या, घूसखोरी, अपराधी गिरोह, अत्यधिक लम्बा कार्यालयी संवाद आ कानूनक विवाद अछि। तँ एकरा बिना रूपान्तरण बाल-पाठ अथवा बाल-नाटक कहब विधागत भूल होयत। हँ, एकर किछु प्रसङ्ग—कागज बुझि कऽ हस्ताक्षर करब, सत्यापन, शिक्षाक मूल्य, सामाजिक सहायता, अधिकार-बोध—किशोर नागरिकता-शिक्षाक चर्चामे चयनित रूपेँ प्रयुक्त भऽ सकैत अछि।

विदेह अङ्क ४४७ (अगस्त २०२६) मे गजेन्द्र ठाकुरक ‘मैथिली बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्र’ बालविधाक बहुस्तरीय संरचनाक चर्चा करैत अछि। एहि तुलनात्मक सन्दर्भक उपयोग ‘बिसवासघात’केँ बालउपन्यास बनय लेल नहि, बल्कि बालकक दृष्टिकोण, बालोपयुक्त पाठ आ वयस्क सामाजिक

नाटकक अन्तर चिन्हय लेल कएल गेल अछि। बाल-नाट्यक प्रयोगमे जँ ई कथासूत्र रूपान्तरित हो, तँ घटना-संक्षेप, हिंसाक अप्रत्यक्ष संकेत, सामूहिक निर्णय, स्त्री-पात्रक सक्रिय विवेक आ विधिसम्मत न्यायक चर्चा अनिवार्य बनत।

मैथिली बालसाहित्यक इतिहास लिखैत काल लोकमौखिक परम्परा, पत्रिकाक प्रयोग, चित्रकथा, बालगीत, बालनाटक आ आधुनिक बालउपन्यासकँ एक धागामे बान्हि कऽ सेहो ओकर विधागत अन्तर मेटायब नहि चाही। बेचन ठाकुरक ई नाटक एहि इतिहासक ‘प्रत्यक्ष बाल-पाठ’ नहि, वयस्क रंगमंचक सामाजिक सन्दर्भग्रन्थ अछि; एकरा बालसाहित्यक इतिहासमे रखबाक औचित्य केवल सीमारेखा आ सम्भावित किशोर-रूपान्तरणक विवेचन धरि अछि।

उपलब्धि आ सीमा: समालोचनात्मक निष्कर्ष

ई नाटकक प्रथम उपलब्धि भ्रष्टाचारकँ सूक्ष्म लेन-देन आ सामाजिक आदर-सत्कारक रूपमे देखायब अछि। दोसर उपलब्धि किसान परिवार, घरक स्त्री, पढ़ल-लिखल नवयुवक, मध्यस्थ, पुलिस, अभियन्ता, कर्मचारी आ ग्रामसमाजकँ एकटा नाटकीय मानचित्रमे जोड़ब अछि। तेसर उपलब्धि रकमक ठोस गणित आ प्रमाण-प्रश्नसँ कथानककँ सामाजिक विश्वसनीयता देब अछि। चारिम उपलब्धि ई अछि जे लखनक पश्चात्ताप आर्थिक क्षतिपूर्तिसँ गहीर मानवीय शून्यक अनुभव बनैत अछि।

सीमासभ सेहो महत्वपूर्ण छथि। किछु घटना अत्यधिक संयोग आ अत्यधिक प्रभावशाली अधिकारीपर निर्भर छथि; अनेक दृश्य एके संदेश दोहरबैत अछि; आ एक-दू पात्रक नैतिकता कथाक सुविधानुसार अचानक बदलैत बुझाईत अछि। रामलालक सच्चाई ओकर हिंसक व्यवहारक आलोचनाकँ नकारि नहि सकैत; बीजेन्द्रक भ्रष्टाचार-विरोधी मुद्रा ओकर दण्डात्मक हिंसाकँ वैध नहि करैत; राम किशुनक क्षमा-याचना विधिसम्मत उत्तरदायित्वक स्थान नहि लऽ सकैत।

समग्रतः ‘बिसवासघात’कँ मैथिली सामाजिक नाटकक एहन पाठ मानल जा सकैत अछि जे विश्वासक भङ्ग, राज्यक तन्त्र, विकासक अर्थनीति आ न्यायबोधक बीच नाटकीय टक्कर उत्पन्न करैत अछि। एकर पाठकीय महत्त्व केवल अपराधीकँ दण्ड भेटब नहि, बल्कि ई प्रश्न जीवित राखब अछि जे निजी विश्वास, लिखित प्रमाण, सामूहिक जनबल आ न्यायिक मर्यादा परस्पर कतेक दूर धरि सहायक—अथवा विरोधी—भऽ सकैत अछि।

संवादक मार्मिकता

“हमरा राम किशुनपर पूरा बिसवास अछि” — लखन, पहिल अंक, दोसर दृश्य।

“नोटिसपर जे रेट अछि ओकर दस गुना धरि हम बढ़ा सकै छी।” — उमा शंकर, पहिल अंक, पाँचम दृश्य।

“हम ऑफिस जेबे करब, जेबे करब, जेबे करब।” — रामलाल, पहिल अंक, नअम दृश्यक अन्त।

“दुनियाँमे पढ़ाइसँ पैघ कोनो धन नै छै।” — लक्ष्मण, तेसर अंक, नअम दृश्य।

“हमरा पाइ बड्ड भेटल। मुदा ओहि पाइसँ हमर बेटा घुमि आएत की?” — लखन, तेसर अंक, नअम दृश्य।

एहि पाँच उद्धरणमे प्रकाशित रूपक छोट-छोट विविध उच्चारण/वर्तनी यथासम्भव सुरक्षित राखल अछि; आलोचनात्मक गद्यक मानकीकृत वर्तनीकेँ मूल वक्ताक उद्धरण पर आरोपित नहि कएल गेल अछि।

चालीस दृश्यक क्रमिक विवेचन

नीचाँ प्रत्येक दृश्यक कथा-वस्तु आ ओकर नाटकीय कार्यक संक्षिप्त पृथक परख देल गेल अछि।

पहिल अङ्क: दृश्यवार विवेचन

दृश्य १: तीनू भाइक चाह-गप आ अधिग्रहणक नोटिस। राम किशुन दुआरा कागज अपन जिम्मामे लेबाक प्रस्ताव विश्वासक प्रथम नाटकीय बिन्दु अछि।

दृश्य २: लक्ष्मी कागज बुझि-समझि कऽ देबाक सलाह दैत छथि; लखनक स्त्री-विरोधी अवहेलना आगूक हानि सँ जुड़ैत अछि।

दृश्य ३: होलीक आयोजनमे पुलिस-अधिकारी, वकील आ मध्यस्थक मेल। आत्मीय भोज प्रशासनिक संरक्षणक पृष्ठभूमि बनबैत अछि।

दृश्य ४: भू-अर्जन कर्मचारी सुशील संग चाह-दोकानक संवाद। घूसक प्रस्ताव अभावक सहानुभूति आ व्यावहारिकता रूपेँ वैध करबाक कोशिश अछि।

दृश्य ५: अभियन्ता उमा शंकर मुआवजा दस गुना करबाक मूल्य तय करैत अछि। धनराशिक ठोस गणित कथानकक आर्थिक आधार अछि।

दृश्य ६: सुशील आ चपरासी बिन्देश्वरक रिश्त तथा चेक-प्रक्रिया। कार्यालयी फाइल अपराधक वैधताक मुखौटा बनैत अछि।

दृश्य ७: रामलाल अखबारसँ भुगतानक जानकारी पाबैत अछि। पिता-पुत्रक पीढ़ीगत विवाद ज्ञान बनाम आज्ञापालनक प्रश्न बनैत अछि।

दृश्य ८: राम किशुन जलखै आ चाहसँ भाइसभक भरोसा फेर पक्का करैत अछि, रामलालकेँ उतावल कहल जाइत अछि।

दृश्य ९: राम किशुन खोटा हिसाब देखबैत अछि; रामलाल कार्यालय जाँचबाक दृढ़ निश्चय करैत अछि।

दृश्य १०: कार्यालयमे घूसक अनुभवक बाद वास्तविक आठ, दस आ चौदह लाख भुगतानक जानकारी प्रकट होइत अछि।

दृश्य ११: रामलाल तथ्य बतबैत अछि; सियारामक मूर्छा आ राम किशुनक अस्वीकारसँ नाटकीय तनाव बढ़ैत अछि।

दृश्य १२: सरपंच लग शिकायत; मामला पारिवारिक विवादसँ औपचारिक सार्वजनिक विवाद बनैत अछि।

दृश्य १३: नोटिस भेटलापर राम किशुनक राजनीतिक-सामाजिक बचाव सक्रिय होइत अछि।

दृश्य १४: पहिल पंचायतमे प्रमाण-अभाव आ लखनक असहयोग रामलालक दावाकेँ कमजोर करैत अछि।

दृश्य १५: घरक भीतर कलह, लक्ष्मीपर हिंसा, पिता-पुत्रक मारि-पीट आ जबरदस्ती निशान लेबाक घटना; नैतिक संघर्ष जटिल भऽ जाइत अछि।

दोसर अङ्क: दृश्यवार विवेचन

दृश्य १: लखन अपन बेटासँ डरि राम किशुनक शरण लैत अछि; छलक जाल परिवारकेँ फेर घेरैत अछि।

दृश्य २: रामलाल अनुमण्डल आ जिला अधिकारीक लग पत्र दैत अछि; अधिकारक संघर्ष दफ्तर धरि फैलैत अछि।

दृश्य ३: शिकायतक सरकारी पत्र विभिन्न कार्यालय सँ थानापर पहुँचैत अछि; प्रशासनिक कड़ी स्पष्ट होइत अछि।

दृश्य ४: पुलिस राम किशुनक घर जाँच करैत अछि; आतिथ्य आ दबावक बीच सत्यक खोज डगमगाइत अछि।

दृश्य ५: थाना-डायरीकेँ ढीला रखबाक रकमक चर्चा न्यायिक विश्वसनीयताक विघटन देखबैत अछि।

दृश्य ६: जिला अधिकारी प्रमाणक आग्रह करैत छथि; राम किशुन पैरबीक नव उपाय ताकैत अछि।

दृश्य ७: प्रभावशाली पुलिस-संपर्कक माध्यमँ जाँच मोड़बाक चेष्टा; रिश्तत राजनीतिक शक्ति धरि पहुँचैत अछि।

दृश्य ८: जिला अधिकारी सन्देह प्रकट करैत छथि; पुलिसक चेतावनी आ अनैतिक लेनदेन खुलि जाइत अछि।

दृश्य ९: बीर रामलालकेँ हटेबाक घातक प्रस्ताव दैत अछि; आर्थिक अपराध हिंसक अपराधक रूप लैत अछि।

दृश्य १०: रामलाल, झामलाल, लक्ष्मी आ बीरक बातचीत; चाह-दोकान मज्ज पर छलक तैयारी करैत अछि।

दृश्य ११: राम किशुन आ बीर अपराधी सरदार राजासँ हत्या करबाबयक करार करैत अछि।

दृश्य १२: बीर रामलालकेँ लऽ जाइत अछि; गिरोह ओकर हत्या करैत अछि। ई नाटकक त्रासदीक चरम बिन्दु अछि।

दृश्य १३: रामलालक अनुपस्थिति सँ लक्ष्मी आ झामलाल चिंतित; पुलिससम्बन्धी चर्चा बीच घरक भय बढ़ैत अछि।

दृश्य १४: मामा लक्ष्मणक सक्रियता आ बीरपर सन्देह; निजी शोक जाँचक इच्छामे बदलैत अछि।

दृश्य १५: परिवार राम किशुनसँ मदति माँगैत अछि; अपराधी अपन भूमिका नुकबैत अछि।

दृश्य १६: अपराधी गिरोहमे शेष रकमक व्यवहार; सुपारीक साङ्गोपाङ्ग पुष्टि प्रेक्षककेँ भेटैत अछि।

तेसर अङ्क: दृश्यवार विवेचन

दृश्य १: मामाक पहल, पुलिस-शिकायतपर बहस आ राम किशुनक दोहरी प्रतिक्रिया।

दृश्य २: सामाजिक बैसार करबाक आयोजन; नागरिक संगठनक प्रारम्भिक रूप।

दृश्य ३: सामुदायिक भवनमे पंचायत, लक्ष्मीक बयान आ क्षतिपूर्तिक प्रस्ताव; राम किशुन जनमत मानैत नहि।

दृश्य ४: धरना-प्रदर्शन, आवेदन आ अधिकारीसँ न्याय-माँग; निजी शोक सार्वजनिक राजनीति बनैत अछि।

दृश्य ५: पुलिस-जिला-अधिकारीक कठोर कार्रवाई; भ्रष्टाचार-विरोधी भाषण आ बल-प्रयोगक विरोधाभास।

दृश्य ६: अभियुक्तसँ व्यवहारमे अपमानजनक हिंसा; न्यायिक मर्यादाक आलोचनाक सर्वाधिक आवश्यक स्थल।

दृश्य ७: प्रशासनिक परामर्श आ जनता दरबारक तैयारी; समाधान उच्च अधिकारीपर केन्द्रित होइत अछि।

दृश्य ८: अपराधी गिरोहक समाप्तिक समाचार आ जनता दरबारमे चारि दोषीपर कुल दस लाखक देनदारी।

दृश्य ९: शिक्षामे निवेशक प्रस्ताव, आर्थिक भुगतान, जनप्रशंसा, लखनक शोक आ राम किशुनक क्षमा-याचना; क्षतिपूर्तिक सीमा उघड़ैत अछि।

०६ / ०६

भअँट

लोकतन्त्र, चुनावी सत्ता आ सार्वजनिक रंगमंच

लोकतन्त्रक सार्वजनिक रंगभूमि

मैथिली नाट्यपरम्परामे गामक चौबट्टी, दलान, सार्वजनिक सभा, मेल-मिलाप, लोकगीत, ठिठोली आ सामूहिक विवादक अनुभव रंगमंचीय संवादकें निरन्तर शक्ति दैत रहल अछि। बेचन ठाकुरक ‘भअँट’ एहि सार्वजनिक जीवनक एकटा विशिष्ट राजनीतिक क्षण—संसदीय चुनाव—कें नाटकक केन्द्र बनबैत अछि। शीर्षकमे प्रयुक्त ‘भअँट’ नाटकक भीतर मतदान, मतदानक अधिकार, मतक खरीद-बिक्री आ लोकमतक अर्थक प्रश्नसँ जुड़ैत अछि। रचनाक अपना मुखपृष्ठपर सामाजिक आ राजनीतिक नाटक होयबाक परिचय देल गेल अछि। ताहि आधारपर एकर विधा-निर्धारण राजनीतिक प्रहसनमूलक सामाजिक नाटक रूपमे उचित अछि; एकरा बालनाटक कहल जाएब पाठ-साक्ष्यक प्रतिकूल होयत।

नाटक पहिने प्रत्याशी सभक घर-परिवार आ सलाहकारक अन्तरङ्ग गोष्ठी देखबैत अछि; फेर निर्वाचन आयोगक कार्यालय, नामांकनक कागजी प्रक्रिया, प्रचार-मञ्च, पंचायत भवन, थाना, मतदान केन्द्र, चाह-दोकान, भगवती-मन्दिर आ समाहरणालय धरि सार्वजनिक संस्थानसभकें रंगस्थल बनबैत अछि। निजी आकाङ्क्षा धीरे-धीरे संस्थागत संकट आ सामुदायिक निर्णयमे बदलैत अछि। एहि गतिमे शासक, अधिकारी, सुरक्षाकर्मी, दलाल, नेता-सहयोगी, महिला प्रत्याशी आ मतदाता परस्पर निर्भर छथि। एहि कारणे पाठक महत्त्व एकटा ‘सही नेता’ चुनबाक शिक्षा मात्रमे नहि, बल्कि लोकहितक भाषा कोना अवसरवादक आड़ बनि सकैत अछि, तकर नाटकीय परीक्षणमे अछि।

कथ्य-विन्यास: पाँच प्रत्याशी आ सार्वजनिक संसार

पात्र-परिचयमे एक सय एक क्रमाङ्कित भूमिका अछि। पाँच प्रमुख प्रत्याशी छथि—गोबर्धनलाल, फीरन, ब्रजेश, सुभद्रा आ विवेक। गोबर्धनलाल आदर्शवादी राजनीतिक आकाङ्क्षा आ आर्थिक दुर्बलताक मिश्रण छथि; फीरन पूर्व चुनावी असफलता आ परनिर्भर आर्थिक जोगाड़क चित्र; ब्रजेश पदस्थ सांसदक रूपमे सत्ताक अहङ्कार आ संसाधनक प्रभुत्व; सुभद्रा सार्वजनिक सेवा, संयम आ स्त्री-राजनीतिक भागीदारीक पक्ष; आ विवेक हिंसक शक्ति-प्रदर्शन आ अराजक अवसरवादक प्रतिनिधि। पात्रसभकेँ ठोस मनुष्यक अपेक्षा समाजक विशिष्ट प्रवृत्तिक रंगमञ्चीय चिह्न रूपमे गढ़ल गेल अछि, तथापि किछु प्रसंगमे मनोभावक सूक्ष्मता सेहो देखाइत अछि।

गोबर्धनलालक घरक आरम्भिक गप-शप मिठाइक ठिठोलीसँ खोलैत अछि; चुनाव लड़बाक सम्भावना सामने अयिते पैसाक अभावक चिन्ता उभरैत अछि। फीरनक घरमे पूर्व पराजय आ जमीनक क्षयक अनुभवकेँ राकेशक गोपनीय आर्थिक आश्वासन चुनावी सौदेबाजीमे बदलि दैत अछि। ब्रजेशक आवासपर सत्ताविरोधी जनभावनाक समाचारक प्रति हुनकर अरुचि, निजी विकासक अभिलाषा आ समर्थक जुटेबाक वित्तीय छल-योजना खुलैत अछि। सुभद्राक बैठकीमे पूर्व पराजयक भावनात्मक घाव आ अनैतिक व्ययक प्रतिरोध राजनीतिक व्यक्तित्वक भीतरी संघर्ष रूपमे प्रकट अछि। विवेकक ठाम मदिरापान आ बाहुबलक बड़बोलापन नाटकक संकट-रेखाकेँ आर तीक्ष्ण बनबैत अछि।

एहि पाँच आरम्भिक परिचयमे प्रत्येक प्रत्याशी अपन दल वा साथीकेँ सुनबैत छथि, मुदा ओकरा सँ अधिक पाठककेँ राजनीतिक व्यवस्था सुनाइत अछि। गोबर्धनलालक असमर्थता, फीरनक आकाङ्क्षा, ब्रजेशक अहङ्कार, सुभद्राक नैतिक द्वन्द्व आ विवेकक खुलल हिंसात्मक धमकी—ई पाँच स्वर मिलिकय लोकतन्त्रक उपलब्ध सम्भावनासभक एकटा नैतिक नाप-बटखरा बनबैत अछि।

दृश्य-अनुक्रमक पृथक पाठविश्लेषण

गोबर्धनलालक दलान: लोकहित आ चुनावी पूँजी

आरम्भमे मिठाइक बहन्ने चलैत मित्रक हास-परिहास सामाजिक आत्मीयताक बुनियाद रचैत अछि। जाहि क्षण चुनाव लड़बाक प्रस्ताव अबैत अछि, विनोद आर्थिक आशङ्कामे बदलि जाइत अछि। गोबर्धनलालक योग्यताक प्रशंसा आ चुनाव जीतबाक धन-साधनक वास्तविकता बीच दूरी अछि। एक बीघा खेत बेचबाक सम्भावना ई बतबैत अछि जे सार्वजनिक प्रतिनिधित्वक प्रवेशद्वार स्वयं आर्थिक

विनाशक जोखिम बनि सकैत अछि। रामेश्वरक भोजनक आग्रह आ जीतेन्द्रक नैतिक उपदेश एक्कहि समूहक भीतर सहयोग तथा स्वार्थक मिश्रित उपस्थिति स्पष्ट करैत अछि।

फीरनक घर: हारक इतिहास आ प्रायोजित प्रत्याशिता

फीरन पूर्व मुखिया चुनावक बारम्बार हार आ जमीन बिकबाक उल्लेख करैत छथि। एहन परिस्थितिमे ब्रजेशक निकट सहयोगी राकेशक पहुँचनाइ महत्त्वपूर्ण नाट्य-उलटफेर अछि। सहयोगक प्रस्ताव स्वतन्त्र जनसेवाक भाषा अपनबैत अछि, मुदा आर्थिक आश्वासन एहि उम्मीदवारकें शक्तिशाली प्रतिद्वन्द्वीक योजना मे बाँधि दैत अछि। राकेशक परोक्ष अभिप्राय—मत विभाजन अथवा चुनावी गणितपर प्रभाव—संवाद-परिस्थितिसँ अनुमानित अछि; एतय एकरा प्रमाणित घोषित उद्देश्य मानल नहि गेल अछि।

ब्रजेशक आवास: जनसम्पर्कसँ विमुख सत्ताक चरित्र

सुरेश आ राकेश क्षेत्रक असन्तोष सुनबैत छथि। ब्रजेश जनताक विवेककें कम आँकैत छथि आ चुनाव लगपास होइतहि प्रलोभनक योजना पर भरोस करैत छथि। अंगरक्षकक निद्रा-सपना हास्यक स्वायत्त दृश्य रचैत अछि, जे सत्ता-केन्द्रक अव्यवस्था आ आत्मतुष्टिक संकेत सेहो बनैत अछि। राकेशक हाथमे चुनावी धन पहुँचबाक पछाति ओकर निजी हिस्सा रखबाक मानसक खुलासा मध्यस्थक भ्रष्टाचारकें प्रत्यक्ष बनबैत अछि: बड़ भ्रष्टाचारक अवसर छोट स्तरपर पुनः उत्पन्न होइत अछि।

सुभद्राक आवास: पराजयक व्यथा आ नैतिक विकल्प

पूर्व चुनावमे अत्यल्प अन्तरसँ हारल सुभद्राक भावुक प्रतिक्रिया हुनका आदर्शक निश्चेष्ट प्रतिमा नहि रहए दैत अछि। उमाकान्त व्यावहारिक जीत लेल खर्च आ संघर्षक तर्क रखैत छथि; सुभद्रा अनुचित साधनसँ दूरी चाहैत छथि। अपन राजनीतिक वंशपरम्परा आ अविवाहित जीवनक उल्लेख सेहो प्रसंगमे अछि। एतय समीक्षा लेल आवश्यक सावधानी ई जे स्त्रीक जनसेवाकें विवाह-त्यागसँ मात्र नैतिक वैधता दैब पितृसत्तात्मक मूल्यांकनक पुनरावृत्ति कऽ सकैत अछि। सुभद्राक विशेषता हुनकर निर्णयक्षमता, सेवा आ चुनावी आचरणमे देखी, जीवन-विकल्पक अनिवार्य त्यागमे नहि।

विवेकक अड्डा: हिंसाक उन्मुक्त भाषा

विवेकक टोली बम, हथियार, बूथ-कब्जा आ निजी सम्पत्ति अर्जनक कल्पना करैत अछि। विकृत राजनीतिक महत्वाकाङ्क्षा हास्य, मदिरापान आ फूहड़ गीतक संग चलैत अछि। एहन भाषिक आवेग

दर्शककेँ हँसाबैत जरूर अछि, मुदा लोकतन्त्रक सशस्त्र अपहरणक आशङ्का सेहो जगबैत अछि।
हिंसाक ई प्रारम्भिक घोषणा बादमे मतदान केन्द्रक रक्तपातसँ कथानकीय सम्बन्ध बनबैत अछि।

निर्वाचन आयोग: प्रशासनिक समस्या आ नाटकीय विवेचना

आयुक्त रामप्रताप आ उपयुक्त गिरिराज मतदानक बाधा सभक क्रमिक सूची बनबैत छथि—बूथ लूट, मत-पेटी वा यन्त्रक हेराफेरी, प्रशिक्षणक अभाव, दूरदराज क्षेत्रमे पहुँच, समय-व्यवस्था, मत-खरीद आ सुरक्षासम्बन्धी संकट। ई प्रकरण नाटकक भीतर नीति-संवादक स्थान ग्रहण करैत अछि। एकर शक्ति प्रशासनिक खामी सभकेँ राजनीतिक घटनासँ पहिले चिन्हित करब अछि; कमजोरी ई जे सूची-वाचन कतेको ठाम नाटकीय टकरावक बदलामे व्याख्यान बनि जाइत अछि। कार्यालयक निम्न कर्मचारीक झगड़ा अन्तमे व्यवस्था-सुधारक भव्य भाषणकेँ व्यावहारिक मानव-दुर्बलतासँ टकरा दैत अछि।

नामांकन कार्यालय: दस्तावेज, सिफारिस आ छोट स्तरक वसूली

नामांकनक लम्बा दृश्य पाँच दलक भिन्न-भिन्न व्यवहारकेँ एककहि प्रशासनिक तन्त्रपर परखैत अछि। गोबर्धनलालसँ छोटी त्रुटि सुधरबाओल जाइत अछि; फीरन स्वयं फारम भरबामे असहज छथि आ पदाधिकारीक कृपा पर निर्भर छथि; ब्रजेशक आवेदनमे विशेषाधिकारक छाप उभरैत अछि; सुभद्रा तुलनात्मक स्पष्टतासँ अपन आवेदन तैयार करैत छथि; विवेकक दबंगई नियमपालनक प्रश्नक हिंसक उत्तर बनैत अछि। चपरासी राघवक अपेक्षित चढ़ाई, कर्मचारीक असहायता आ औपचारिक नियमक असमान अनुपालन नाटकक सशक्त संस्थागत व्यंग्य अछि। एतय ‘कागज’ लोकप्रतिनिधित्वक प्रवेश-द्वारो अछि आ भ्रष्टाचारक रोजमर्रा अवसर सेहो।

गोबर्धनलालक सभा: गुणवर्णनक अतिशयोक्ति

समर्थक गोबर्धनलालक ईमानदारी, कर्मठता आ जनसम्बन्धकेँ निर्वाचन योग्यताक आधार कहैत छथि। भाषा स्तुतिपरक अछि आ विजयक पूर्वघोषणासँ भरल अछि। आरम्भिक आर्थिक संकट देखल पाठक लेल ई मंचीय प्रशंसा द्विअर्थी बनि जाइत अछि—उम्मीदवारक वास्तविक योग्यता होइतो भीड़-संचालन ओकरा नारा-बद्ध करैत अछि।

फीरनक सभा: गीत, घोषणापत्र आ अवसर

फीरनक दलक गीतधर्मी प्रचार लोकधुनक आवृत्ति आ नारा-लय उपयोग करैत अछि। जनसेवा, शिक्षा, सड़क आ धार्मिक सहअस्तित्वक सामान्य वचन राजनीतिक वाणीकेँ आकर्षक बनबैत अछि; मुदा पर्दाक पाछाँ चलल आर्थिक सौदा ई वचनसभ पर संशयक छाया छोड़ैत अछि। एतय प्रस्तुति आ अभिप्रायक दूरी आलोचनाक विषय अछि।

ब्रजेशक सभा: उपहारक अर्थतन्त्र आ असम्भव प्रतिज्ञा

वस्त्र वितरण आ अत्युक्तिपूर्ण लाभ-योजनाक घोषणासँ सभा हास्यास्पद बनैत अछि। जे लोककेँ उपहार नहि भेटैत अछि, ओकरा खाली हाथ फेरि जेबाक दृश्य प्रलोभनक सीमित आपूर्ति देखबैत अछि। शासनक वास्तविक उत्तरदायित्व सामाजिक वस्तु वितरणक असम्भव वादाक भीड़मे दबि जाइत अछि। प्रतिज्ञासभक अतिशयोक्ति व्यंग्यक औजार अछि; एकरा वस्तुनिष्ठ सरकारी नीति-सूची बुझब भूल होयत।

सुभद्राक सभा: न्यून भाषण, उत्तरदायित्वक आग्रह

माला मताधिकारक विवेकपूर्ण उपयोगपर बल दैत छथि; सुभद्रा धनलोभक प्रत्युत्तरमे जनसम्बन्ध आ काजक बात रखैत छथि। अघोषित रूपसँ ई सभा पूर्ववर्ती तीन प्रचार-प्रसङ्गक प्रतितुलना बनैत अछि। सुभद्राक आत्मप्रस्तुति अपेक्षाकृत संयत अछि; तथापि हुनकर दलक नारासभ पार्टी-प्रतीकक हास्यास्पद दुनियासँ मुक्त नहि। नैतिक व्यक्ति आ चुनावी भाषिक मशीनरीक बीच ई तनाव नाटकक सूक्ष्म उपलब्धि अछि।

विवेकक सभा: अपराधक सार्वजनिक घोष

एतय दबंग प्रत्याशी अपन मतदान-कब्जाक सोचकेँ लगभग सार्वजनिक हास्यक वस्तु बनबैत अछि। सहयोगीक चेतावनी सेहो ओकर आत्मविश्वास नहि घटबैत। एहि प्रसङ्गमे नाटक सत्ता आ अपराधक गोपन सम्बन्धकेँ उघारि सार्वजनिक करत अछि। मंचीय जोखिम ई जे अत्यधिक फूहड़ता हिंसाक राजनीतिक भयावहताकेँ कखनो हलुक सेहो करि सकैत अछि।

बच्चा बाबूक पंचायत-बैसारः मतदाताक सामूहिक विवेकक विडम्बना

गामक लोक पंचायत भवनमे पाँच दलक मूल्यांकन लेल जुटैत छथि। प्रारम्भिक बहस जनसेवा, प्रत्याशीक आचरण आ समाजक एकता दिस जाइत अछि। मुदा प्रत्याशी सभक एक-एक कऽ आगमन आ धन-वितरणसँ सामूहिक निर्णयक प्रक्रिया बाजार बनि जाइत अछि। बच्चा बाबू सामाजिक मध्यस्थ छथि, न्यायपूर्ण लोकप्रतिनिधि नहि। गामक कथित सामूहिकता मूल्य, दबाव, प्रलोभन आ साझा लाभक गणितसँ बनैत-बिगड़ैत अछि। ई दृश्य लोकतन्त्रक विफलताकें केवल नेताक दोष कहि टारबाक सुविधा नहि दैत—मतदाताक भूमिका सेहो आलोचनाक घेरेमे अबैत अछि।

थानाः निषेधाज्ञा, नशा आ दण्डात्मक शासन

पुलिस चुनाव-सुरक्षा आ भीड़-नियन्त्रणक घोषणा करैत अछि। एहिमे प्रचार-निषेधक सार्वजनिक सूचना, नशाक प्रसङ्ग आ पुलिसक कठोर व्यवहार अछि। नाटक सुरक्षा-व्यवस्थाक जरूरतक संग नागरिककें अपमानित करबाक प्रवृत्तिकें एक्कहि दृश्य मे रखैत अछि। कानून-पालन आ अवैधानिक मनमानीक बीच सीमा एतय आलोचनात्मक प्रश्न बनैत अछि।

मतदान केन्द्रः व्यवस्था आ हिंसाक प्रत्यक्ष संघर्ष

विद्यालय मतदान केन्द्र बनल अछि। पहचान-पत्र, मतदान मशीन, पीठासीन अधिकारी आ सशस्त्र सुरक्षाकर्मी उपस्थित छथि। प्रारम्भिक मतदानक साधारण प्रक्रियाक बीच बूथ लूटबाक प्रयास होइत अछि आ गोलीबारीमे अनेक पात्र हताहत होइत छथि। एहि दृश्यपर पूर्ववर्ती विमर्शक पूरा दबाव केन्द्रित अछिः जे अपकृत्य आरम्भिक घोषणासभमे सम्भावना छल, से आब प्राणघातक घटना बनि जाइत अछि। मंचपर हिंसाक प्रस्तुति विस्तृत अछि, तँ विद्यालय-आधारित किशोर प्रस्तुति लेल सावधानी आ रूपान्तरक आवश्यकता रहत।

चाह-दोकानः पराजयक अफवाह आ दलगत कटाक्ष

मतदान पछाति चाह-दोकान पर प्रतिद्वन्द्वी गुटक कार्यकर्ता भेटैत छथि। प्रत्याशीक भविष्य, गठजोड़, बूथ संघर्ष आ परस्पर आरोप-प्रत्यारोपक चर्चासँ चाह-दोकान अस्थायी लोकसभा बनि जाइत अछि। भाषा झगड़ालू अछि, मुदा लोकमतक अनौपचारिक निर्माण सेहो अही ठाम चलैत अछि। सभटा राजनीतिक संवाद सार्वजनिक भाषणमे नहि, साधारण व्यापारीक ठाम सेहो रचल जाइत अछि—ई नाटकक लोकजीवनक सूक्ष्म पहिचान अछि।

भगवती मन्दिर: धार्मिक विश्वासक चुनावी विनिमय

पुजारी देवनाथक ठाम प्रत्याशी सभ जयकामनाक संग चढ़ावा वा दक्षिणाक प्रसङ्गमे प्रवेश करैत छथि। मन्दिर राजनीतिक अनुष्ठान आ अर्थलोलुप मध्यस्थता दूनूक स्थल बनैत अछि। श्रद्धाक भाषा मतदानक गणितसँ मिलि व्यंग्य उत्पन्न करैत अछि। अध्ययनक विषय धार्मिक विश्वासक अवमूल्यन नहि, बल्कि धार्मिक संस्थानकें जीतक सौदेवाजीमे शामिल करबाक विडम्बना अछि।

मतयन्त्रक सुरक्षा: अस्वीकृत घूस आ कर्तव्य

ब्रजेशक गुर्गा-संघ मतगणनासँ पहिने सुरक्षित मतदान मशीनमे हेराफेरीक प्रयास करैत अछि। महेन्द्र आ रवीन्द्र आर्थिक प्रस्ताव अस्वीकार करैत छथि; तत्पश्चात गोलीबारी आ घायल होयबाक घटना अछि। ई दृश्य नाटकक भीतर ईमानदार सरकारी कर्मिक सकारात्मक प्रतिरूप रचैत अछि। पहिनेक प्रशासनिक भ्रष्टाचारक चित्रक बाद ई परिप्रेक्ष्य महत्त्वपूर्ण अछि: लेखक पूरा तन्त्रकें समान रूपेँ पतित घोषित नहि करैत छथि।

मतगणना: सङ्ख्याक साक्ष्य आ सत्ता-प्रस्तावक असफलता

समाहरणालयमे मतगणना आ सुरक्षाकर्मिक सम्मानक बाद परिणाम घोषित होइत अछि। सुभद्राक १,२५,३६१ मत, गोबर्धनलालक ५०,००९, फीरनक १५,०८० आ ब्रजेशक ५,००२ मत अंकित अछि; विवेकक मतगणना पृथक संख्याक रूपमे उल्लिखित नहि। विजेताक निकटतम प्रतिद्वन्द्वीसँ अन्तर ७५,३५२ अछि—अंकगणितो एकरा पुष्ट करैत अछि। परिणाम बदलबाक प्रभावशाली दबावक फोन आएलाक प्रसङ्गमे जिलाधिकारीक अस्वीकार नाटकक नैतिक चरम बिन्दु अछि। सुभद्राक विजय बहुत बड़ अन्तरसँ देल गेल अछि; अतएँ किछु क्षण पूर्वक भ्रष्ट शक्ति एकटा विशाल जनादेशक समक्ष निष्प्रभ देखाइत अछि।

विजयानन्तर जनसम्पर्क: राजधर्मक खुलल कसौटी

अन्तिम दृश्य सुभद्राक विजय-उत्सवपर नहि रुकैत; निर्वाचित होइतो जनता लग जाएब, नियमित क्षेत्र-भ्रमण आ जनसमस्या सुनबाक प्रतिज्ञापर समाप्त होइत अछि। एहि निर्णयसँ आरम्भक ब्रजेशक जनतासँ दूरीक उलट दृश्य बनैत अछि। पात्रक भविष्यक काम नाटकक भीतर देखाओल नहि गेल अछि—तैं प्रतिज्ञा नैतिक कार्यक्रम अछि, सिद्ध उपलब्धि नहि। अन्तिम आलोचनात्मक प्रश्न यएह अछि जे घोषणाकें उत्तरदायित्वमे बदलयबाक दीर्घकालिक संस्थागत उपाय की होयत।

चरित्र-संरचना आ एक सय एक भूमिकाक सामाजिक अर्थ

एक सय एक पात्रक नाम देब मात्र भीड़क विस्तार नहि। चुनाव आयोगसँ लऽ गामक मतदाता, चपरासी, किरानी, सुरक्षाकर्मी, पुजारी, स्थानीय दलाल आ दलगत कार्यकर्ता धरि सूची नाटकक सामाजिक क्षेत्रकेँ व्यापक बनबैत अछि। एतय सत्ता शीर्षपर केन्द्रित होइतो ओकर संचालन मध्यवर्ती संस्था आ सामान्य लोकक व्यवहारपर निर्भर अछि। ब्रजेशक संसदीय पदक उपस्थिति ओकरा सर्वशक्तिमान नहि करैत; मतदान केन्द्रक सुरक्षाकर्मी आ मतगणना अधिकारी ओकर प्रभावक सीमाकेँ निर्धारित करैत छथि।

मुदा एहन पात्र-प्रचुरता मञ्च-संयोजनक कठिनाई सेहो बनैत अछि। अधिकांश पात्रक भूमिकाक कार्यात्मक परिभाषा स्पष्ट अछि, निजी जीवन-इतिहास नहि। सामुदायिक विशाल प्रस्तुति लेल एकर लाभ अछि—बहुत कलाकार शामिल भऽ सकैत छथि—मुदा व्यावसायिक सीमित दल लेल पाठ-संक्षेप, बहुपात्र-अभिनय आ सामूहिक दृश्य-नियोजन आवश्यक होयत। बेचन ठाकुरक रंगपरम्पराकेँ सार्वजनिक भागीदारी आ समानान्तर मंचक सन्दर्भमे देखनाइ एकर विशिष्ट रंग-अर्थ खोलैत अछि।

सत्ता, पैसा आ नैतिकता: तीन परस्पर जुड़ल अर्थतन्त्र

प्रथमतः संसाधनक असमानता अछि—गोबर्धनलालक भूमिधारित जीवन आ ब्रजेशक अपार चुनावी क्षमता एककहि प्रतियोगितामे समता सम्भव नहि बनबैत। द्वितीयतः अवसरवादक मध्यस्थ अर्थतन्त्र अछि—राकेश, स्थानीय प्रबन्धक आ नामांकन कर्मी राजनीति आ समाजक बीच चलैत धनक अंश लेने रहल छथि। तृतीयतः प्रतीकात्मक अर्थतन्त्र अछि—माला, नारा, प्रशस्ति, भोजन, मदिरा, वस्त्र-वितरण, धार्मिक चढ़ावा आ विजय-उत्सव। एहि तीनू अर्थतन्त्रक सङ्गममे मतदानक अर्थ नागरिक निर्णयसँ बाजारी वस्तु बनबाक जोखिममे पड़ैत अछि।

नाटकक राजनीतिक मर्म एतय केवल भ्रष्ट जनप्रतिनिधिक व्यंग्य नहि। गामक साझा बैसारमे कथित ‘सामूहिक समझदारी’ देखैत-देखैत सामूहिक उपहार-स्वीकारक रूप धारण करैत अछि। ताहिसँ ई प्रश्न उठैत अछि जे लोकतान्त्रिक शिक्षा केवल मतदाता नाम-पञ्जी आ मशीन-प्रशिक्षणमे समाप्त होइत अछि कि ई सामूहिक विवेक, असहमति व्यक्त करबाक क्षमता आ अल्पकालिक लाभ अस्वीकार करबाक अभ्यास सेहो माँगैत अछि। एहि स्तरपर पाठ संस्थागत नैतिकताक लोकप्रिय पाठशाला बनि सकैत अछि।

व्यंग्य, लोकहास्य आ रसभङ्गक सौन्दर्य

नाटकक अधिकांश प्रसङ्गमे व्यङ्ग्य कथनसँ अधिक स्थितिमे अछि। मिठाइक आग्रह चुनावी जीवनक आर्थिक संकटसँ भिड़ैत अछि; राजकीय पदाधिकारी नियमक बखान करैत छथि, मुदा हुनकर कार्यालयमे दबाब काम करैत अछि; प्रचारक सार्वजनिक प्रगतिक प्रतिज्ञा करैत छथि, मुदा स्वयं अविश्वसनीय भोग-विलास देखबैत छथि; मन्दिरक आशीर्वाद राजनीतिक निवेशक रूप धारण करैत अछि। एहि स्थितिगत व्यंग्यमे हास्यक संग करुणा, भय आ क्षोभ मिले-जुले रूपमे आबैत अछि।

भारतीय नाट्यचिन्तनक हास्य, रौद्र, भयानक आ वीर भावक भाषामे एहि रचनाक अनेक दृश्य पढ़ल जा सकैत अछि; ई पाठपर आरोपित कठोर रस-वर्गीकरण नहि, नाटकीय प्रभावक तुलना मात्र अछि। मतदान केन्द्रक गोलीकाण्ड हास्यक निरन्तरताकेँ तोड़ैत अछि। अभिरुचि-मूलक लोकप्रहसनक फुहड़ प्रसङ्ग सभ सबल राजनीतिक आलोचनाकेँ बीच-बीचमे दुर्बल सेहो करैत अछि; विशेषतः अपमानसूचक बोली आ मदिरा-हास्य प्रतिरोधक सङ्गे दर्शकक सहज मनोरञ्जनक तुष्टियो बनि सकैत अछि। एहि द्वन्द्वकेँ आलोचककेँ टारबाक नहि, बुझेबाक आवश्यकता अछि।

भाषा, बोलचाल आ बहुभाषिक चरित्रांकन

सम्पूर्ण नाटकमे स्थानीय मैथिली बोलचाल मूल धुरी अछि। मंचपर प्रशासनिक हिन्दी, सुरक्षाकर्मीक हिन्दी-मिश्रित संवाद, विवेकक समूहक अस्थिर मैथिली-हिन्दी मिश्रण आ ग्रामीण लोकोक्तिक भिन्न प्रयोग भेटैत अछि। भाषा एकर सामाजिक मानचित्रक उपकरण अछि: अधिकारिक व्यक्ति प्रशासनिक शब्दावली लैत छथि; नेता लोकधर्मी सम्बोधन आ नारा लैत छथि; डरावनी सत्ता फूहड़ धमकीक स्वर अपनबैत अछि। एहि भिन्नताक सौन्दर्य केवल शुद्धता-अशुद्धतामे नहि, पात्रक सत्ता-सम्बन्ध आ श्रोता-सम्मुख भूमिकामे खोजबाक चाही।

स्त्री-प्रतिनिधित्वक द्वन्द्व: सुभद्राक राजनीतिक कर्तृत्व

सुभद्रा एकमात्र प्रमुख महिला प्रत्याशी होयबाक कारण नाटकक लैङ्गिक संरचनामे विशेष भार वहन करैत छथि। हुनकर सहकर्मी माला नीति-चर्चामे सक्रिय छथि, तथापि अन्य पक्षसभमे स्त्री-पात्रक स्वायत्त राजकीय उपस्थिति न्यून अछि। सुभद्राक चुनावी यात्रा पराजयक स्मृतिसँ पुनरुत्थान,

अन्यायपूर्ण खर्चक प्रतिरोध, जनसभामे संक्षिप्त राजधर्म, मतगणनाक जीत आ जनसम्पर्कक पुनर्प्रतिज्ञा धरि चलैत अछि। एतेक विस्तार हुनका निष्क्रिय प्रतीक बनबाक खतरा सँ किछु बचबैत अछि।

तथापि हुनकर चरित्रक नैतिक श्रेष्ठताकेँ पिताक प्रतिष्ठा आ विवाह नहि करबाक निर्णयसँ सहारा देबाक भाषिक परिपाटी आलोचनाकेँ आमन्त्रित करैत अछि। स्त्रीक राजनीतिक अधिकारक औचित्य सेवाकार्य आ स्वतन्त्र बौद्धिक निर्णयक आधारपर स्थापित होयबाक चाही। एहि पाठमे ई आधार स्पष्ट भेटैत अछि, मुदा ओकरा संग त्यागमूलक स्त्री-आदर्श सेहो चलैत अछि। पाठक शक्ति एहि अन्तर्विरोधकेँ दृश्य बना सकबाक क्षमता अछि।

समानान्तर मैथिली रंगमंचक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

विदेहमे प्रकाशित गजेन्द्र ठाकुरक ‘A Complete Critical Appreciation of Bechan Thakur’ बेचन ठाकुरक रचनासंसारकेँ समानान्तर मैथिली रंगमंचक सामाजिक-पक्षधर परम्परामे रखैत अछि। ओहि विवेचनमे ‘भअँट’केँ चुनावी भ्रष्टाचार, सत्ताक अपराधीकरण आ बहुपात्रक राजनीतिक दृश्य-विस्तारक कारण अलग महत्त्व देल गेल अछि। ई बाह्य आलोचनात्मक प्रस्ताव हमरा लेल परीक्षणक परिप्रेक्ष्य अछि, प्राथमिक नाटकक स्वतः प्रमाण नहि। प्रस्तुत पाठमे स्थानीय दलानसँ निर्वाचन कार्यालय धरि स्थान-बदलाव, असङ्ख्य पात्र आ लोकतान्त्रिक पाखण्डक खुलल विवेचना एहि प्रस्तावकेँ पुष्ट करैत अछि।

आशीष अनचिन्हारक ‘बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी’ (विदेह, अङ्क ८२, २०११) ठाकुरक नाट्यरचनापर विदेहक आलोचनात्मक उपस्थितिक प्रमाण अछि। दूनों नाटकक विषय समान नहि — ‘छीनरदेवी’मे लैङ्गिक सामाजिक प्रश्न आ ‘भअँट’मे निर्वाचन-राजनीति केन्द्रमे अछि—तैयो साझा विधागत दिशा सामाजिक अन्यायकेँ लोकभाषाक मञ्चपर विवेचित करबाक अछि। एकरे कारण ई रचनाकेँ सामाजिक सरोकारक व्यापक नाट्य-परियोजनाक अंग रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि; मुदा समानता सिद्ध करबाक नामपर अलग नाटकक अनपढ़ल प्रसङ्ग एहि आलोचनामे नहि जोड़ल गेल अछि।

ब्रेख्तीय दूरी, लोक-सम्पृक्ति आ रंगविधानक व्यावहारिकता

प्रहसनक बीच राजनीतिक तन्त्रपर पात्रसभक प्रत्यक्ष चर्चा दर्शककेँ केवल करुणा वा भयक भावनात्मक केन्द्रमे बाँधि नहि रखैत; ओ तन्त्रक कारण पूछबाक अवसर सेहो दैत अछि। एहि अर्थमे बेचन ठाकुरक रंग-विधानक आलोचनात्मक तुलना ब्रेख्तीय विमुखीकरणसँ सम्भव अछि। तथापि पाठमे एकर ऐतिहासिक प्रत्यक्ष प्रभावक दस्तावेज नहि भेटैत, तँ एकरा शिल्पगत साम्य मात्र कहल जाएबाक चाही। बहुपात्रक सार्वजनिक बहस, प्रचारक दृश्य-क्रम, चुनावी गीत आ कथानकक खण्ड-खण्ड विस्तारक कारण नाटकक नायक-दृष्टि सामूहिक बनैत अछि।

मंचीय रूपान्तरमे एक सय एक पात्रक व्यवस्था, पाँच प्रचार-दलक सज्जा, अनेक कार्यालय, भोज-मण्डली, पंचायत-बैसार, मंदिर आ मतदान केन्द्रक स्थल परिवर्तन कठिन अछि। ग्राम्य सामूहिक नाट्योत्सवमे व्यापक भागीदारीक अवसर मिलि सकैत अछि; सीमित रंगशाला लेल साङ्केतिक दृश्य-सज्जा, समूह-स्वर, अलग प्रकाश-प्रदेश आ सहायक भूमिका-संयोजन उपयोगी होयत। गोलीकाण्डक दृश्य यथार्थ बन्दूकक प्रदर्शनक बदला प्रकाश, ध्वनि आ अभिनयसँ व्यक्त कएल जाए तँ हिंसाक भयावहता सुरक्षित रहत आ दृश्य अनावश्यक सनसनीसँ बाँचत।

बाल-साहित्यक इतिहाससँ तुलनात्मक विवेचन: समानता नहि, विधागत दूरी

विदेहक शोध-संग्रहमे बाल-लोकसाहित्य, चित्रकथा, बाल-उपन्यास आ बालनाटकपर पृथक सामग्रीक प्रमाण भेटैत अछि। फूलचन्द्र झा ‘प्रवीण’क ‘मैथिली शिशु लोक साहित्य’ (अङ्क ५०, २०१०), डॉ. योगानन्द झाक ‘मैथिली बाललोककथा: स्थिति आ अपेक्षा’ (अङ्क ७६, २०११), दुर्गानन्द मण्डलक ‘नेना लेल सुन्दर चित्रकथा’ (अङ्क ११६, २०१२) तथा रमेश रञ्जनक ‘मैथिली बालनाटक सीमा विस्तार करैत—चौआरि’ (अङ्क १२६, २०१३) एहि पृथक चिन्तन-क्षेत्रक अभिलेखीय संकेत छथि। गजेन्द्र ठाकुरक ‘मैथिली बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्र’ (अङ्क ४४७, २०२६) बाल-केन्द्रित कथाविन्यास, लोक-स्मृति, बालकक कर्तृत्व आ पाठक-अनुकूल रूपान्तरणक प्रश्न विस्तृत रूपमे उठबैत अछि। एहि सन्दर्भसभक आधारपर ‘भर्सेट’केँ बाल-साहित्यक श्रेणीमे जबरन समाविष्ट करबाक बदला ओकर बाल-पाठकीय सम्भावना आ सीमा जाँचब अधिक उचित अछि।

बाल-लोककथा प्रायः बाल-मनक ग्रहण-क्षमता, कल्पना, ध्वनि-लय आ संक्षिप्त कथा-चक्रक सहारे चलैत अछि; चित्रकथा शब्द-चित्रक परस्पर सहयोगकेँ प्राथमिकता दैत अछि; बालनाटकमे नन्हका

अभिनेताक भूमिका, अनुकूल अवधि, सहभागिता आ भय-आवेगक नैतिक प्रस्तुति केन्द्रस्थ होइत अछि। ‘भअँट’मे एक सय एक पात्र, लम्बा संस्थागत संवाद, जटिल दलगत सौदे, अपमानसूचक राजनीतिक बोली, मदिरापान आ रक्तस्रावित हिंसा अछि। ई सभ रचनाकेँ मूलतः प्रौढ़ दर्शकक राजनीतिक रंगनाटक बनबैत अछि।

तैयो किशोर-नागरिक शिक्षाक सन्दर्भमे ओकरा सँ प्रेरित चयनित दृश्य पाठ्यरूपान्तरमे उपयोगी भऽ सकैत अछि। नामांकनक पारदर्शिता, मतदानक गोपनीयता, उपहार-लोभक परिणाम, महिला नेतृत्व, चुनावी हिंसाक रोकथाम आ जीतक बाद जनसम्पर्कक जिम्मेवारी—ई विषय उच्चतर कक्षाक चर्चा लेल उपयुक्त छथि। मुदा ई उपयोग ‘भअँट’क मूल विधागत परिचय नहि बदलैत; रूपान्तरित किशोर प्रस्तुति एकटा नव रचना-प्रयोग होयत।

पाठक प्रमुख उपलब्धि आ सीमा: समालोचनात्मक तुला

प्रमुख उपलब्धि पहिल, चुनावक सम्पूर्ण जीवनचक्र—प्रत्याशी-निर्धारणसँ निर्वाचनोत्तर आश्वासन धरि—नाट्यरूपमे देखेनाइ। दोसर, राजनीतिज्ञक संग मतदाता, निम्न कर्मचारी, सुरक्षाकर्मी, मध्यस्थ आ पुजारीक भूमिका जोड़ि भ्रष्टाचारकेँ बहुस्तरीय सामाजिक घटना बनबेनाइ। तेसर, स्थानीय बोली आ गामक सार्वजनिक स्थलकेँ नाटकक वैचारिक केन्द्र बनबेनाइ। चारिम, स्त्री प्रत्याशी आ ईमानदार सरकारी कर्मीक माध्यमसँ प्रतिरोधक सम्भावना जीवित राखब। पाँचम, वोटक सङ्ख्याक दस्तावेजी अन्त आ ओहि पछाति निर्वाचित प्रतिनिधिक कार्य-प्रतिज्ञा जोड़ब।

सीमा सेहो कम नहि। एक सय एक पात्रक व्यापकता कतेको भूमिकाकेँ सपाट करैत अछि। चुनाव आयोगक विवेचना-खण्ड कखनो नाटकसँ अधिक नीतिशास्त्रीय व्याख्यान बनैत अछि। फूहड़ अपशब्द आ मदिरा-परिहास सामाजिक आलोचनाक प्रभावमे बाधा बनि सकैत अछि। स्त्री प्रत्याशीकेँ नैतिक आदर्श ठहरबैत पाठ स्त्री-त्यागक रूढ़ छवि सँ पूर्ण मुक्त नहि। सभसँ पैघ कथ्यगत प्रश्न ई जे जनसमाजक व्यापक प्रलोभन-स्वीकारक बाद सुभद्राक अत्यधिक मत-अन्तरबला विजयक राजनीतिक प्रक्रिया पर्याप्त बारीकीसँ नहि खोलल गेल; कथा नैतिक रूपेँ संतोषजनक होइतहुँ यथार्थवादी कारण-सम्बन्धमे कनी द्रुत अछि।

मतपरिणामक साङ्ख्यिक पुष्टि आ विचारधारात्मक अर्थ

अन्तरक जाँच: १,२५,३६१ - ५०,००९ = ७५,३५२। नाटकमे घोषित अन्तर एही अङ्कसँ मेल खाइत अछि। मतगणनाक ई सङ्ख्यात्मक सुसङ्गति महत्त्वपूर्ण अछि; मुदा जनादेशक व्याख्या गढ़ैत समय ओहि परिणामकेँ लेखकक कल्पित राजनीतिक परिदृश्य मानल जाएबाक चाही, वास्तविक निर्वाचन आँकड़ा नहि।

निष्कर्ष: जनादेशसँ जनसेवा धरि अधूरा मार्ग

‘भअँट’ मैथिली नाटकक सामाजिक राजनीतिक दिशामे एकटा महत्वाकाङ्क्षी रचना अछि। ओकर समग्र संरचना लोकतन्त्रकेँ नैतिक प्रवचन नहि, सार्वजनिक प्रक्रिया रूपमे देखबैत अछि। दलानक व्यक्तिगत बातचीतसँ निर्वाचन कार्यालयक अभिलेख, गामक पंचायतसँ मतदानक जोखिम, धार्मिक स्थलसँ प्रशासनिक निर्णय धरि पहुँचैत ई नाटक सत्ता-व्यवस्थाकेँ सूक्ष्म-सूक्ष्म क्रियामे खोलैत अछि। सामूहिकता ओकरा व्यापक बनबैत अछि आ वही सामूहिकता कखनो काव्यात्मक संकेन्द्रणकेँ कमजोर सेहो करैत अछि।

अन्तिम जीतमे लेखकक विश्वास स्पष्ट अछि—धन, हिंसा आ छलक ऊपर जनता विवेकपूर्ण निर्णय दऽ सकैत अछि। मुदा ई जीत नैतिकता सिद्ध करबाक अन्तिम प्रमाण नहि; वास्तविक कसौटी सुभद्राक भविष्यक जनसेवा अछि, जे नाटकक समाप्तिक बाद आरम्भ होयत। एहि खुले प्रश्नमे रचनाक स्थायी प्रासङ्गिकता अछि। लोकतान्त्रिक संस्कारकेँ मत-पत्र वा यन्त्रक प्रक्रिया धरि सीमित नहि रखि, सार्वजनिक जवाबदेहीक निरन्तर अभ्यास रूपमे देखनाइ—एहि अध्ययनक दृष्टिमे ‘भअँट’क सभसँ मूल्यवान योगदान अछि।

सन्दर्भ

समीक्ष्य ग्रन्थ आ सन्दर्भ

समीक्ष्य कृतिसभक प्रकाशन-विवरण आ विदेहमे प्रकाशित सम्बद्ध साहित्यिक आलोचना।

बेचन ठाकुरक समीक्ष्य ग्रन्थ

ठाकुर, बेचन। नवघर। नाटक-संग्रह। निर्मली (सुपौल) : पल्लवी प्रकाशन। उपलब्ध संस्करणमे २०१८ अंकित; संस्करण-विवरणमे वर्षक अन्तर उपस्थित अछि। ISBN ९७८-९३-८७६७५-५९-९।

ठाकुर, बेचन। बेटीक अपमान आ छीनरदेवी। दिल्ली : श्रुति प्रकाशन। प्रथम संस्करण २०१० अंकित; आमुखक काल-सन्दर्भक कारण वर्ष-निर्धारणमे सावधानी अपेक्षित। ISBN ९७८-९३-८०५३८-३५-८।

ठाकुर, बेचन। बाप भेल पित्ती आ अधिकार। दिल्ली : श्रुति प्रकाशन, २०१२। ISBN ९७८-९३-८०५३८-९१-४।

ठाकुर, बेचन। ऊँच-नीच। दिल्ली : श्रुति प्रकाशन, २०१३।

ठाकुर, बेचन। बिसवासघात। दिल्ली : श्रुति प्रकाशन, २०१३।

ठाकुर, बेचन। भअँट। सामाजिक आ राजनीतिक मैथिली नाटक। प्रकाशन-वर्ष सुनिश्चित नहि।

विदेहमे प्रकाशित आलोचना आ अभिलेखीय साहित्य

अनचिन्हार, आशीष। 'बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी'। विदेह, अङ्क ८२, १५ मई २०११।

ठाकुर, गजेन्द्र। 'A Complete Critical Appreciation of Bechan Thakur: Pioneer of the Videha Maithili Parallel Theatre Movement'। A Parallel History of Mithila & Maithili Literature, खण्ड ६२, विदेह।

ठाकुर, गजेन्द्र। 'मैथिली नाट्यमंच/नाटक लेल एकटा समीक्षा सिद्धान्त' (भाग १-७)। विदेह, अङ्क ४४३-४४७, २०२६।

ठाकुर, गजेन्द्र। 'नाट्य-नवग्रह'। विदेह, अङ्क ४४७, १ अगस्त २०२६।

ठाकुर, गजेन्द्र। ‘मैथिली बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्र’। विदेह, अङ्क ४४७, १ अगस्त २०२६।

झा, फूलचन्द्र ‘प्रवीण’। ‘मैथिली शिशु लोक साहित्य’। विदेह, अङ्क ५०, १५ जनवरी २०१०।

झा, योगानन्द। ‘मैथिली बाललोककथा : स्थिति आ अपेक्षा’। विदेह, अङ्क ७६, १५ फरवरी २०११।

मण्डल, दुर्गानन्द। ‘नेना लेल सुन्दर चित्रकथा’। विदेह, अङ्क ११६, १५ अक्टूबर २०१२।

रञ्जन, रमेश। ‘मैथिली बालनाटक सीमा विस्तार करैत—चौआरि’। विदेह, अङ्क १२६, १५ मार्च २०१३।

मण्डल, उमेश। ‘दोसर चरणक पहिल सगर राति दीप जरय : डिजिटल फॉर्ममे ३७ पोथीक लोकार्पण’। विदेह, अङ्क १२०, १५ दिसम्बर २०१२।

विदेह। ‘विदेह शोध-लेख : अङ्क १ सँ ४५१ धरि’। शोध-लेखक समेकित विषयसूची।

विदेह। ‘पोथी-संग्रह’। मैथिली साहित्यक ग्रन्थसूची।

नित नवल बेचन ठाकुर



बेचन ठाकुरक छओ नाट्यग्रन्थक समीक्षा :
'नवघर', 'बेटीक अपमान आ छीनरदेवी', 'बाप भेल पित्ती आ अधिकार',
'ऊँच-नीच', 'बिसवासघात' आ 'भअँट'।

लोकजीवनसँ लोकशासन धरि

लोकसमाज, सुधार आ रंगमंचीय प्रतिरोधक पाठाधारित समीक्षा।
लेखक : गजेन्द्र ठाकुर · सम्पादक : विदेह



विदेह वेबसाइट

<https://www.videha.co.in/>



विदेह ई-जर्नल

<https://videha-ejournal.github.io/videha/>

© गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर, २०२६
प्रकाशक : विदेह — www.videha.co.in